राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन—३

● पहलीवार (पुस्तकालयीय संस्करण)
सं०, २०२३ विक्रमी

स्वत्वाधिकारी
श्री मूलचन्द 'प्राणेश'

● सहयोगी
श्री ज्ञानप्रकाश जैन

● मोल
दोय रुपिया

● प्रकाशक
राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन
बीकानेर

● मुद्रक
स्वास्थ्य सरिता प्रेस
बीकानेर

पानावली

दोखांरो दरसाव

"दूबलांनै दोखा घणा", पण दस-दोखांसूं तो सबळा भी डरै। "डरतो डूंम सुभराज करै" आळै दांई लोग महाराजरा बताया पगलिया भरै अर दस-दोखांरो रुपियो चौंद-चौंदणीरै पाटां हेठै धरै। ता पछै उणै रुपियैनै छिंटियोड़ै विच्छूदांई चींपियैसूं पकड़'र मंगेरणां घाणै अथवा धोरी अथवा मेहतरनै देवै अर दोखांरै दोखसूं उगरै।

राजस्थानरा मोळा मिनख अदीठै दोखांसूं तो इतरा डरै, पण आपरै घरांमें सैंदै दोखांनै पाळै अर उवांरै सिकतापसूं आपरै डीलनै गाळता रैवै। साचफैई है—"पगां बळती नहीं दीसै, डूंगर बळती दीसै" कोई लाख समझावै-बुझावै पण इयांरै तो "चोपड़ियोड़ै घड़ै छांट ही नहीं लागै।"

श्री नानूराम संस्कर्ता राजस्थानरा नामी-कामी अर राजस्थानी भाषारा लाडेसर है। इयां दस-दोखांनै सैंदै देख्या, उवांरा फळ भी भुगत्या अर लोगांनै भुगतता जोया। हिरदैमें सेलनो लुभ्यो अर लेखणरै मूं'डै लिखिया ला पोथा। आं लिणियारी मा'ठा दस-दोखरै नावसूं छापणरो संजोग "राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन. बीकानेर" नै मिळियो। म्हारो बिसवास है कै—प्रकाशनरै उद्देश्य मुताबिक इयै पोथीसूं राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृतिरो प्रचार तो हुसी ही, पण साथै-साथै संस्कर्ताजीरी समास प्रधान, मुहावरां-कैतां अर अंत्यानुप्रास युक्त सैलीनै पढ़'र पाठकांरै मनमें आपरी मातृ-भाषारै प्रति आदररी भावना भी जागसी।

—मूलचन्द 'प्राणेश'

उजास वारता

आंगरणे अठै मारवाडी लोकांमें ऊंधा-पाधरा आंधा-विसवास नै रीत-रवाज घणां चालै है । अंःसंग नकटा नेग-चार, हिन्दू कुळरै कोढरी माफिग लारै लाग रैया है, जका मानखैनै चूटै, चमरकावै अर अधमरयो कर राख्यो है। इयांरै दुखसूं लोग घर छोड, कूओ-फांसी करै तथा घणांनै वासते-वोमर अर अमल-ओखद खा'र मरणो पडै । अबळावांरो अपमान, निमळांरी हार अर बालकांनै बोळी मार इयां दुःख-दोखांसूं ही मिलै है । मोसर-मैणा, ओर कैणा तथा ताना-तैयामें गावांरी जनता ओजूं चिन्ता-फिकरमें भूलती रवै है। भूत-पलीत, डाकण-स्यारी अर डोरा-डांडा में सारा समाज खांडा-खोरा हो रैया है । पण ल्होसडू-लपसेडू, पुरोहित पंडा, गुंडा-मुसटंडा, काजी अर हाजी जिसा हराम मिनख आंधा अंधविसवांसांसूं घणा राजी रैता थका इयांनै जबर पाळै-पोसै है। जकांरै जुलमांरा पलमा खोलण खातर म्हैं म्हारी सोरी भासा अर सरस सबदां में दस-दोख नांवरी पोथी मांडी है । मनै ओः कोड है ।

पीसै कार्नां सूं तो नहीं, पण छपाई-सफाई अर तमास्त भायांरी गोथाव लखदाद सारू मनै म्हारी सगळी पोथ्यां सूं घणी बडाईर या वा, दस-देव नांवरी पोथीमें मिळी । जकै वेगी म्हैं "हिली-हिली लूंकडी" गी पंक्त दांईं दस-दोख मळै लिखणारी जीमैं करली है। फरक इतो ही राख्यो है कै दस-देव किवतामें कोरी ही अर दस-दोख कांणी में लिखी है । जका तो सारा प्यारां मितरांरी सौख-मुराना पूरा करणा ही पडै ।

बडी-बडी जीमणवारांमें कैई आदमी तो दूध रबड़िया, कलाकंद अर खोवारा माल-मलीदा कठामें आंगळयां सूं दाब-दाबर हेठा उतारै, तो कैई भाई कचौड़ी-पकौड़ी, समोसा'र दही-रायतांसूं ही माड़ो-मठ्ठो पेट भराई करै अर कैई रायजादा दाळ-चावळ अर कढ़ीसूं ही आपरो पटोळियो करलेवै। पण पुरसार तो आखा जीमण आंवणिआनै, मांगै ज्यूं ही भाज-भाजर पुरसै अर लोसा लोसा करता भोजनसूं रुचारुचा'र जीमावै।

जागणां-जम्मां, रातीजगां अर गाणां-बजाणांरी जगां ही सुणणियां लोग सदा गायण हाळां सूं बानी-बट्टै री चीजां मांगै। कैई पक्की रागळीरा करावूं, कैई गजल कुवाली गुवावूं, कैई खेल-सिनेमांरा गाणां में जावूं तो कैई लावणी, बाणी तथा टासरी चीजांरा उमावूं। पण गावणियां की मांथै कदै ही नो मुजं। बै:तो रागळारो ही मांफतियो किया करै है। कोनै ही 'ना' नीं करै, 'हत्तरी सत्त' नीं कथै। तो म्हारो ही धरन है कै, म्हे ही की लिखणो-लिखाणो जाणांवो म्हारै, जीवहै सूं वांला बानण हाळांनै थिना मांगै ही वरतारै गारू मन-रंजण चोखी-चोखी, नूंई-नूंई चीजां मणावां-गुणावां तथा सिखावां-सुणाता। जिकै में कोई म्हारी भोळ-माळ रै: ज्यावैक, का. कोरै ही पावरी जिनस छूट जावै वो बै: मगनियां मरोड़ माई म्हांनै बतावै धवस। दस-दोखरी भेट वांरै (आपरै) हाथां में है, म्हे थांरो केणो सिर मानै लेस्यां।

जाणीजतो मांगीजतो
नानूराम संस्कर्ता

दस-दोस्त

दायजा

डायमल डागैरै पैल-पोतरी बेटी जामी जद घर हाळांनै, कनलां पाड़ोस्यां वात बताई कै "आंधी लारै मे' टीडी लारै कांवळा अर बेटी लारै बेटो आया करै है"। किन्यारी दादी पोतै वेगी ऊंफण्यां पांणी पीवै ही, आंख्यां फाड़े अडीकै ही। धरम-पुण्य वोलै ही। देई-देवता मनावै ही। मेहरा सा मंगल लागरैया हा। जकांनै थ्यावस बंधावण खातर वास-गा सैग लोग-लुगाई बेटीरै जलम माथै ही घणा लाड-कोड करणनै घरां आ पूंच्या। पोतांनै दादी, दोहीतानै नानी अर जुंवाईनै सासूरी सौख सदा माण-ताणसूं बुलादणनै डवकती रैयां करै है। जे वांरै सुगनांरी ही कोई बात, वता देवै तो बो: घणो चोखो लाग्या करै है। जियां डायमल री बूढ़ी मांनै "बेटी लारै बेटैरी बात, वता परी'र लोगां टैटवै" कर राखी है। मोद में आंधी-चूंधी हुई फिरै है। राग-रंग में लपका करती वगै है। नहीं जणा, आज ना जाणै वा: कित्तो दुख करती। मूंडो सूजाये रैती, आयोड़ां पर भुजती-बळती अर कोनै ही गुड़री किरची-मिरकी सी ही आपरै हाथ सूं नहीं देती। पेट सूं भाठो पड़्यो बतांवती, मरो-मरो करती अर ठीकरो फूटणारो कैवती। छोरी तथा टींगरी कैवती, पुराणी रीत रो रायतो ही मस्सां करती। डागैरा भायेला वधाई देवणनै

आंवता तो उळटा गाळांरा भूंकरा पांवता। पण वासहाळयांरैं कैणैं सूं छोकरीनैं छिरमी चड़गी, गूघरिया सा बंध ग्या। जकै सूं आणंद वधावणा करणनै लागगी। थाळी वजाई, गुड़रा डळा'र भेली बांटया वनरमाळ टांगी अर घेनड़िया गीत अगोरया। नौ दिनां सूं दादी आपरी पोतीरो नांग भंवरी ही रखायो। मोटै पागड़ाळो लोभां पिडत ई परवारमें बेटीरैं जलम मायै सदाही, सीतुड़ी, गोरली, पारती, हकड़ी, रामली हाळा नावटा रासतो। पण अबकै तो दादीरै कैयै-कैयै जलमरो नांव कोडायत, भवरी ही राख्यो है। बेटा-बेटी तो लारै होणा ही हा, पण भंवरी तो सगळांसूं लाडरो लचको, गुणांरो गाडो सी ही नळती रैयी। वा: ही आपरै आखा भाई-भैणांनै ल्याई। उमर आई थरब्याह सगाई री वात वणी।

डागै आपरी बेटी बेई वर देखणनै काठी कमर बांध ली। सरदारसर, मूंमासर, रिणी'र राजगढ़ च्यारां कानी भुंवाळी खावण नीसरयो। पण फूटरो-फररो, भंवरीरैं वररो वेरो कठै ही नीं पटयो। छेकड़ नैं रांळै गांवां में जाणो ही पड़यो। उतरादै नाल-चल्लै में रळनो पड़यो। ओछी बोली हाळै पंजावमें बड़नो पड़यो। वठै एक जमी-जगा अर पांती-गोठी हाळै लपरै सै लालैरो छोरो दाय आयो। लालो वरसां सूं मानीजतो आदमी, नगद पीसो तो खनै घणो नीं पण माण-मुलाकात नतगादै इलाकै में बड़-पीपळ दाईं पाको पड़ रैयो हो। माल-मता अर जगा सेठाईरै परां, मधा भुरगो रैती आई ही। टीकै में कम आणैरै कारण बेटैगी दो सगाई आगे ही छोड चुकयो। पुरियां सूं बयाज अर पड़ब्याज लेवण में दक्षो पलीतुम वाणियो है। देणो न जाणो न लेणो। जान आणै ना मनाज। लिलाड़ पर वृक्ष मांड राखी है। पाद्रा दूबला चावै है। मायै पर, ऊपर सूं उडयोड़ै लाल कसूमल रंगरी, पीळा कांधेरी चिन्ही सी ढुगाणी पागडी। कानां दें खुड़िये सोनैरा गिटायोड़ा

गुड़दा। एक पगमें चांदीरी तांती भळकै अर एक कानरी ऊपरली लोलमें खरा मोत्यांरी मामा मुरकी लटकै। किनारी हाळी लागदार धोती तथा तागड़ीमें तांबैरो मादळियो बांधेड़ो है। ऐक हाथरी आंगळी में गंगा-जमना हाळी वींटी अर दोनूं पगांरै अंगूठांमें धरण दाटण वेगी काळा काठा डोरा लढकायोड़ा है। लांबी नोकदार जूती, तिलांरै तेल रो भांखो दियोडी। धोळै-मोळै-चोळै में काळो-कबरो डील, चीलरीसी आख्यां सूं डागैरै मननै देखतो थको सोनो भाळै हो, (दायजो चावै हो) घरां कठै ही गाडी लदै ही, कठै ही बलद चरा हा। कोई गोदाम खोलै हो, कोई तेखानो जड़ै हो। लालाजी-लालाजी हो रैयो, पण लालो तो डागैरै डीलमें आंख्या गडोर जोरैयो हो। हाली-भोगलिया खाटै हा. मनीम-गुमास्ता न्हाठै हा!

डागो दूधियो जुवान, सादो सलारो मिनख! चोपड़ेड़ा फलका थालीमें ही नीं घालै। दूध पीवै अर रोटीमें विना मिरचांरा साग खावै। स्याणो अर सरवजाण बाजै। थोडो बोलै अर घणो सुणै। आपरै गांवरो चौधो, मागस, चोखलै रो नामूनदार चलतो पुरजो गिणीजै। सगलांनै सला-सूत देवणियो अयभण्यो सपूत, सोचै-समझै अर न्याव तपास, झगड़ा-झटारा टंटा मुकावै। मोटी जूती, ओछी धोती। हाथरी सींयोड़ी दोवटीरो कुड़तो अर तेवड़ बायरीसी तीखी टोपी देखतां ही गांधी रो चेलो सो जाण पड़ै। आंतरै-आंतरै तांईरा सभा-सम्मेलना में जावै अर सुधाररा कारज करै। भलाईरा पावड़ा दवै तथा हितरा ऊजला भाव भरै। जुगरी जाणकारी राखतो थको आपरै गांवड़ैमें माड़ी रीत-रिवाजां मिटावणनै नौजुवानांरो संगठण करै है अर करड़ा विचार लियां आपरै घरसूं ही तोड़णरो सरुरोत मतो करै है। समै सारू इंगरेजीरो धणी होणैरै नातै जात्यांरी जूनी बोदी रीतांरो घोर विरोध करै है। दायजै जिसी पुराणी कमीणी प्रथावांरी विनासकारी चुगली चेस्टवां करतो आवै। जकैसूं कसबै में घणो सन्मान पावै।

रूख्यो जो मीठा हुया ज्यूं सक्कर घी ! सगो-सगैरी बाजै जड़, वात वैठगी आछै घड़ ! कुण काढै हो मनरी वात, आप आपरी सै: घोळै घात ! वेटैरै लोभी वाप जाण्यो—जाळ अर भाड़खैरै डाळनै लोलतो कितो सोरो हुवै, वित्तो ही वेटीरै वापनै जाणो ! कानमें तेल घालग्यो ! कीं खोली, ना खाली। चुपा-चुपी ही व्याह मांड दियो। वातां चाली— अपूछ मावो अर आखातीजरो कावो कीं भाग वळीनै ही लाधै है।

लालैगी हेली काठी छलीज रैयी है। मंगळ व वधावणा हो रैया है। फररियां वांधीजै है। वाजा वाजै। तुररी री तुहू तड़ीड़ सा उपाड़ै है। कमरा अर वैठकां सैंठी वोढी पड़ी है। चौक्या-चौबारां लांवा नड़चां हाला होका डरड़ावै है। सुनार-जड़ियां चांदी-सोनो कूटै-घड़ै, घसै, उजाळै अर जड़ै है। दरजी घण मोला गाभा फाड़ै-सीड़ै है। जांगड़ियां ढोल गड़गड़ावै, लुगायां वनड़ा गावै है। घोड़ी अर मोटरां सजाई जारैयी है। व्याह आडा दिन कठै है ? कालै: तो वान वैठैली। कोठारै कळी अर रंग, तरवार-वंदूकारै काट अर जंग, चढ़ावै-उतारो करै है। बैन-वेटयां आरी-कारी करती फिरै है। भाणजा-भतीजा जानरी त्यारी करै है।। जुंवाई-साई, सगा-परसंगी, न्हावै-धोवै तथा पेरा-ओढ़ैमें लाग रैया है। अन्तर वांसवाळी अर तेल-फलेलरा डूंड चढ़ रैया है। बीड़ी-सिगरेटांरै धूंवैरा तुरळिया अर गोट मिल रैया है। वीनरै मूंता परवार मैं कीरो हो जमीन पर पग नीं टिकै। लालैजीरै वडै, पढ्यै-लिख्यै मुं'लागतै वेटैरै व्याहरी सगळा, वडाई-लाडकोड तथा सरावणा करै है। गीत-गाळरै वोलारैमें कान पड़चो नीं सुणीजै। जान चढणैरै कोडमें आखी वसती ऊतावळी हो रैयी है। चैळ-पैळ मच रैयी है। कुण नीं चढै ? वनीरै वापरो खुल्लो खातो है। मारग जका मारग, वाकीरा ऊभड़ ही हालो। वेटैरै व्याह माथै खुस हो कैवै है लालो।

जान तो वेबारी आई है पण हर करसी ज्यूं हूसी ! सांवरो राखसी टेक, गोप्यांळो कान। आ: सोचर डागै जानरी सरवरामें काई कसर नीं राखी। वैंड-वाजैरै सायै पड़जान टोरी। गांवरा मानीजता

मिनख आव-भगत खातर सामा चाल्या। सामेळमें पैरा-ओढाय मोटरां सामी मेली। भांकड़में भलेवैरी जुगती जचाई। राईकाबागमें डेरो दिरायो अर सीवी-सीसा तथा गिदरां-गीदवां सूं बरातरी बगीची सूरपुरी सी सजा दीनी। पाणी अर परकासरा तो खाळा तथा चाळा सा चालग्या। कमरांरी ऊपरली छातमें लटकती लो'री कड़्यामें जेवड़ा सूं झलरीदार मोटा-मोटा पंखा भुकाया। एक-एक पखै माथै चार-चार मजूर बैठाया। जकै हारया-थाक्या, वारी-विसाई इकळंग खींचता रैवै। बोदी कुळकसनै खसरै बीचाळै सागीड़ी कसर जाळी-झरोखामें टाटा बधवा दिया। हरेक कमरैमें पूरा आंवता आदमी उतारथा। जान्यांरी बैली आयोड़ी नांवावळी सारू न्यारा-न्यारा कमरा दिया अर वारां दरजा माथै, जुंवाई-भाई, टावर-जुवान, बूढ वातैनी जिसा दरजा मांड्या। टाटांरो पाणी अर पंखारी तणी कदे ठमै नहीं, इसड़ो आपरै आदम्यांनै डागै हुकम दिरायो। इयैमें जे कमी आवै तो मजूर ओळभो खावै अर पीसो ही मजूरी नीं पावै। डागैरो डर आधै विसवास दाई मजूरां, पुरसारां, रसोइयां अर भाई-बीरांरै काळजैमें कीलै दाई खुभग्यो। पंचोटियो आदमी, गांवमें बोलणियो, आछो दूकानदार, उधार तोलणियो राजमें पग अर अंग, घर बार एकसो दबंग। जानरी मान-मनवार अर खातररी आतरमें मिनखां मरतूरा दीना। चार दिन ताई रात-दिन माज्या बच्या। जी गोरक सुकायो। पण ओलभो नीं लियो! कीं जानी नै पग मांचै सूं नीचै नीं मेलण दियो।

जानरी जुग, कुण कीनै ही मानै! दूणा-दूणा फोड़ा घालै बीनरो बाप बनरो ठोकाक जान्यांसूं बेटीरै बापनै ऊंचो अथावै। पण बेटीरो बाप सूको नवरुठ तथा ठूंठ, कुछ नहीं, टूटणो जाणै। "प्रार बाबोजी बैगण गावै, लोगांनै परमोद सिखावै" वाळी कैबत चोढै नहीं करणी चावै। दुनियांरो कैणो है कै—पैली दियो आपरै घरमें संजोय अर पछै मसीतमें सळायो जावै है। डागो आपरी चरणोई मरनैं पी रो ही दियोड़ो दामको खुद देसै न, दूसरां प्यारां-मितरांनै देणरी भूली करै। श्रीमर

उडाया, मौसर मिटाया। आखा खरचा-बरचा घटाया अर कुरीतांमें सुभीतैरा काम पैळाया। नैड़ला गांवांमें डागैरो नांव हुयो जकै'रो पाछो कुनांव करणो अर घरमें नुकसाण घालणो। लीक-लोप'र मिनखपणैरै माण-मुलायदै नैं खोवणो नहीं जंच्यो। मरदरी आण-बाण रैवै है जवानमें'। जवाननैं बट्टो लगावणो जमारैरो मोटो दाग है। हाण अर अपमाण दो घाटा बरोबर क्यूं ? दायजो पेई-पेटियांमें ओलै देस्यूं, मिनखांमें चोड़ै नहीं।

सुळ-सुळ सरु हुई। लोगां काना-फुंसी करी। वात वीनरै बाप कनै गई। "फूं फा माणसियो गिघावै"। सगो रातैरीगै आयग्यो। कंठांमें फूससो पजग्यो, आंख्यांमें रावडिया सा आ पड़्या अर मरोड़ो सो चालग्यो। पेटमें तो भाठा ही खटा ज्यावै पण पगामें भुरटरी छोटी सिळी ही नीं खटावै। सीधै मारग तो सेर पक्कै मोठारै आटेरा लूखा-लाणा रोट ही गटका जावै पण अळसूंट हाळो माडो सो दाणो ही भाळा-फूळा लगा देवै है। ऊंट कोनी कूदै बोरा पैली ही कूद ग्या'। सगै तापड़िया लेय लिया। बोल्यो—' दायजो देखाळै कोनी तो सगो म्हां-तांई क्यूं गियो हो ? "गाढवाळो तेयसी जको तो राजाजीरा घोड़ा पायसीं"। वडो जूआर खजै अर दायजो देखाळै ही कोनी। दोनां कानलां भाड़ो भरियो, बेटोनै वर लाध्यो नहीं जणां ! तीन दिन जानरै घड़ी-घडीरै छेड़ आछो खुवायो-पायो तो नांव कमायो। काजू-किसमिसरा कलेवा, दूध-रबड़ियांरी दफारी, सेव-संतरांरी मनवार, पान-सिपारियांरा पुड़ा, साबण-सिगरेटांरा डब्बा अर सुवार-पालस हाळी दुकानां बिनां कं कांठियो फाटै हो ? म्हारै घरां कै गयो ? चार दिनरै हीड़ै चाकरी अर मीठी बतळावण सूं म्हारी किसी तिजूरी भरीजगी ? सोनैरी थाळीमें लोहरी मेख मारणी ही तो म्हां सूं क्यूं भिड़्यो ? इसी वेगी ही भागवानी हुगी खतम ? सीधा ही कांखांमें गोळिया ढूंढे। पण म्हे ही वाजीन्दा हां ! आगलैरी स्यान लेवता ही को संकां नीं ! इसो बनड़्यांरो नादीद ही कोनी ! आ ही नहीं लाधी ! एक-एक बंदै लारी चार-चार वीरवानी

संभाली। "ओमना-सोमना गरणगटा, ल्या जुजमान च्यार टका"।
वीनणीरो बडो बाप सगैंसूं हाथ जोड़कर कंवै—"परसग्यां थां लायक तो नीं पण म्हे म्हारै डोल सारू तीन दिन चाकरी वजाई है अर एक छोरी गोबर थापणनै दी है, जको मेहरवानी कर र अखूट सनेह वधाव ज्यो।

बीनरै वापरो एक साथी वराती लफगो बोल्यो—दायजो कठै मैल्यो है ?

डागै उथलो दियो—दायजो म्हांनै देखालणो कोयनीं। इयैरै वासतै संदूकांमें घाल दियो।

दूजो लफंगो—देखालणो कोनी'क ? देखणजोगो कोनीं ?

डागो—म्हैं जात-समाजमें दायजैरी सौगन ले राखी है।

तीजो लफगो—तो सामली सन्दूकांमें गोवर-माटी भर राखी है कै?

डागैरै परवार हालां लोगां आंख लाल करी अर कैयो—मूंडसूं संभालर वोलो !

लफगां खींच्या ही वेह हाला वांस। अर दोनां पखां हाला हुया आपसमें हवोथवो, भिड़ग्या, हाथे वाथे नीं रैया। कंई भला माणस वीचालै पड़्या अर वडा दोरा न्दारा-न्यारा करिया। वीनणी मोड़ बंधी मंड़ी मांहरी मां ही रैयी, जान सूकी ही वीननै लेय'र डेरै गई वींटा कस्या। घढो-चढो हुई। पुलस हालांरै कूड़ोड़ै मोरचै दांई वन्दूकां चलाई अर लफंगां दरै मारी। जद डागैरै चामड़ीमें चेतो वापर्यो। नेतागिरीरो नसो फीको पड़्यो। "वेटी जाईरै जगन्नाथ ! जांरा हेठै आया हाथ"।

डागोजी न्हास'र नौजवान मंडलमें गया तुरता-फुरत ही कारवाई करणैरी अरजी पेस करी। नौजवान मंडलरा मुखिया, काम करता, डागैरी पूरी हिमरा चढया अर मचर-चढती जानरै डेरै आया। वीननै घेरपरो वीचालै वैठाण्यो अर जुवानीरो जोस अणायो। थाणां-तैसील करणैरी गादड़ वभकी अर दुनियांमें नक वढी कर देवणरी दवड़क दीनी। बदनामी कर'र दूजै कठै ही नहीं परणीजण देवणरो डराव

दिखालयो। चढ़तै लोहीनै घणो लागत सूं लताड़्यो। लालैजी लोभ माथै धूड़ नांखी। बीनरै कूड़ै काण-कायदैनै गाल् काढी'र आजरै भणाईनै ऊंची बताई। सै बातां सुणाई अर कैयो थां जिसा भण्या-गुण्या, जागता-जोगता चतर जुवानां माथै तो आखी मिनख जातरो पूरो भरोसो ही है। जे देसनै गुलामीसूं छुडायो है तो आछी-आछी बातांसूं भल ऊंचो उठावो। कोमल्-बाल्क किन्यावांनै बालण-उजाड़ण हाली दायजा-डुंबाड़-लायनैं वेगा सा भाज'र सागीड़ी भिजो नांखो। थांरी जल्-विद्यासूं जलदी बुझा देवो। भोली-भोली बालिकावांरा सोवणा गिरस्थ बाग-बगीचा बलणसूं बचारो, नीं तो भारत सूनो हो जावैलो। फूटरी, सुसील, गुणवान किन्यावांनै सुखी बणा'र देसरो ढांचो बदलो। वचनांमें बंधो कै लोभी, कोढिया, टाकी दायजैरो बालण बालर ही छोडस्यां। जद ही जुवानांनै ऊंचो आगण मिळैला।

मदलरै प्रधानजीरो बखाण सुण'र बीनरी भुरड़ीजती मूंछ्यां तणगी। विगड़योड़ी वात वणगी। बीनराजा जाबक नटग्यो। नौजवान मंडलनै मिल'र जानसूं अलगो हट गयो। कैयो-जान भलांही जाओ, म्हैं तो सीख लेय'र ही जासूं। लालैजीनै कैयो—पिताजी! थे मेरै माथै मोटी मैहरबानी कर'र दायजो दिखालण हाळी जिदनै छोडदयो। म्हैं कदेही थारै सामै नीं बोल्यो। पण देवलीरै कारण बिगड़ी दसा देखर म्हारै मनरी बातां आपरै आगै अरज कर रैयो हूं। दायजै री डरावणी बातां अर कालेजरी क्लासांमें रात-दिनरो अन्तर है, मनै-पोत ही मालम हुयो है कै—आज कालरा ब्याह-सावा, एक अयोग आफतरो मोरचो है। अमलरी डली अर जैरको गुटको है, जको बेटीरै हर एक बापनै आख मींचर कठांसूं हेठो उतारणो ही पड़ै। विना सुधार मानव समाजमें इवै सूं कोई नहीं बच सकैलो। आज हमां तो कल तमां। बड़ी ठगी है, खोटो धाप्पो है अर नादरसाही जुलम है। टाबरजी आपणै जान्यांरी मोकळी, वणभोली अर मनमोवणी आदर-सतकार करयो। सारी रीत-रिवाजांनै ओछै भाव'र ढंगसूं निभाई। मनै ही थापां उणांनै दायजैरै

घरटमें घालर पीस नाखांला तो अमोल मानखैरी प्यारी कीरत सम्पतनैं धूंवो लगा देवांला। खो:खा जावांला। घराणैंरी बात नीं, जगती कमीणां विचार वतावैली। धन ही वडो होतो, तो सगो-सगैरी जड़ क्यूं बाजतो ? जको पातालसूं पाणी देवै। धक्कैसूं दायजो लेणो धरम नीं, पाप है। पारकी बेटीनैं जिनावररी जूण जाण'र लालचरैं बजारमें मोलाई करणी है। आप मनैं पढायो-लिखायो है तो जमानैरी हवारो सामनो नीं करणैं खातर थोड़ो ही ? म्हैं सोचूं हूं कदै ही नीं ?

बीनरै बापरो अंस खिचग्यो। सगलांरा मूंढा धिरतैं जान्यांरा सा हुयग्या। मियो-बीवी राजी, जद के करैलो काजी ? रीस ठंडी पड़गी अर विणजारैरी बालद सी जान पाछी ढलगी। लोगां बात बणाई कै— सिंघमें आलस, सांपमें भौ, बामणमें फूट अर सोधा-गोधांरै पल्लै हारनां आंती तो मुलक बसतो नहीं, उजड़ जातो।'

"वदो जाणैं धन करूं, धन कर करूं गुमान।
सांई हाथां कतरणी, राखै लो उन मान ॥

रुत सी बदली। गिरमीमें वरसालो आयो। सांसो मिट्यो अर आणंद-मंगल खिल्यो। नागांनैं नैणांसूं, लुगायांनैं गैणांसूं अर पचानैं मैणांसूं जितो मोद आवै है बितो ही डागैनैं आज आपरै नौजवान मंडलसूं मिल्यो है।

बीन-बीनणीरै साथै सोनैरो मोड़ बंध्यो। बालक-सालचो गठ जोड़ो जोड़्यो। सासू'र साल्यां सीखमें गिन्यां'र गैणां दीना। बीनरै साथी साईना भायेला संभाल-सभालर लीना। डागैरो डोकरी मरैं घाव-हंसमें पान फूलसूं रंगत आई। कोयलड़ीरो गीत सरु हुयो। डागैरै दरुजे मोटररो होरण वाज्यो। गाडीरा बलद सा जानी आया अर चीजां घसतां हाथ-वसू करी। रीतरा राम-राम फुरग्या, जीतरा ढोल घुरग्या। साची कही है—आया जानो सौमणारा परण्यां पछै नौ मणारा अर चढता रैवै दोय मणारा।

है सो वेगी छुटी ने परा'र आवणरी चेष्टा करो। अबकी बार मुदेमें पैल-पोत बीस हजाररी बात तै: हुई है।

बापडा नास्तिक मिनख सांची कैया करै है कै—दायजो देय'र बेटीरी मौत मोल लेवणी है। वनरा ठोकाकड लोभी लोग मरज-मांदगीरै मर्मभी वहरो होडो क्यूं करै ? बांरो तो ओ बौपार है कै—मोकळी बहुवां मारै अर मोकळो धन कमावै। पण विना दायजैरी आसाळा-मुसरा, बहुवांरा घणां कोड करता रेवै। सिर सिरवारी वेळा ही कै: देवै—बहू डाढी दोरी आवै, जावता राखो ओखद दिरावो। डांगै बेटीरै ब्याहमें आपरो टापरो उजाड़्यो अर गवांनै खेत खुवायो। देखाळ्यो नहीं पण हजारांरो धन दियो जको दायजो आपरी जाम्योडी बेटीनै इसो आडो आयो।

●●

बारो तथा खरच

वडो दडोब गांव। वाणीकी वस्ती। बामणांरो घडो। बाकी औरभी जातां ही थोड़ी-घणी वसै। गांवरै बीचाळै मीठै पाणीरा पांच कूवा, डाढो आछो टाडो। खाडो न खोळो, बोळो लांबो-चौड़ो गुवाड़ पड़्यो है। गांवरै बारै च्यारूमेर मोटा ताल, जकांमें तळाव'र फूटरा जो डा। तीन बावनी जमीं अर चोखी चरणोई है। मोकळा मिन्दर अर ठाकुर-द्वारा। गाडीसूं परिया पण आण-जाणरा साधन सारा। सैरसा सैर, बाहररो पाहर, वाणीकी वसती अर किरसाणांकार। अळगै-अळगै ताईरा लोग एड़ा सुख सुणै अर अठै आर बसै। कोई सतपीढियैंरो ठा, न आयोड़ेरो। सगळा ही गांवरी धिणाप करता थका सारो मरै। वाणियांरो घरम

डाके, रियासतनैं तोलैं । ना-करणैरी सार नीं जाणैं । दिघोड़ा पीसा आवै तो पाछो आवै, नहीं तो सालमें सैकड़ू घरमादा लागै बारै भेळा ही नैं सहो । म्हांरा है तो कठै जासी ? नीं तो खायो-पीवो । मूं'ता ऐड़ी ही बात कैता रैवै । गांवरा बामण-बैरागियांनै पांचमण पक्को सीरो लागै, जको बरसो-बरसी जेठरै मींगणै देगराजजी आपरै घरां जिमावै । गेहूं'र घड़ा देवै, गायांनै घास नखावै । रामरो नांव लेवै अर घरमादैरा काम सिखावै ।

इयांरै ईज्जै-विज्जै पांच-सात पीढीरै आंतरै फूलचन्दजी मूं'तो भळै उदार, दिलदार अर दानी वाजै । पक्की बोली अर कच्चो घर । परदेसमें वोपार करै खुल्ली लांगरी धोती पैरै । केसरिया पाग बांधै । चौड़ो बाटको सो मूंडो, छीदी लटारी सी दाढी, मोती सा दांत अर ऊजळो सभाव । गांवमें भलाईरा काम करणा चावै । गांवरै बारकर बारा-बारा कोसरी सूनी उजाड़ पड़ी डरावणी लागै । बठै कागला मरै, बटाऊ सूका मींगणा सूंघ-सूंघ'र चालै । इसा खोड़ांमें फूलचन्दजी पक्की पोवां चिणावणरा कोड करै । मिन्दर-धरमसाळा बणावणरो चाव राखै । फूटोड़ा कूवां अर जूनोड़ा जोड़ांरी मरम्मत करावै अर घाट टूंटी लगावै । पण एकलपो आदमी आपरी दूकानां देखणनै परदेस ही जावणो पड़ै । बठै नूंवी दूकान कर परी'र वैठै जठै ही मरदरसो खुलाय, कूवो खुदाय अर पछै आपरी दूकान चलावै । धरमरी बाड हरी रैणैरै कारण नांवरै सागै लिछमीरा ही वोरा लाग ज्यावै है । मतारा डिगला जमै, फूलचन्दजीरो मन जद क्यूं कमै ?

कुररी गाडी अर बररा गोरू, आपरी जोत अर निजरा घाड़ । ठाठ लाग ज्यावै है । कोसांमें मकान वणालेवै है । कुसदेरी फळां बैठा लेवै । दोय-च्यार बरसांमें वण जावै है । जगां-जगां घररा गोळा अर सोदैरा वाड़ा, कळकतैमें गिदी अर निजू मकानांरा भाड़ा । नौकर-चाकर, गुमास्ता'र, रोकड़िया, मुनीम अर मैनेजर राख'र देसरो मतो करै है । ई मुसाफरीमें घरां अर गांवरै बीचाळै जगां मोल लेवै है । बगां राजरै

नहरी कैरा मचीड़ानूं मिलै है। इयै जमानै लेवणारै बदलैमें गांवनै एक मोटो डोडो पक्को निरा देवे है अर पछै नहरै फोड़ा'र एक ठाडी धर्मसाळरी नींव लगावै है। धरमसाळारो काम पांच बरस तांई बरोबर चालै, जकांसूं छप्पनै जिसा काळमें गरीब मजूरांरी पूरी उदर पूरणा हुवै। लोग ठाटा ढोवै, माठा चालै. मोकळी मजूरी माफकै घालै है। बामणांनै गेहूं तो नहीं, पण दोनारै घरां पेट जोग दाणा अवस वपरावै है। कामठाणी नावै मुनीम-रोकड़िया छोड़े अर फूलचन्दजी आप दिसावर जानो भाकै है। नामूनरा रुपस आप रैया है। अवळी होडरी मूळ, बेग राजजीरै घरां तोप गया है।

चार भाई अर बेटा-पोता मोळा वाँ बैठ्या है। धोळी चोरगां मखमलरा चोळा, मूंछ-दाढी मुंडावै भद्दर हुया बोलो। इकोतिया करता जीमणा बैठे है। जद आगे जैन साधवांरी कतार पातरा लियां गोचरी-पाणीरा पावरण आठै है। कोरे हो बाप कोरे हो काको, कोरै हो बडबाप, कोरै हो दादो, आज देवलोकरी जातरा करण संसार छोड'र गया है। बेगराजजीरा भाई-बेटा भीतरपो सला-सूत करै है। बेनां हवी बुलावै है। कोई विरमपुरी अर एक नरसारणीरी जचावै।

धणियांरा बेटा मरणमगत न्यारी जाणै, कमाणी जाणै, देस-विदेसर जाणी जाणै। लोग जाणै एको जाणै, लड़ाई अर धोको जाणै पण आगै-पीछै नीत-रीतरी बातनै कै जाणै? ऐ तो बामणांरी बताई-बताई ही करै है। नांव आवै, नामूना भावै, चोड़े अर चौगान भावै। ओलै-छानै दान नीं, मिनख मार'र हाथ नीं धोवै। कतलैगार हुवै, ईंट चोल नाखै, ठापरा विकाय देवै, राच्योड़ी फुड़ाय देवै, सुरी नैरसा तुरी कर देवै। पण पइसैरै भीतर सै: काम तुरतदे। चोड़े दानी वणणेरी सोभाग लेवणी ही चावै है। बामणांरी मानै, भायांरी सूनू है। बेगराजजीरै पूत-पोतांरी पीठ आज पंडित पंचारी आपांनू सूनी हुयर'यां है। चोधरी हो सू बाने ऊंचा चढावण खातर पधारा लागोड़ा लागोड़ा पर भाग्यी मन रैया है। दोनूं मिल'र बात करै, बेगराजजीरा

बेटा-पोता सुखी है। बेगराज बाजतो हो ! सालमें एक बिरमपुरी किया करतो, मेठ नांव धरांवतो, आया-गया जिमांवतो। लारै रामजीरो दीन छोडग्यो है। किसी बातरी कमी है ? मोकळा मिनख अर मोकळो धन, मजैगे माण अर मजैरो मन। भळै काची ताकण हाळी किसी बात है ? आज दिन पूरता हो। गरीब ही एकर तो मर पड़'र मूं ढैरी राख उतारै। काचै-कदळै मरणै माथै ही पाणी ढाळ तो हुवै। मुट्ठी गूघरी तो आपरै माईत लारै सैं ही खिडावै है। थारै तो राम-परताप है। फूठरी मोसर भनाई हुणी चाहीजै। कावो-चोखो कढ़णो चाहीजै। कळियो थोड़ो ही काढो ? बारै दिनांमें बारै बिरमपुरी करो। विपरारै घरा बारै तांई तोवा मूंथा मराय देवो। आळैरा उडचोड़ा बेगजीरा भाई-बेटा भुलावैमें आग्या। धूघी, छिन अर मकड़ी तीनूं सागै ही चढ बैठी। नाचण लागग्या, जूपिया सा खायग्या। बोल्या—म्हारा चावै टापरा बिक ज्यावो, ओसर तो गांव आखैनै ही कर स्यां। सगला भाई मिळ'र म्हारो काज सुधारो। चुरा माथै कड़ावा चाढो अर रांधो खावो। च्यारां खांनी चढ्या ही मूं तांरा आदमी। सतवाड़ै मडीसूं कणकरी कतार सी लाद ल्याया। घीरी कुप्पां भर'र बौपारी सा पाछा आया। बंगलै, सरसालै आड़तियांनै हजारांरी हुड्यां करी। रिपियांरा पावरा अर न्योली भरी। खांडरा कापा खोल्या, आटै खातर आसरांरा खूंणा तोल्या अर घीरा घड़ांसूं मोटै घररा पलींडा सा भरचा।

चौमासैमें बेटांरी, माईत मरै बेटांरी अर गरीबांरै पेटांरी सूझ-बूझ सिथर टिकी नहीं रै: सकै। रबड़री दड़ी दांई ठोकर मारै जकांरै ही आगै भाज-भीर हुवै। मतीरैरी खुपरी जिया कोई खुरचो खावो। रोहीड़ैरै छोडांसूं कोई मरोड़ तेल काढो।

पञ्च लोक मूं तारै घरां खरड़ै बैठा बारैरी बातां बणांवै है। भाई-बन्धु गांवरै मिनखांनै दूहै वेगी भेला करै, भाज्या फिरै है। मजूर पाणी ढोवै, बूढी-बडेरी बैठी रोवै है। नाई तम्बाखू'र कड़ावांरो काम करै है। नायण चुणै, चांपड़ै अर मिरचां कूटै है। ढेड-थोरी लकड़ी

है। वाखळ, लारनो, छात अर सँग-आसरा भरीजग्या। डागळां अर पाड़ोस्यांरै घरां वारणां ही कान पड्यो नीं सुणीजै है। हलबलो हुवै, सावणरा सा वादळ वुटै है। कुड़ाछा'र जर चालै, वाळटो, टुकड़िया वगै। हाथै ही लावै, हाफै ही उठावै है। गांवरो म्हूंवो कुण कीनै ही केवै, जीम्यां-भूखांरो ठा नीं, ठांव-ठीकर एक सा वेवै है। नीवड़तै पाणीरा तळाव सा मोटा कड़ावांनै सुकावै है। कठै ही लुगायां, कठै ही मोटियार, कठै ही वाणिया, कठै ही गिवार, मेळो सो लाग रैयो है। मंगतांरी पांत अर कमीणी जात ल्यावो, ल्यावो कर रैयी है। दिनूंगै वैठा जको आंथण हुयग्यो। पण वामणियांरो छेड़ो नहीं आयो। ओपरा आदम्यांसूं गांव छल रैयो है। आगत वटाउवा अर आडी मगतवासूं घर बोढग्यो है। घर जाणै हला-हला'र छल्यो है। घर हाळा तो आटैरै लूणदांई रळग्या। गूंगा-वैरा हुयग्या। कुण जीम्यो अर कुण भूखो रैयो, जकांरो वांनै तो कीं वेरो नीं रैयो। सीरो नीवड़्यो जद ही कीं छुळको पड्यो अर सांस आयो। ओथारो ऊतर्‌यो अर थाकेलो छायो।

नैरांमें ज्यूं गग नैर, सैरांमें जैपर सो सैर। गायांमें पूगळरी गाय, जायांमें परतापरी अकाय। भायांमें भींवरो भाव, नायांमें सेन भगतरो नांव। कोडांमें सपूतरो कोड, करवलामें ज्यूं जेसळमेरी टोड, जिया जगत-जसमें वाजींदा है, बियां ही गारव गांवमें मूं मीठै तांई वडी खड वेगराजजी मूंतैरो नांव सिवरण सिरै अर नाम जादीक हो रैयो है। डूम-डल्ला कीरत गावै, मंगता-भिखारी विरत चावै। कोइयो-कोइयो आयो चांदरै चानणै में बुहारझाड़'र खायग्या, लेग्या अर केई मांगता ही रैग्या। घर हाळा हाथ जेड़ै दांतरी दयै अर वालटी कुड़छ्यांरै चिप्योड़ा भोरा उतार-उतर घालै है। स्याल खिडै खिलधाररी, दारू ऊतरै मदवैरी अर कचेड़ी उठै, उकीलरी जकी हालत हुवै, बा ही मूं'तांरै घर हाळांरी हो रैयी है। जोस ठंडो पड़ग्यो, चांद नीचै ढळग्यो। लोडा तो लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सिल्या निसरणी अर सतंगा टूट ग्या। मूंधै माथै पड़ग्या, पैण सा लड़्यार, नींदमें कुच हुयोड़ा भातै उठ्या।

आगलो हिसाब कर'र पीसा चुकावो, पछै पल्लो मांडो। आगला तो गया चांदरै डावै पसवाड़ै अर छेड़ै, भळै मांगण आ टूक्या। म्हारै किसो खेदेड़ो है? दियां-लियां सूं ही काम चालै। अळींच्या तो कूवा ही नीवड़ जावै। हुंकारो करचो अर ओसर चोखी तरियां करा दियो। अबै सफा उजाड़स्यो कै? भळै उधार तोलां, म्हारो घर पाणीमें थोड़ो ही है। म्हांनै भी बसणो है। सूजै वाणियै बीमूं कानून-किरावर कर-परा'र मूं'तांरै आदम्यांनै खाली पल्लै ही पाछा मोड़्या। परलोड़ी हाटां भळै गया पण आज तो सगळै माल नीं, चट्टो उत्तर अर जाब ही मिल्यो। बारै दिनांमें जरुरत सारू जिनसां लाया, जकांरा सगळा तकादा सागै ही आग्या। छेकड़ धाप'र पाड़ोस्यांरै घरांसूं बाजरी-मोठ उधारा ल्या अर खोट-खड़ब'र खीचड़ो रांध्यो। छाछमें आटो घोळ'र कढी करी, अर परसंग्यांनै जीमा'र सीख दीनी।

घाटै गिड़ा लिया, मांगतोड़ां चूंट'र खालिया। घरां दाधो-दोखण ही नीं रैयो। लुगायां लड़ै, सिर फोड़ै, टींगर भूखा कोरळी मारै, गरळावै है। मिनखांरै कंठा ऊपर कर फिर रैयी है, भावगी वण रैयो है। गायां-भैंस्यां बिकगी, सांढ्यां'र-ऊंट बोरा लेग्या अर तरवार-बन्दूकां ललाम हुयगी। गैणो रैयो न गाभो, पिलाण रैयो न बीणो, बत्ता-बत्ता थाळी-बासण ही बेच खाया। पण ओसर हाळा रिपिया तो नहीं ऊतरचा। अळगलां आड़तियांरा लोटस आया अर कनलारी कुड़की आई। केयां धरणो दियो अर केयां चीजां दब्बै मारी। पैली तो दूकान अर नोरा बिकग्या, पछै घर अर खेत ही खोसीजग्या। टाबरांरा पग चढग्या, गुवाड़ो मूंधो मारीज ग्यो, सित्यानास हुयग्यो। एक भाई होलात में आयो, दूजो बेटो जेळ गयो। डकोज्योड़ै बेगराजजीरो नांव डूबग्यो। सैर-सारणी पर काळो चढग्यो, पाणी फिरग्यो। भूखरै बिखै सगळा भाई आवं-उतार हुयग्या अर गांव छोडग्या। बोरांसूं डरता बेटा-पोता रातरै पल्लै भाजग्या। खिडाणियो-सिडाणियो हुयग्यो, लीड़ी न बट्ट। लारै एक लिछियै नांवरो न्हानो पोतो अर बींरी बिधवा मां रैयां। बियांरो

हुयगी। म्हे तो सेठां थां (फूलचन्दजी) लारै वणो ही टालो दियो अर माडै मठै सीधै सूं ही चिकायो। जाण्यो काम आखर है तो मूं तांरो हीं। कुत्ता थारी काण'क थारै धणीरी ! तो ही भलै गांव छोड'र म्हा सग्या। दूजो बोल्यो—बूंटा उखड़ग्या। पीढ्यांमें नीं पांगरै ! ऊमरमें मूंडै सड़ी नीं आवै, रआंत कटगी। मकोड़ो कैवै मां गुड़री भेली ल्याऊं, तेरी टांगांरी ललक तो कैवै ही है। सेठां (फूलचन्दजी)री होड करै, ताण आवै। मिलण वेगी आयोड़ा बामण आपसमें ही हकारा देवै है अर लोद घालै है। पण फूलचन्दजी स्याणा, सरबजाण, समझदार अर पुख्ता-पुरख, मूंढै परली सारी बातां ताडग्या। वेगराजजीरै घररी कुवाद उडण हाली बातां सुण'र नूंता खार जनेऊ गलां कानी कड़ी निजर सूं झांक्या अर आपरै डरावणै डोलां सूं आखा बाका बंदकर नाख्या। लामालड़ाक, गलांमें जेवड़ै वरगी जनेउवां, काखांमें पसेवैंसूं पीला हुयोड़ा मोटा मालांरा बूजा, गोडै भूणी धोती अर पीला सिडयोड़ा दांत, माड़ी-फाटी पागां बांधे, पंचोटिया, टाटी सेवा दादा-पोता आपरै वरांकानी टुरग्या। फूलचन्दजीरै आगै चुगलखोर-चापलूसांरी दाल नीं गली। आप मतां ही आसीरवाद देय'र पेड्यां ढलग्या। सामां फूलचन्दजीरा साथी तथा गुरु, पंडित स्योकरणजी मिल्या। खुवाकड़ पच दादै फूलचन्दजीरो सुभाव वतायो। बोल्या—वेगराजजी हाली तो बात हीं नीं सुवावै। दूजांरा मन ल्यै, आप तो होठां सूं हरफ ही नहीं काढै पिंडतजी हां ! हां ! कर'र हंस्या अर फूलचन्दजीरै घररी गली लीनी।

फूलचन्दजी पगेलागूं कैःपरा'र मांचैहूं हेठै आया, पगे लाग्या अर पिंडतजीनै ऊंचो आसण दीनो। पिंडतजी, खुसी रैवोरा दोय सवद कैयां, हाथरी सींध सूं बैठणरी सेन करी अर मूंढैनै मटका'र नसरो लटको करचो। मोटी मूंछां माकर खिल्या अर चसमैनै ऊंचो सारचो। चांदीरी डवड़ी पर ठरको मारचो अर तम्वाखूरी चिमटी भर'र सपीड़ खींच्यो। डोलजलरो कलसो आयो, खाटै-सिपारीरी मनवार हुई। एकै कानी नरमाईरी ना-ना गलै, दूजै कांनी सेवा-चावरी सीरफलै। हाथरी

हुय'र आयो। देससूं भाज्यो, दिसावररो काम संभाळ्यो। खाता पत्तर खोल्या, हेकड़ी छांटी। लेण-देण जाणै नीं पण मुनीम सूं आंटो। गोरधन गरभीलो जुवान, थाई-घूंचळी घणी जाणै। पेटरो पापी पण आपरी कूड़ी हुस्यारी दिखाळै। पनरै वरस पढ्यो पण दसवीं सूं नीं कढ्यो। आपरै दादैरै साथी स्योकरणजीनैं ही चरावणा चावै। विय़ां पर ही बाबूपणैरी बू: बघारै। कोरो मालक पणो जचावै, कीं आवै न जावै। वृहारमें लिछमीनारायणसूं हैठै पण अकलल्यै नीं उळटी दयै। गप्पां मारै, हस'र दांत दिखावै। पीठ पाछै छुरी अर कतरणी चलावै। चोखो चैरो, आंख्यां पर सोनेरी डांडीरो चसमो। दोनां हाथांसूं हीण, डोलगे आछो। मारवाड़में परण्योड़्यो, रंगपुरमें रम्योड़ो। मितराई न दोस्ती, आपो न प्यार। लोगांनैं धफा देवै, मोटा-मोटा मैल दिखाळै। मुतळब लेंट खुवार करै, लोभ अर सुवारथमें मरै। सौ लछणांरो धणी, बिना पींदैरो लोटो! चोरी अर चोचो दीनो, काममें घोचो मार्‌यो। जाळ रच्यो अर लिछमीनारायणनैं निकाळ्यो। पीढीनै पग लागा, मूं'तागे मानखो चौड़ै आयो। गोरधन गांवमें गंडकाईज्यो, लिछमीनारायण सौ-सौ कोसां तांई सराईज्यो।

●●

वैर

पैलड़ा वरतारांमें एवड़ चरावणो वडो ओखो हुया करतो हो। भण पक्कै पाणीरी लोट, कच्चै हघूण आटैरो पावरो, खीरहाळो तवलो अर ओढण-विछावणरा गाभा कांधै नांख्यां, म्हास्या वगता। भूख-तिस सयां नींद भोगता थका चकडूं डिमै दाई भूंवाळी खावता रैता। एवड़

चरावणरी घमींणी लागती—फलांणा मुकदा मेरीके लरड़ी चरायोड़ी है कै ? सीयाळैमें पोणो, उनाळैमें डोळाविराज अर चौमासैमें पग तोड़णरी छेड़ो नहीं हो । जद ही कैवत चाली—"गायांळो गिलर करै, भैंस्यांळो माणी-माणी, एवड़रै गुवालियैरी नली-नलीमें पाणी ।" पण आजकलै वै: वातां नहीं । अवै तो एवड़हाळा बाबू बण्यां फिरै है । एवड़रै सागै एक गधी का गधो राखै, जकां मायै म्राटै-पाणीरो झाखो भार लाद्यां वगै । आप लारै अलगू'जारी तान तोड़ता, लैरमें मदवा बण्या जोटै । मेह्-पाणीरै मोकै ही रैयै तिरपालरी तगोटीरै ओटै । फिरचा फावड़ांरी कोथली, बीड़ी-सिगरैटांरी डबी अर बेटरी, वाजारी पेंडो गासभियारै पेटा मायै लटकायां, खोड़में विसायत खानो सो बिसाया फिरै है । सोवणी पेंडा अर डर-भोरा नीं ऐधा । सगला लोग गरज करै, सालता रैवै । आडोसी-पाडोसी हजूरी भरै, अटवया-भोड़्या मजूरी भरै अर भ्रठोई हालो घरां भीगणा-पोठा नाखै है । चोखा ऐंडा-मेढा राजै, कलमा नरम लगावै है । दूर-दूररी नूंतांरी जोड़ै, पूरी निभावै कदै न तोड़ै । साची बातांरो ठाट है । आजकलै एवड़ हालां लाट है ।

बेटीनै आपरो पीर, सिरैपंचनै आपरो गांव अर वामणनै जजमानांरो राजी-खुसी वसतो घर देख'र जितो सुख हुवै है, वोही सुख'र आणन्द भुगानै जावड़ आपरो एवड़ चरतो देख'र हुया करतो हो । वो: सागी-सीर्यानै टावर सारो दिन एवड़में ही उगावतो । एवड़ भुगानैरै सार कु मैंगी मारयोड़ो, पाळयोड़ो हो । एवड़में जिकै वगत आंजितो तीन-तीन हजार सरदू नेड़ै निवास अर की दूजैरै नीं लावै हो । जद ही वो भुगानो जावड़ कोड़ी नाळ कैवै अर निजरी नराई-वाड़ैमें घणो सावळो रैवै । आपरै हाथ सू' करनै, रंग लगावै । टाबर चोखड़ै घूंचो देवै तगा भुगानी सूनाईनै पूरी संभाल है । एवड़रै ई लाड-कोडसू' ही राजी रैवै अर आगर गावै । वो: एवड़रै आगै घर-बार, लुगाई-टाबर अर दूजै घन सोवनमैं सवा ही भूल वैठ्यो । रात पड़तै ही गांव सू' बारै ऊंचै धोरै मार्थै एवड़ वैठाय'र सारै आप ही बैठ जावै । एवड़सू' पलगो हो सैरो

वींरो जी ही नीं करै। एवड़ बिना जियारी कठै ? वींरै इसी बैठगी। दूजी नीं, एवड़री कमाई ही आछी लागै। कंवै —सालमें दो बिरियां ब्यावै जद सागै उरणियां-बकरियां मोकळा रळ ज्यावैं। दोबार ही ऊन ऊतरै जकी घणी-मूंघी बिकै। गांवरा दूजा मिनख खुदरै मूंढै एवड़री वडाई सुणै जद हंसै, पीठ पाछै चुगली करै। पण भुगानैने कींरो भो, वो दिनमें जे पांच-च्यार बिरियां एवड़री वडाई नीं करै तो वींरी रोटी कद पचै ? दाल किया गलै ? आफरो आ ज्यावै।

उन्नै अरजन जाटरा थरका पड़ै। थलीमें वड़ै जोररा धाड़ा दोड़तो थको आपरा आदम्यांसूं दूर-दूर ताणी घर फोड़ा करावै। मतो करै जकांरै घरां ही काजल घाल नाखै। सांढ्यां कढावै, भैंस्यां भजावै अर माया-गायांरा धोलै-दोफारै डाकामारै। मींढै-बकरै माथै ही मन करल्यै तो छोडै नहीं। चोखो पालचोड़ो कींरो कुत्तो ही चित चढ ज्यावै तो रातरै पल्लै आपरै घरां मंगाय लेवै। धाक पड़ै, नांवसूं आक बलै अर चाकदांई नामून चालै। मोटोड़ा भागी डरता धोती भरै। छोटिया वाणिया धूजै, निमसकार करै। गरीब मूं मांग्यो धन पावै, सांड अर साध माल-मलीदा चरै। जमीदारां पर जवान लाटै, ठाकरां पर ठरको चालै अर अमीरांरै घरां मोकलै दारू-मांसरी दावतां मिलै। जकै ही गांव मांकर वगै, लोग डरता स्याम हुयज्यावै। पड़ाव पड़ै जठै ही गिन्नयांरी जुवारयां जावै, जावतो हुवै। जाजमा विछै, अमल गळै। होका गुड़गुड़ावै, बोतलां गुड़ै। सेवा-पूजा हुवै, धूप-दीप खिवै। पिलाण उतारै, अलाणा ऊंठांरी पीठ जुळ-बलै। रुखाला मोरचै मंडै लुलै। लाडवांरी भाव अर भूजियांरी ओडी सूं सिरावण करै अर रातनै सो-सौ कोसांरो सरड़ातो मार जावै। कालै फांटेरा कनै गाभरु ऊंट, हाथांमें वारै वन्दूकां, रायफलां। मदवां माथै चढ्या मोकला जुवाना साथै मतस्या करै, वून्नै ही टिचाकार दयै। कुन्नै ही ढूक पड़ै। कुन्नै ही कूक पड़ै। सुणतां ही लोगांरा होठ सूक जावै अर मुड़तां ही माथो भूंवण लाग जावै। भाग्यांरो वैरी पड़्यो। धरतीरो धन सीरोळो गिणै।

करांला । लागै जितो खरचो ल्यो, चाहीजै जिका आदमी मांगो । कुवाड़ा-गंडासी राखो अर वैरीड़ैनै झटकै'र नीचो-आडो नाखो, जद जीमें जी आवै । बीं दिन ही घीरा जळास्यां, सुखभर सोस्यां, इतै-मावो-धीवो तीन तिलाक, अरजनियैरै मरै बिना अन्न-पाणी खावांता हिन्दूनै गाय अर मुसळमाननै सूर । मेरी साढे तीन हाथ काया सिरी-किरसणारपण है ।

चोखा काम सिद्ध होणैमें घणी ताळ लागै पण माड़ा काम तो तुरता-फुरत पूरा हुय ज्यावै । बापरी बात सुण'र वेटांरी मूंछाँ तणगी, होठ फर-फर करण लाग ग्या अर आंख्यां लाल हुयगी । जाणमूळियो आयग्यो । बोल्या न, चाल्या घरसूं बारै कढग्या । अरजनरै पगां लारै आखा भाई जुटग्या । जांवता कैग्यो—अबै अरजनियैनै मार'र ही घरां पाछा आवांला । जाटरी वेटी काकाजी नांव । वणग्यो धाड़ेती ! बाप तो म्हारै घरां पड़्यो टुकड़ा खावतो, वेटो भूलग्यो नातो । सराही खीचड़ी दांतां लागी । जाट ही आडा-आडा फिरा, नहीं तो अरजननै कोई जदे ही फरजन वणायर पधरा नांखतो । कीचो काढ देतो । अबै ही देखो, देवां दूधमें चूर'र धार अर ढोकळी । पत्थर सूं पत्थर भिड़्यां वासतै फाटै । सागी धणी सूं मिल्या ही ठा पई ! छठीरो दूध चेतै आय ज्यावै । साळचांनै छोड'र सासू सूं मसकरी करणैरा मजा चखा नाखस्यां । मोटै डकेतनै डडावांला जद ही घरां बड़ांला । चालो-चालो हुई, लाठी-ठींगा सभाया अर च्यारूं मेरा मारग रोक्या । धावड़िया लारै लगाया, दारूरी बोतलां सागै दीनी । देई-देवतांनै धोक मारी, सुगनां सूं टोरचा । मतवाळो वणा'र सुवाणनरी सारी बातां समझाई अर जीमणरै उछाव सूं उरिया बुलावणरो वादो तथा ढंग भुळायो ।

वदळो घेरणरो दाव आयग्यो । खेखीड़ा पड़ाव माथै जा ढूक्या । हाथ जोड़'र रामरमियां करचा अर खंखारचा-थूक्या । जाजमां बिछरैयी, अमल-तम्बाखू होरैया हा । भुगांनै हाळां ही आपरी मतवाळरी मनवार करी अर जीमणरो नूंतो दीनो । टोळी सूं टाळचो अर सागै तथा आगै

कर नीनी। गांवमें वहतांरै मांमै केई बेलोड़ा भळै मिल्या ! सोट मांभ लिया, हंस्या न को खिल्या। पैल पत्तियो लारै सूं ही हुयो। पड़ग पछै घागलां ही घाग घाल दियो। बच-बचा'र पकड़ लियो अर जरै-जरै सिट्टी सी कूटण लाग ग्या। दोनां कानलां वैरी मचग्या, लोही सूं साठा रच ग्या। न्हार घाडो नाख लियो। गावड़ी वणा दियो। बीजली सी कड़कै पड़ै, आंतड़ी वड़कै-टूटै है। दांतांमें तिणो लेवै, गोरी-काळी वणी है। पण भुगानैरा आदमी मरजनरा हाड सांकळ, फोथळियो नथा किन्नगो कर'र ही गांवनै मुड़ै है। गांवमें रै! रै! हुवै है, सो गावांगी सींग टरणांरी वात करै है।

जीव-निरजीवरी मुलाकात ! मौत-मैणांगी घात ! फरागांरी टोळीगा दवग अर घायल-बाढेत चेल्या, नमक्या तथा चटदेणी मोकै जा पूग्या। संसार सूं जांवतै साथी मरजनरी घपगरी खोड़ थाणैमें ल्या मेली। ल्यारा सांगी भाज्या अर मून्यांनै हाथ बांध'र हाजर कर्या। सगळा गुनी लोही सूं लाड़ेड़ा ल्हासरै आगै भेळा हुया। वैर अर बदलो मांगै नुवा। सिपायां मरदरी माड़ी हालत देखी जद आंख्यां सूं च्यार-च्यार मोसरा वन्हाया। मरजन मरतै-मरतै मरदगी करी, आली वातां थै: नाली गरी-गरी! थाणेदार सेना-सेनी सूं वियान लिया, चाढ्या। गाजीस्थान सूं हिन्दू काढ्या। डाकदर डाक्टरै साथ्यांनै दाग देणांरी हुगावनी सीनै। जद मासीड़ा मरजनरी मुई कायारै लांपो लगायो। धालमारी अर घणा दोरा रोया। चोधरयां थाणै रपोट कर दी, पंचा सुळतमांगो परवो करा दियो। हासो'र हुलवग कूटगी। सापरियैरी आरथळ छूटगी।

गुवाड़में नीचा ढाळया, पुन्नरी थाणेदार माथ'र ऊपर बैठगी। काल हाडांगी अमल बळरयो, मूछनै हाथ फेरण लाग ग्या। भुगानैरै दरबारमें पोशाक मीर हुया। पेटमें पाणी हुयग्यो। पगांरा लोग नोटा लियां गोनै सानी चढ़ी यगी अर डरता-डरता आपोई घारांनै सुक-सुक नकारै है। पाडा-वारा हुवग्या, आफतमें फूलग्या। सिपाईड़ा ज्यूं ही

रायफलांमें रीझ्या, भुगानैरा एकला भाई त्यूं ही सांसमें सागीड़ा मिच्या अर सीझ्या। हथकड़ी देखतां ही आकळ-बाकळ हुयग्या। बेड़ी बाजी जद खून्यानै दुग्या। गांवमें रांध्योड़ी हांडी रैयगी। भूखा ही पड़ग्या। रात्यूं सोरकैरा बादळ छाया, जाण्यो टाबर रुळग्या। पुराणो जमानो, पुराणा नर, पुलसमें झल्या जिका खोईज्या घर! बेली ढबी सैं आन्तरो देयग्या, कोई नैड़ो नहीं आवै। आडो आवै सो ही भीरी, भुगानो घरमें ब'ड़र नाई-सुनारांसूं सला-सूत करै है। पण सिघारी सिवारमें डोकांरा हथियार के कार लागै? घणो ही ठगावै, मोकलो ही खुवावै है अर रिपियो कांकरै दाई कर र'ख्यो है। पण कीरै कांसै कांकरो पड़ै! सैः माल उडावै, मौज करै है। जैपर, जोवपररा गड़का काटै, दूध-जलेबी खावै है। उकीलांनै सैंधा-मैंवा करै अर आपरा काम सारै है। भुगानो कीनै ही कैण जोगो नीं, सगलांरो दबैल हो रैयो है। चौधरी चाटै, पटवारी मांगै अर दफतररा चपरासी तकातक भुगानैनै आंख दिखालै है। लूंगाड़ा टापरो चाट ग्या, च्यारूं बेटा होलातमें दाटग्या। जमानत देवणियो ही कोई लाधै नहीं। धनरी धूड़ हुयगी, मायारा कोयला बणग्या। अलेवण अरजनरै पगां पूगी, लाली लेखै हुगी। हाली-बालदी हील लाग्या, बेटयां सासरै तड़ी देगी अर बहूवां पीरै जा बड़ी। ऊट-डग्गरा अहाणै अडूल हुया, गाय-खोला चोराणै चढ्या अर एवड़ बोपारयांनै बेचणो ही पड़्यो। मिनखां बिना धन-सांसरनै कुण संभालै पीसै बिना खूनरा मामला किया दबै? दुसट तथा दैःणोगै मिनखनै मार देणैरी सैः लोग सला देवै पण मारयां पछै कोई ही सैय अर सायता नीं करै। पैली वैः बिहालकी बातनै डाढी चोखी बतावै, जिका ही पछै वीं बातरी माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै। दुनियांरो इसो धारो है, इसी रीत है। जगतोरा झूठा जाल है, पापांरा लपचेड्ड पंपाल है।

भुगानैरी सगली सांडाई उतरगी। आखी अकड़ाई निकलगी। सीधो गजबरगो हुयग्यो अर मिनखनै मिनख सो जाणन लाग ग्यो। बीस पांवडा आंतरैसूं पैलपोत राम-राम करै। सीधै नांवै नीं, काका,

नगड़, कोई लड़ाकू ! कींरा ही बाण चालै, कींरा ही हुकम हालै ! कोई घूस दावै, कोई ल्हाज सूं ढावै ! थाणेदारनैं थावस, सिपायांनैं सावस, गिरदावळनैं घी, अर सुपरडेन्टनैं दूजती गाय पौंचावै है। कातयोड़ी काळी ऊन, पैंसी-पूरी कामळ अर पीळी कानीरा केई पटुड़ा पुळस अर अदालत हाळांनैं खील-खील'र उढावै है। खून्यांनैं मजो चखा देणो है। ऊमर कैद सूं घाटू नीं रैवै, जिसी अरज-गरज चालै। कैवै— भीख मांग लेस्यां, घर-टापरा बेच देस्यां अर पांती आया माथै मंडा लेस्यां। पण मिनख मारणियांनैं घरबार आंखे नीं देखण द्यां। जाखड़ड़ांनै केठा पड़सी कै—अरजनरै लारै कितो परवार हो? अरजन एक मोटै टोळै तथा पाळटीरो आगीवाळ सिरदार हो। अरजन नहीं मरचो है, डाकूवांरै दळरो माण मारचो है। कटकांरी जातरै कळंक चडचो है। दीनांरो आधार, लूंठांरो संहार, दानी अर ऐड़ो दिलेर सैर जाटांमें दूजो जलमै नहीं। इसै सगत माणसनैं धोखैरै जाळमें लेय'र मारतां दया नीं आई, पथर हिड़दांमें हया नहीं वापरी। एक धाक अर धक पळी, एक मिनखरी राख करी। वैरीड़ा छळ-कपट सूं ठगैं, काळज्यां होळी जगै है। अरजनरा साथी उजड़णनैं त्यार, घर हाळा झगड़णनैं हुस्यार। दोनूं धणी-ढोलक अर मजीरां दांई मिलग्या। रग लागग्यो, भुगानैंरो अभाग आयो।

भुगानैंरी बेटी सुखळी, पूरी पनरैं बरसांरी जुवान, व्याहरैं जोग! पण कठै परणावै। कागनैं देवैं क मोरनैं? छोरो तो कोई लावै नहीं। ईं घरमूं साखरो हंकारो कुण भरै? कतल करणियां सूं कुण नीं कतरावै? मिनख मारणियां सूं लोग वात करणी ही माड़ो काम समझैं। घररो पाणी पीणो ही हराम गिणैं। बेटी जामी जद बाप-मां रै मनामें मोकळो कोड हुयो हो। भायांरै ऊची अमेद अर हरखरा भाव जाग्या हा! वै: सै: मन चींती वातां लाय लाग्योड़ै घररी चीजा दांई बुझगी। आज ऊपर कर फिर रैयी है। मैणांरा मजा आरैया है। कैणांरी काण अर लैणांरा हाण भुगतीज रैया है। जदे-कदे ही लांबी-

गोबर थापसी, म्हे के खूनी थोड़ा ही हा। फूस-भारी करहण हाली ही हालण रसोई दारण आगे घणी ही है। थांरी बेटीरा तो भाग ही जाग ग्या। बैठी राजस करसी। दो पीसा घी सूं दूध-बाजरी जीमसी। दूधमें रांधसी घीमें खासी, करसी ज्यूं हुसी जाणो उधड़गी रासी। दूधां न्हासी, पूतरां फलसी, विपता वढी, सुखड़ै रलसी। थांरी काली जीभनै थोड़ी चांको, मूंढसूं सगा थोड़ो थूक नाखो। भलै इसो नांवो कदै ही मूंढे सूं मती काढचा। म्हांनै कीं ही ना देया। बींनरै बाप कैयो।

मांया तेरा तीन नांव, फरसियो, फरसो अर फरसराम। तिलडूबै पत्थर तिरै आपणी-आपणी बार। भुगानैरा कान खूस'र हाथमें आग्र ग्या। बोल्यो—दिन करै सो बैरी नीं करै। मिनखरो के माजनो है? अ: बोल राम कुवावै, सगो नाक-चणा नहीं चवावै है। नहीं तो बेटी परणावै जिको भागी न गरीब, इसी बात तो सैः ही कैया करै है। म्है के एकलै ही मोरड़ीरै भाठो मारचो है? पण म्हारो आज दिन पलटचोड़ो है। सोनैनै हाथ घाल्यां लो हुवै। मोरड़ी हार गिटै, म्हारी साता खोटी है जद सोनैरी आस क्यूं राखूं? बैः आज धनवान है, पीसैरा धणी है अर वांरै च्यारां पासै अड़धू चालै है। म्हैं लेणैं सूं कलीज्योड़ो एक टोटैरो टूर, घाटायत अर भूखो फकीर हूं। देणदार हूं, भोमीरो भार हूं। कदेही म्है भी आं: दाई भागवानीमें टोरा अर टिल्ला लगावतो। सांमलै परसंगीनै टैटवै करलेतो अर टको ब्याज कढावतो। पण मैणैं पर मरचो। अम्मींणी सूं डरचो। जैर पीयो अर वैर लियो। इसी माया के कामरी जो खरचै न खावै, ना बात मावै लगावै। अर इसी माया ही के काररी जके प्रीत गिणै न नीत, आपो गिणै न मुलायदो, कोरो परसंगीरो जी दुखावै। का बातनै अर का सुवादनै। मायारो रंग ताना-तैयामें नहीं, नाम अर काममें होणो चाही जै। अरजनियैरा साथी सैः अर म्हारो एकलो राम। नाकमें सांस आय ग्यो। पण जाम्येड़ानै जेल नीं जाण दयूं, कैद कदै ही नहीं होण दयूं। टापरो होम देस्यूं, जिंदड़ी लो देसूं पण एकर तो जीतांणैरा ढोल

घुरा'र ही छोड सूं !

सेड़ैरी लूंकड़ी बाघनैं डरावै, पण ठठांरांरी बिल्ली लड़कै सूं कद डरै—अरजनरै बेलीड़ां, घणी भाजा-दौड़ी करी, पण मामलैरी जीत तो भुगानैरी सांचोटमें ही रैयी। लगन अर धुन, वात अर पकड़ पक्की हुणी चाहीजै। मरदरै वाप अर बोल एक ही हुया करै, दो कदै ही नहीं। फोड़ा पड़्या, दुख देख्या पण ढाळै हाळो पीसो लेयरैयो। नांवो कमा लियो। आंतमें डरै जिको मिनख क्यांरो ? आज आणद वधावणा हो रैया है। जम्मां-जागण लाग रैया है। कैंदी बेटा बरी हो परा'र घरां आया है। भुगानैरा बेटा छूट्या तो सरी पण तेलैरै पार हुयग्यो। भूखा कलीर बणग्या। मीतरै परलै पासै जीत हुई है। गुवाड़ो मूंधो मारीज ग्यो है। मानखैरो सागीड़ो बिगाड़ो हुयग्यो है। सायरांरी कैयी कुड़ी थोड़ी है—रोग अगन अर राड़, जाण अलप कीजै जतन।
वधियां पछै बिगाड़, रोक्या रहै न राजिया।

लैणो

सोनजी सुनार, गांवरो सुनार ! बींमैरो बेटो, आज कळैरो आसामी। गोतरो कड़ोल, तोतमें सतोल। कुवदांरी कोथळी, रंडवो अर डठोल। गांवरै बीचाळै घर, नांवरै बीचाळै नांव। बामण-बाणियांमें वसै, सागवानां सूं भिड़्वै। कैणा-मैणा कैवै, वैर-खैर सूं रैवै। आरै हटड़ीमें लोगांनैं होका पावै तथा मिनखांरी हथाई वैठाणै है। कूड़ी काळै करै, मंडो अर नुवै जंचावै। सोनो-चांदी कूटै, जणै-जणै सूं कूटै है। तीन लुगाई गंगाजी धान दी पण चौथी हेगी मोजूं

तो सैंरी सुनार घरां आय'र नोंरा करै है। दो भाई अर एक मां, एक एकं सूं आगै काढै। ऊजळा खरच लगावै, भागवानीमें टोरा मारै है। अमल खावै, चूंटियो चूरमो चाटै। ऊपर सूं हेजी-मोगर अर प्याज गापड़ांरा साग ल्हसणरै लाल झोळमें फलकांरी मोळ मेटण जीमै है। आथण चावळ-मूंगांरी खीचड़ी आध-पाव घी सूं मथ-मथ'र गटकावै अर वड़ी-कढीरा रायतांसूं रंजै है। दूध-चाय पीवै, खाटो-सिपारी खावै, आयो-गयो हुवै तो दारू-मांस ही वापरा नाखै। बकरिया रोसावै, कूकड़ा कटावै अर दारूड़ी-मारूड़ी तो उडती ही रैवै है।

नायकासूं नेह, मुसळमानांसूं मेळ, मींट भावनांरी सार नीं जाणै अर पाणी-पीसणो करावै है। नूंवाँ-पुराणा गाभा अर उवर-सावर अडोई देवै-घालै है। हसै-बोलै अर हाथा-पाई करै है। अड़यां-भड़यां अर ओलै-छानै, सूग अर स्याणप ही नीं राखै। विधवा हुवो भांऊ सुवागण, चमारी हुवो चावै चूंडी, पापांरा करम ही कर नाखै। एक भाई घुनो, दूजो मुटबोलो अर मूंफट। भीणा-झुग्गा, चूनड़ीरी पाग, पल्लांळी धोती, मुखमली जूती, जड़ावरा लूंग, सोनैरा जाळिया। गटमटिया जुवान, आखांमें आळीला, लिलाड़ माथै तेज अर ताबियैरी तीन तिरसूळ घालै मस्तीमें डूब्योड़ा रैवै है। हाथांरी दसूं आंगळी सोनै सूं पीळी। छाती मकोड़ियाळ डोरै अर सूत सूं सीळी। जकं दिन ही कींरो सोनो उडावै, राग-रंगमें जापरा'र गमावै है। कदै-कदै भोळा किसाणां दांई धरम अर कीरत कानी ही भाजै है। देवता धोकै, मिंदर मानै। खाड-खोपरा चाढै, जागण-जम्मां दिरावै है। पेठा-पतासांरी पूजणी, चावळ-लापसीरा परसाद। धूप-दीप अर अगरवतीरी सोरम तथा गायं घीरी जोत। कळदार कळस अर चांदी-सोनैरा छतर चढावै है। मोकळ मूंवां, मूंआया बोलै अर अवढा चालै है। मिनखनै जूं जितो ही गिणै नीं। मोकळो चोरो अर सागीड़ो माण, काममें काठा अर वातांमें ढाण। सारो दिन घड़ै, गप्पां नाखै अर सागै-सागै आयां-गयांरी रोळ-रिगटोळी तथा खि-खि ही करतां नीं संकै। गाला ठोकै, गुमानमें मरै, ओखा

अलगरजी अर अलोलपणां करै ।

झालर वाजण लाग रैयी ही । सांवलगढ़में आयगियै दीयांरी जोत—कतार झल्-मल् झांकै ही। कसबैरै कालां-कूणांमें ऊजलां उजास भरणै तांई भाजी वगै ही। सांवलगढ़रै अड्डै च्यानणांमें सेठ-साहूकारांरी माल-मतारो सत्ता सरूप सांगो-पांग ठा पड़रैयो हो । हाट वजाररी अर सुनारांरै हटड़ैरी सोभा देख'र वगतांरी आंख्यां खुली री खुली रैवै ही । सोनजीरै हटड़ैमें मोटी-नूंई चिमनी जम रैयी ही । रातरी हवाई ठाकरांरै जमानैरी जुगती वण रैयी ही । चम्मड़पोस होका, जसदैरी कलचां अर पीतलरी गुड़-गड़चांरा गुटका सा आवै हा । सुलफड़यां अर चिलमड़या तो लाल हो रैयी ही । अमलरा ठेकरिया अर तम्बाखूरै पानांरा गट्टा-खलीता छल्या पड़्याहा । आंगणैमें सींयोड़ी वोरयांरो तिरपाल् बिछयोड़ो हो, छात माथै लांबी लट्ठै री धोती ताण्योड़ी ही । बीचालै-आगै तगारीरी सिगड़ी जंचायोड़ीमें सोनै-चांदीरी भरयोड़ी कुठाली गलै ही । चींपियै सूं पकड़-पकड़ थेपड़ीरा टूकड़ा घालै अर नाल् सूं नकसी लेतां थका सोनजी वासतेमें फूंक मारै हा । खूटयां माथै पैरणरा गाभा वालमें डोला, तेजावमें घड़्या-घाट खोळा हा । आलांमें राछ अर मोखी-झरोखामें भांत-भांतरा न्हाना मोटा सचा मेल्या पड़्या है । एकै कानी वडो काच, दूजै कानी रामलिछमणरी रूड़ी तसवीर अर तीजै-चौथै पाखांमें माताजी-भैरूजी आपरी सीसीमें खप्पर खोलै वैठ्या है । सरग-नरगरा चितराम अर पाप-पुन्यरा फोटू चोखा फब रैया है । हटड़ैरी भींतां हसै ही, फरस पर पड़ी लकड़ी थेपड़ी फंसै ही । आथूणै कड़खै ऊंचो चोकियो, जकै पर चकमैरो भरयोड़ो गोल् गिदियो अर भींत कानी कंवलो वालसियो, सारैवेगी लाग रैयो हो । जियै माथै सोनजी वैठ्या सोनैरो टांको झालै है । कदै ही कदै ही चमड़ैरी चमकती नड़ो मूंढैमें लेपरा, ठंडी-मीठी घूंट खींचै हा । मासाला घाल्योड़ी तम्बाकूरी लपटां आवै ही, जकां सागै सोनजी सायीड़ा सूं गप्पांरा टोल् गुड़कावै हा । रंग लाग रैयो हो, जंग-जम लियो हो । आज

सोनजी किलाळां आ रैया है। ओलाली वात चौड़में ही बूझै है। प्यारां-मितराली सला गांव-गैरमें ल्यावै है। अकल चरखै चढ़ रैयी है। समझमें गिडक मूत गया है। नसँमें टिल्ला लगावै है। माखमें वातां वणावै है कंवै है—भाईड़ो अवकै तो दोलड़ी लुगाई ल्यावां तो चोखी वात हुवै। आठ बीसी रिपियांरी जुगाल कर दयो तो एकनै खेतांमें राखां अर दूजीनै घरां ! लुगाई बा'रो जमारो खारो आक सो लागै। एक घड़ी ही ही बिना लुगाई आवड़ै नहीं। एकर तो लुगाई देखै बिना भूख ही पूरी लागै नहीं। धान भावै न नींद आवै। गांव-गावतरै जावांतो ही घर सांमो पड़चो दीसै। पण घरां लुगाईरो हानो ही नीं हुवै जद तो धिरग जमारो है। नारी बा'रै नररी के दर ? कुण पीसै, कुण पोवै ? कुण दावै, कुण रोवै ? रांडियो वजै अर दूजांरी पारकी देख-देख कालजो खजै। आठ पो'र चौसठ घड़ी एक तो लुगाई कनै ही चाहीजै। फूठरो नुवावै। सगला गाभा धोवै अर सोरी मुठ्ठी देय'र सुवाणै। आखी रात छाती माथै हाथ फेरै अर मनरली वात वणावै। पैरी-ओढी तीखो चुरघटियो काढे आगणै फिरवो करै जद हिवड़ो ठंडो टीप सो हुय ज्यावै। रूंकाटा खड़ा ठगै, सुखरा सीला सास वगै। आथण सुख-दुखरी दिनंगै सेवा, दिनभर हंसी-ठठा, मनरा मेवा। मत्तरी जाणै, हितरी कंवै, गालचां-तकात सुणै अर सिरमें दी ही सैवै। पण पारकी जके तो पीड़नै ही परदेस समान गिणै। भाड़ैरा टट्टू के न्हाल करै। टापरो खावै अर कुनांव करावै। बै: कद घर हालीरी गरज पालै ? घणी-झखमारी, डाढा ही छिलोरपणा करचा, घणो ही धन उधालचो अर दूजांरा घर भरचा। पण हिरणां लारी भाजया। खुसी-खुसीमें ही लुंटा दी लाल, मजा-मजामें ही घुटा दियो माल ! अबै आंख ऊघड़ी है। जद माथैरै हाथ देय'र रोवां हां।

धोला कड़प सूं काला कराया अर ओपता रेसमी कपड़ा सिड़ाया। वीच हालां दलालांनै खावकी दी अर सैरमें सागीड़ा सैल सपाटा तथा चग्घा कराया। मूमल गूंजी, गाणा उडचा। चरकै पर

ढुल्या अर दारूड़ीरा पीपा खुल्या। अन्तररै फोवांरी लपट, सेंटरै छिड़कांरी सोरम, लूंग-एळचीरा मोछण, बंध्या पानांरा बीड़ा, सिगरेटांरा छत्योड़ा डिब्बा, काजू-किसमिस्यांरा गेड़, गांजेरा गोट अर थेड़ लाग रैया है। गोटा छाणीजै, दूधिया घुटै, दाळ पचाईरो सीरो जीमणनै जुटै है। कड़ाकदरो कलेवो, मळाईरो दफारो अर खीर-फलकांरा भोजन, तेतीस तेवड़ सूं पांतियां घलै है। सोनजी जुंवाईरै रूपमें मांचै बैठ्या है। गादी-दूहा सीखै, आडी-उयळा लिखै है। बन्दूकां झालै, निसाणा चालै है। मन बैलाव कर रैया है। च्यार आदमी बेली ढबी, अर दो नाई-ठाकर सागै भळै आयोड़ा है। चानणी ताण्योड़ीमें बिछायत बिछ रैयी है। दमामण्यां मैफलमें दौड़ी वैः, बाजा बजावणियां नावड़्यां नाको ल्यै। लाडू-पेड़ारी सभाळ, रिपियां-खोपरारी मनुवार। साळचांनै बींटी-छल्ला अर साळैल्यानै सूत सांकली! ढाडी-ढोल्यांनै साफा अर पाग, नायां-मायांनै दस-दसरा बन्ध्या नोट, सोनजी दिरा रैया है। च्यार दिन सासरै रैवै है जकां वातां-वातांमें ही जावै है। सैः ट्याः हाला नेगचार हुवै है, कदोई भट्टी माथै पसेवसूं चुवै है। कदू वो सो एकाकार, नूंता अर जीमणवार। गंठ जोड़ो जोड़ै है, देई-देवतां फिरावै है। कांकर डोरड़ा बांधै है, जूवो खेलावै है। जुंवाईनै जान दांई च्यार दिन राखै, रातीजगा अर 'रा'रा रग लगावै है। मैंदी-मोली टीको-रोली, गणेस-पूजा अर गीत-गाल, सगला सुगन मनाईजै है। हाथी दांतरो चूड़ो, फूलाली वरी, गैणा अर गाभासूं परात भर परी आई है। ओळ्यायरा गीरै, रिपिया-नारेलां सूं सीख लागै है।

सोनजीरी बूढी मां-बहूरै कोडमें डागल चढै अर ऊतरै है। सैर हाल्दे दरै मारग कानी जोवतां-जोवतां आंख्यां दूखण लागगी, पग थक ग्या अर सांस हांफरड़ै सरु हुयग्यो। मीठै चावलांरी मोटी हांडी हारैमें चाढ राखी है। फलकां वेगी मोकलो आटो परातमें ओसण राख्यो है। आंगे फाटै पटीकै, कलस अर कोरा टीकै है। पण बेटो तो बहूनै लेय'र बेगो सो घरमें नहीं आवै। मारगमें ही मिजमानी अर गोठ लेवै-देवै है

रिपिया वांटै, हरख फाटै है।

कदै ही इसो जमानो हो जको लुगाई नातै ल्यांवता जद घर हाळा तो पैलीपोत मूंढो ही नीं देखता। थावररी रातनै चोर दाई घरां लेय'र वड़ता अर घर हाळा मिनख घर छोड'र बारै निकळ जांता। ऊंधी चाकी फिरांवता, लारली गळी ल्यांवता अर ब्याह-सावांमें अळगी राखता। कोड-कुसळरै कामांमें हाथ लगावणो ही माड़ो मानता। मो'राळी सांढरै सागै, नाताळी रांडरो सवद जोड़ता थका भरोसो अर विसवास नीं करता। वैः अदकरै ही राखता। पण आजकळ वैः वातां कठै ? अवै तो नातैनै पुनर व्याह कैवै है। गुड़ वांटै है अर ढोल घुरावै है।

भाग्यांरी सी भऊ घरां आय'र पगां लागी जद्र सासूरी आंख्यांमें च्यानणो हुयग्यो। गूघरिया सा बंध ग्या। कोडमें बावळी हुयगी। मन मांयली काढसी, कड़ाई चाढसी। मदवै वेटैनै मतवाळ करणैरी खुल्ली कर दीनी है। खेल-तमासा सरु कराया, सैकड़ांरी सराव बाळी। वडाररै नातै गांव नूं'त्यो, सोनजी रात सुखरी नींद सूत्यो। लाफसी'र घीरो धूंवो नूं'तो कर दियो है। हांती अर हरखरो मजो ले लियो है। दमेदां, बाटियांरै चढावांरी अर माता-मावड़्यांरै गीतांरी बम्म बोलायदी। नाईनै नेग, बामणनै दिखणा अर आखा कारू-कमीणांनै चोखी तरियां चुकाया है। खाती, जोतकी, कुम्हार अर मोची कोई ही लारै नीं छोडचो। कींरा ही कान पीळा करया, कीनै ही कामळ उढाई, कीनै ही टोडियो दियो, कीनै ही पाग बंधाई। गांव भरमें नांव कमा नाख्यो। जसरी जुगती जागी, दूजी बीनणी भळै घरां वैठै ही आयगी।

सोनजीरै हटड़ैमें कंई दिनांसूं धमचक वाजै ही। सेर-सेर पक्को सोनो सागै ही एक-एक साहूकार सूंपै हो। गैणो घड़ावै हा मन मिलावै हा। हटड़ा (सुनारी दुकान) तो गांवमें दोय-च्यार सुनार भळै ही मांडै वैठ्या हा, पण सोनजीरो दिन अवार सवळो चालै हो। काठै सूं काठै मिनख सूं दो मिल्लर करी अर गैणो आयो। मूं जी सूं

मूं जीरो काम ले लेणो, सोनजीरैं नख सूं मैल काढणो हो। पांच वरस
वरोवर सोनो-चांदी आयो। बजार वठीनैं चढतो गयो। कोई आठ-दस
हजार हाथ लाग्या। वस, मनरी विरती खरचैं खानी लुळी। वटाऊवांर
आदर-सतकार होणो सरु हुयो। चौकी माथै हथाई वैसण लागी
तैसीलदार गांवमें आवैं, तो सोनजीरैं घरां ऊतरैं। पुलसरो थांणदार
जकातरो गिरदावल, मदरसांळो डिपटी तथा कोई मोटो अफस
सोनजीरी तिवारीमें एक न एक पड़यो ही लाधतो। सोनजी आपरैं घर
आयोड़ा हाकमांरैं हरखमें मांवतो नहीं। दिन है। इसा-इसा मोट
अैलकार सोनजीरैं घरां उतरैं है। जकां अफसरांरैं सामैं वींरो मूंढो नं
खुलतो, वां: अफसरांरो ही आज सोनजी ! सोनजी ! करतां कल्ल
सूकै है। कदै-कदै सत-संगत ही जुड़ जावै है। एक नाथ सोनजीर
दातारी सूं रीझ'र गांवमें आसण ही लगा वैठ्यो। वस ! सुलफै अ
भांगरी रंगत छिड़गी है। एक इकतारो आयो, ढोलक अर मजीरा मंगवाया
भजन-भाव होणैं लाग्या, भगतांरा भाग जाग्या। अो:सो प्रेमभाव सोनजी
दिवाळैरो त्यूंहार हो। घरमें रसोवड़ो पकतो पण सोनजीनैं त
उवर-सावर ही भोजन मिलतो। कीं राज हाला खा जांवता तो क
फक्कड़-फकीर मांग ले जांवता। सोनजीनैं तातैं सूं के मुतलब ? वीं
तो ठडो-ठेरो ही हाथ आणो चाहीजै। मनवार ऊंची चढती गई
सगळां मागै हाथ जोड़ै रैणो अर कींरो ही मैणो-मोसो नहीं सुणनो
कोई आ: न कै: वैठै ? के धन कमा'र घमडी हुयग्यो। गांवमें खाल
एक ही पींपळ हो, पसुवांरैं वैठणरो उन्नाळै पूरो फोड़ो पड़तो
सोनजी दो पीपळ भळै लगा दिया अर वियांगा गट्टा ही पक्का चिण
दिया। पींपळ-खेजड़ीरो व्याह मांड्यो अर जागण-जीमणरो परवन
करयो। अै: सै: वातां पूरी हुई जकै दिन सोनजीनैं मानो मूं मांग
फल मिलग्यो। जका काम गांवमें कोई ही लखपतीरो बच्चो नीं क
सक्यो, वैं: आखा सोनजी आपरी अकलसूं पार घाल्या।

अजोच्यो कुवा ही निवड़ ज्यावै। खायां खजानो ही खूट ज्या

खरच वधग्यो, सांड तुड़जग्यो अर सिर सूजग्यो। पारका घर ढो:या, निजरो उजाड़्यो। घड़नो दियो हो जकांरो पाछो घेरचो नहीं, मढणो लियो जकांरो ओठो मोड़्यो नहीं। ईं हाथ लियो, वीं हाथ डकारचो। संभळावणरी सार नहीं जाणी। काम छोडै, कुलछ पकड़ै। चोखो खावै अर माथै मंडावै जद ऊपरलो पानो कियां आवै? भूखसूं भिळ ग्या। राछा-पूंजी वेच-वेच'र खाणी पळा'ली। मूंघो ल्यावै अर सूंघो वेचैं है ब्याज अर खरचरी लीक नीं खैंचैं। हुया सौ, भाज्या भो! हुया हजार खुल्या बजार! वाली कैवत सांची हुई। दुकानांरा सैकडूं माथै करचा, वोरांरा हजारूं घर खरचमें ऊघरचा। एक आवै अर दो जावै, ताकादे पर तकादा होरैया है। तीण वंध रैयी है। खोवा-खांड कढणा अर सीरा-सात्रू उडणा माठा ही नहीं जावक काठा पड़ग्या है। मिल्या जितै लीना अर गटका करया, पण अबै भटका आवै है। सोनजी सीधा लग वरगा हो रैया है। वावन पीनण वाजणा वंद हुयग्या है।

कुंवारेरी कमाई, चोर अर घूंस खोररी माया तथा वदळीरी छाया कितीक दूर चालै? हटड़ो जड़ दियो, खेत खड़लियो। ऊट लीनो, हाळा राख्यो, ल्हास करी अर खेत वुहायो। कूंड अर झूंपड़ी माडी, रांड-रूड़ीनैं लुक-छिप'र मांगी। मोटा-मोटा मैं'ल दिखाळ्या अर भोळांनैं भलूं चकमो दीनो। ठगी माथै कमर वांधी, सोखीनाईनें घोखा-घड़ीसूं सांधी। सैंसी अर मैंतर तांई मांगे विना नहीं छोडया। अघेरै-च्यानणै गांवरा सारा दवारा जा देख्या। लोगांनैं पूरी ल्याज मारी। कैण ही पन्दरै, कैण ही पचास, कैण ही सौ अर कैण ही हजार, भाग साल सगळां दीना। केई सेरनै दो सेर ही नावड़्या अर गैणां-गाभा अड्डाण ले'र पछै दीना। ढळती रात अर वेटीरैं पीसै दांई सोनजीरै धन पग कर लीना। कीरैं ही सांढ अर कीरैं ही घर, कीनैं ही खेत अर कीनैं ही हर, दियै राखी। एक-एक चीज दो-दो जगां मडाय दीनी। मांही गां केई विकणी ही लागगो। चढीरा पिलांण, दुन्नाळी वन्दूकां, कुंड अर कड़ावां, सतोली संदूकां, लोग ऐकेक ले लग्या। घरमें दाघो दोखण ही

नीं रैयो। राछ रैयो ना पाती, बींटी बची न छल्लो, गल्लो-तिजूरी सैः गया। आखै गांवमें परवाड़ा चोड़ै आयग्या। अबै अळगलै गांवासूं कूड़-कपट कर'र ल्यावै अर काम चिकावै है।

जिनावरामें सोवो स्याळियो, पखेरूवांमें कागो काळियो अर मिनखांमें नाई नागो तथा जाळियो बाजै है। जियां ही सँग जातयांमें सुनार लछणहीण अर बेविसवासी गिण्यो जावै है। आपां लोग कीनै ही घणो स्याणो केवणो चावां जद कैया करां हां—वो फलाणो आदमी तो सौ सुनारांरो एक सुनार है। सोचां हां के सुनार सांचेलो स्याणो हुवै? का बींरी चतराई, करड़ांवण अर चोरीरी बातां ही बींनै ओः फतवो देयराख्यो है। सुनाररै क्यूं दरसणांमें ही टोटो बताईजै है? सूरज उगाळी सुनार सांम्हो मिलै, लोग मूं डो फोरै, सामैं सिर सळ घालै वै मरै कारण सुभ जातरारै वखत सुनारनै अवस टाळै। वोः आपरी मां री ही हांचळ नीं छोडै। बैन हो, भलांही भाई, मित्तर हो चावै लुगाई, पण सुनार आपरी चलाकी-मुतळब सूं कदै नीं चूकै, इसी कवत चालै है।

सागो देख'र मिंदर-देवरै निकळ पड़ो, पैदा देख'र चावै तीरथ-बरतरी पंगतमें जा अड़ो, पण आतमा सूं ओः काम कदै ही नीं करै। सैल-सपाटांळी घरै। भूल-चूक'र जे इसा कामांमें आपड़ै तो दूजरै चांद दाई बीनै देख'र अगड़ा डरै. हाय जोड़ै। कारण बीरै चचळ चै'रै माथै पोढ्यांसूं त्रियंरै वडेरां च्यार सौ बीसरी गेंगी छाप चिपा राखी है। जको नफे-नुकसाण भजै अर मादगी कदै ही फुरै नहीं। ऐड़ो आंधो विसवास हिन्दू धरममें घर मांड्या बैठ्यो है। मिनखांरै मनां अर माथां आ:वां'री बात गोबर-माटी दाई जम रैयी है। संसारमें बाणियां ही पैसावर विणाइणियां बडा माड़ा माणस है। बोरा वाणियां तो खोटा कलम-कसाई हुवै है। पण बांरा बटेरा सागीड़ा स्याणा हा। संपतसूं रैया अर चोड़ै नीं आया। आपरै धननै लकोर खायो अर मेवैरा रूंख बाज्या। औरांरी चोरी करी, करयो मूंडेरो दात हाटी कैवत नीं

छोडी। लाखां गरीबांरो अणछाण्यो लोही पियो, पण वींरै लारै थोड़ी घणी दान-दिखणा देयरी'र चटोकड़ां, मालजादां, मोफतियां साधू-सेवड़ां अर पाखंडी पुजारियां पिंडतां सूं कूड़ी साहूकारीरो अमर सेवरो पगेलागपरां'र सिर माथै बंधा लियो। सगळांसूं नकरकट हुंता थकां ही धरम-ध्यानमें आगीवाळ वणग्या। मूंछ नीची करली अर आपरै कीतैमें ऊंडा वीर, ऊपरी डरोक तथा जावक कायर वण वैठा। पण सुनार राजपूती जात, आपरो आपो'र अैंकार नीं नाख्यो। चोखो कमायो अर खायो, कींरो ही डर-भौ नीं राख्यो। दोजकी'र दरोगी वण्यां, दुनियांरै ईरखै अैरवया'र तण्यां। लाट हां, वामण-वाणियां सूं के घाट हां ? पण सोनजी औरां सुनारां दांई नहीं। सफा सूधो माणस। दिलरो दरियाव अर खरचरो पूरो लगावू। बाकी मरतो क्या नीं करतो ? अभावमें सभाव विगाड़ लियो। जोश्यां-जत्यां ज्यूं निरमोही, कींरोही गुण-गाळ नीं, पण जगती तो इसी स्याणप अर उदारतारो उळटो सणमाण आखै। काम अर गुण सूं नीं, जात सूं आंकै।

सोनजीरो कडूंबो गांवमें आंखे आयो हुयग्यो। मरतक भंडग्यो। दाणैं-दाणैंरा मोताज हुय रैया है। बूढी मां मौतनै अरदास करै। मौत टाळो दयै, परियां ही घेरा घालै। फोड़ा पड़ै, डोकरी दुख ही भुगतै। सुड़'र गळै, सोनजी हीड़ै वळै। कठै ही दो पीसा कमावै ? मां नै ख्वाळै ? घरमें के नहीं चाहीजै ? वेमारीमें तो भलै दूध को खरच लागै। भाग आयग्यो, रोट्यांरा ही लाला पड़ग्या। दूध-दहीरा पांवणा छाछड़ल्यां अणखांवणा हुयग्या। के कमावै अर के ल्यावै ? मां नै खुवावैक, आप खावै ? दो-दो वखत सूना ही जावै। गोरवै घर मांड्यो जको ही नीं रैयो। वेच'र एक वरस टिपायो पण पाछी ढकवाल आयगी भूख मूंडी हुवै, पेटमें आला ज़मग्या। छेकड़ नारली हाथ मांगणो पड़्यो। रामजी घणा देवाल् है। वाजरी-मिसी भांवती नहीं जकांनै मगररा ही सांसा पड़ग्या।

●●

बूढवावल

गालां माथै मोकला सल, जवाड़ा बैठ्योड़ा। सूको अर ढाली चैं'रो मातारा वण चैंठ्योड़ा। दूजैरा चढायोड़ा माठैरा दांत जका होठांनै ऊंचा करै, लाल माटीमें जम रैया है।। बीं बूढैरै थोथै फूल्योड़ै ढग थोवड़ै थोथरमें उघाड़ी पड़ी निमलाईरी नाडी सो सामै दीसै ही। ई जीवणमें सुख जाणरा'ही तो पूठी छैलाई थारी है। पण कीणां अर ऊजला गाभांरै ओलै बूढापो कद मावै? तेल-सांत्रण लगावै, वग-सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तो ही बूढापो-वैरी लुक्यो नीं चावै! जद ई सोखीनाईमें ही मजो नीं आवै, गजो ऊपरली गलो जावै है। उन्नालै रा तावड़ांमें भादवैरा जूना लोर न्हालै है। फूटरी लुगाईरी सोवी हरदगत आंख्यां आगै फिरै है। व्याह विना हियो फूटै, लुगाईनै देतो चूंटै है।

च्यानणी छिटक्योड़ी, किरत्यां लटक्योड़ी। मघरी पूनमें मीठी परमल आगै-पागै वगै ही। किसारयां करर-करर करै, चरचरयां चूं चावै, जकांमें गादड़ांरी भूंडी हुती—हूं हुवै अर डरावै। माग सीयालै री रात लक-सक सूं साढा मारै है। हिरण्यां डागलै री छत मायै लात मारयां वगी जावै, लारली वातां कालजो वालणनै लारै लागी आवै है। आगली ऊंडी अठीक अवावणी अर खारी अमलसी खाली मगज खावै है। पसवाड़ा उन्नै-बुन्नै फोरै, रांघड़ रातनै घणी दोरी टोरै है। पेमजी जाणै सीयालो है, जको 'सी' क्यां सूं दटै? ओ: कोडियां कद जावै अर कटै? गोरांमें घन-पसु, आलांमें चिड़ी-कमेड़ी अर घरमें

आखा भाई-भतीजा सुखभर संजोड़ै सोवै है। पेमजीरी आंख ही नीं लागै रात्यू रोवै है। वासते ज्यू जगै, ऊबलै अर खोळै, चोसरा वगै, चामड़ी छोलै है। कुभावना कोरड़ा मारै, भाठा वगावै है।

पेमजी मोटै कड़ वेरो धणो होतां थकां ही आपनै सफा एकलो गिणै। साची वात है—मतै मरज्यो टाबररी माय, ना मरज्यो बूढेरी नार। पेमजीरी मेढ़ीरो दीयो बुझग्यो। लेवड़ा झड़ग्या, देवल जमगी अर सूनो ढमढेर वणग्यो।

मोराकोनरो लैंघो, गुलावी चीर अर कसूमल चोलीरो सोणो पैरान! हाथांरै राच्योड़ी मैंदी, हींगलूरी टीकी, गज-गज लांबा, वांसवाली सू सरगल बाल। झालररै डकै ही पायलरी झीणी झणकार वाजती। दिनरै सागै ही ढोलियो ढलतो, विछाईजतो। पाटो ढाल'र जीमावती, ऊपर लूगांरी पखीसू वाय ढोलती। पैरी-ओढी दूधरो कटोरो ल्या पांवती अर स्याणी-समझदार पोथी-पानड़ो बाचती। खूंवा-खच चूड़ाल हलकां हाथां सू परूसती अर गीता-भागवतरा पाठ करती थकी आखै वासरी लुगायांनै ग्यान देती-रेती। धपार दढ़ कर देती, लोकाचार सू लड़कर नाखती। वाई अर भूवारै साखसू गांवमें गुणीजती। पटवाररै कांमनै सीख-सला देती-परोटती। अड़चै-भड़चै कागजांरै काममें ही धाको-धिको देती। लोग केता—फूसीवाई भणी-गुणी है। गिरदावलरो काम ही जाणै है। पेमजी तो ओजू पटवारमें ही भूलै, जको ही फूसी वाईरै ताण। पण! फूसी वाई तो कामदार सू ही करड़ा कोरा जाब कर नाखै। खाता-पतर खोल समझा राखै। खेतां अर पसुवांरा झगड़ा-झंटा निवेड़ती, गांव मोवतरा न्याव-तपास निमटांवती तथा आपरै सील-सतोख सू सगलांरी सीरी-भीरी वणी रेती हीं। मोकलो माण पांवती, घणो आदर दिरांवती, जद ही तो बीकाणै जिसो वास छोड'र, कालै कोसां कुल गांवरो रैवास मन्जूर करयो हो। सैररी जाई गांवमें आई अर मरी जदताई राजी-ताजी रैयी।

बेटा-बेटी घणा ही, लांबी-ओली लागै, पण पेमजीरो जी सोरो नीं, सांसै भूलै-धागै। भणावै न गुणावै, डोलासूं डरावै। नां ब्या'री वात सोचै, नां सगाईरी कांस करै। ताल-सूणां सांढसा सरोढ बेटा-बेटी सूना फिरै। पेमजी खुद दूजै जुवान वणै है। टाबरांरै सामो नीं भाकै, जे भाकै तो चिरड़ी भींचै, ढलाथ उबाकै, गालां ठोकै अर गल-गलावै है।

दामक-दौलो, छिद्या-विदचा पोटळो! पेलांरो पटवारी, हालमें पूगळ-पट्टै रो आघूंतो हुकमदार! जातरो दरोगो, हजूररो धाभाई दादो! डरतो सो सिध लिखै, मरतो सो आपरो नांवो मांडै। वारला गांवामें चुव्हाण-सिरदार बाजै, सूरमाईरी वातां करै अर आपनै अन्नदाता सूं अड़ा'र वंसमें वतावै है। ब्या'रै जोग वणै, मरतो मरै, एक टेम जीमै, पेटरी दौल नूकावै है। धोळा खोसै, काच-नकचूंटी हरदम हाथांमें ही राखै। देखणियां सूं सकतो लकोवै है, पण ठाडीरै चिगदा घालतो ही जावै है। हुळको हुवै, फूटरो भवै। बुंगाली छटावै केसा माथै काळी कड़प चाढै। ऊंचा पटिया वावै, कूवै खालड़ ठोसी खातो फिरै है। ठगावै, ठाकर बाजै अर बार-वारलां गांवांरी कोटड़्यांमें मोटी कुंवारी बेटयांरी खोज-खबर करावै है। खावकी खुवावै है, भायेला वणावै है अर टाबर वणतो थको आपनै देखणवेगी मोकळा ही सिरदार घरां बैठ्यो बुलावै है। पण गुणेसजीरो ओतार, आवोदांमें कीरै हो दाय नीं आवै अर पेमजी नांवो गुमावै। आपनै घणो दिलदार जाणै अर जगती पर रीस-रोस करै। आलो-दोलो, हाथरो पोलो। मूधा अर भोळांनै भरमावै है। स्याणां, चतरां अर हुलनाकांरों हाड़ो-चाकरी तथा गरज करतो रैवै। ओछा-ओछा हाथ, कड़्या मूं नीचा, ओछी-मोछी नस, घड़में वड़घोड़ी। गोळ-माळ गट्टो सो चालै जद रड़कतो वगै। खोस्योड़ी मूंछां, पटघोड़ी दाड़ी। च्यार आंगळ लिलाड़ अर सूररी सी करड़ी रुंवाळी।

ब्या'रा वेगरणो, विच्छावला, दड़पट, लपचेट्ठ अर जार भायेला

भोंदू पटावै तथा खूब खावै-पीवै है। मोफतिया इसा मौकां मौज-मजा ही किया करै है। काम कर'र वै: कीनै ठारे ? सगाईरै कोडमें लालरा माल उडे, बनड़ीरी लोढमें पतळो पड़ै अर कुढै। पेमजी आधै सूं घणो धन लोलांनै चटा दीनो, पाखरियां पेमनै पूरो कटा लीनो। कमावै जकैमेंसूं ऊपररो ऊपर ही जावै। हजाररी साल पावै, लारै पांचसौ मस्सा उवारै। ऊपरलो पानो कियां आवै ? पट्टाळा आपरै पुराणै पटवारीरो मोकळो अदब अर माण करै, पण पेमजी तो ब्या'वेगी मरै, अर घेलैरो काम नीं सारै। घर हाळा घणो ही समझावै, पण सिरमें गूंग चढायेड़ो, भुंवाळी खांतो फिरै ! मानै कद ! माथैमें राख घाल राखी है।

मूळीरो पापा रजवाड़ांमें रैवणियो स्याणो हाजरियो, राजनीत सूं रंग्योड़ो-सुधरयोड़ो मिनख ! ख्यात अर जातनै जाणै, बिड़द अर वडाई वखाणै। जकै वासतै आखा ठाकुर-उमराव अर मुसाहिब दै:की खावै। एकर तो किसो ही काम हुवो, कोई ऊथपै नहीं। घरां मोकली खेती-वाड़ी हुवै, घीणैरो घमरोल राखै। मीठा-मीठा मूण-पट्टा मतीरा राजाजी तांई पुगावै अर मोथाव पावै। आया-गयां अंगरेजांरो रसोवड़ो करै, लाटनै थाल सजावै। वडी-वडी वातां सुणै अर आपनै एक मोटो ताजीमदार सो गिणै। नांव किसनजी, कोटै धणीरै आगै रैवै। एडीकम्प अर पराईवेट वाजै। देसरा दौरा पूरा करावै, आबू अर विलायत सागै जावै। हरखां-कोडां हंसै-फळै, गालयां खा-खा ऊंचो चढै। पण किसनजीरो जिन्दड़ीमें एक मोटो भौ, आपरी लूंठी बेटीरो माथै मडरैयो है। जकांरो नांवो म्हैं अठै मूली मांडू हूं। बाल धोला हुयग्या, सगाई नीं हुई। लोग लुक-लुक ठालीमूली ठिठकारी वतावै। उलाड़ी, उभागी अर खुरड़पगी कंवै है। लाडेसर-बोछरड़ी, गतराड़ी तथा नुगरी। चिलम-बीड़ी चोसै, चमड़ा चूं चावे है। मांस-मिट्टी खावै अर होटलांमें जावै है। एक जगां बैसक ना खुड़ो, वखत पर पतो ना बुड-बुड़ो ! किसनजीरै जोनै पूरो कुंडियो, पणो छाती पचो राखै है। टिमचर फूटै, टाइयां लागै, मूली

अलो-थलो उजाड़-भाग । कैणो मानै ना सीख सुवावै, ब्या'री नीचो-नीची निजू निगै करै अर खुली फिरै है । सींगायल तथा सरकायल, सो-सो जागा रचै है, बाजेगारी अर तेरातालो नौ-नौ ताल नाचै है। बापनै मोकलो सोच लागै, मूलीरै वररो कठै भाग जागै है ?

मूली कोझी, कवरूर, ओगणांरी खाण ! जावे जठीनै ही रात मिलै । हंसै जद चीढ़ सी चीरै । चालै तो खोलो सो भाजै, दड़बड़ाट ऊपड़ै । बोलै तो गधा विदक जावै । डील सूं सरगड़ा पणैरी सूगली गिध सी आवै है । छाटो सो पेट, लाडू सा होठ, लोतर बा'री, वरड़ी बोली हाली लुगाई. लोगांनै तीजै घर नीं सुवावै ! पण धाणीसूं खल ऊतरी हुड वलीतै जोग । कुतैरो मांस फूड़ सूं सीजै: मूली माथै पेमजी रगीजै रीझै ।

सोढ़ै घर सांखली अर सांखली घर सोढ़ो, दो घर डूबता एक घर डूब्यो । भगवान जाणै, मूली पेमजी वेगी ही जामी ही तो ठा नहीं। पण किसनजी छाती आडो भाठो देय'र घरसूं नीकल्यो । पूगल पूग्यो अर भाग-जोग सूं पेमजीरै एक दलाल मायैलैरै घरां जा ऊतर्यो । किसनजी आपरी बेटी वेगी टाबर जोवण आयो है । इसो सपूत टाबर पूगलरै पचासूं कोसांरै पसवाड़ामें नीं लाधै । पैली लुगाई अबार ही मरी है पण उमर घणी नहीं । दूजवररो कोरो छिम्मो ही लाग्यो है । काल्ठी मूं छालो गाभरू, दूधियो जुवान है ।

पटवारी, सपूत, स्याणो अर ओसथ्या ही ठीक-ठीक, सुण'र किसनजी आला देई-देवतानै धोक मारी । नारेल अर कड़ाई बोल्या । धरापरै जोड़रो टाबर लाधणैरी खुसीमें तेतीस किरोड़ देई-देवतानै चढदेणै चेतै करया । हुकारो भरणैरी ढ़ीकमें ऊतटा तोड़ै, कालजो धूजै है । पेमजीगो जिगरी दोस्त दलाल किसनजीनै पेमजीरै घर खानी टोरै है । कोटैरै मांटै हजूरी माथै साफरी धिगड़ धाक जमाणैरी कला रची फल फोरै है । कैवै—पण लूंठो आदमी है, लेण-देण हाल्यो बात पैला ही कर देणी है । बरोबरी खातर छेकड़ तो कैणी ही पड़ैला, क्यूं

कं ऊंचै ठिकाणैरो पूजतो-पुछतो पटवारी है।

जिता थे कैवो—जिसनजी बोल्या।

दलाल—सै चीज-वसत मिला'र हजार खंड तो देणा ही पड़ैला नहीं तो चोखो कोनी लागै।

दूजवररै टाबरनै घणा है। किसनजी कैयो।

दलाल—सात सो? इतै सूं थोड़ा के चोखा लागै? घराणैरी बात है, जात सो जात है।

किसनजी—खैरसल्ला! दोरा-सोरा ही करस्यां। पण टाबर ईं मीणमें ही ब्या परा'र आपरै घरां ल्यावणो पड़सी।

दलाल चमक्यो अर भरम मिटावण खातर कैयो—नां! सा! इयै साल तो ब्याह हुणो जाबक दोरो है?

किसनजी डरतो सो बोल्यो—थे जाणो ही हो, तेरै वरस पछै बेटी जिता ही दिन बापरै घरां रैवै, बितो ही पाप बापरै माथै चढै। कित्यां सतरै वरसांरी है, वर ही स्याणो-समझदार है। मिलतो जोड़ो है, मोटो टाबर बापरै नीं, आपरै घरां ही आछो। चवरी मंडै तो आधा फिकर घटै। वरतारो माड़ो है, कुलजुगरो पोरो है। भगवान नाकरै, पग चूक्यो अर काल चढ्यो।

दलालनै थोड़ो थ्यावस आयो अर बेलीपै सरूप बोल्यो—घणै ताण सूं आपांनै लोगांसूं दवाणा पड़सी। सावो आगलै सालरो पूछां तो के हरज है?

किसनजी कैयो—जस क्यूं खोवो सा? करघै-करायै माथै क्यूं धूड़ फेरो हो? अबै तो बेड़ो पार ही लघावो। सगाईरी हामळ भरी है, जद ब्याहनै भळै क्यूं लारै छोडो हो? भळै कोई घावमें घोबो तथा साखमें घोचो मार नाखसी! मोटा सिरदार है, म्हांसूं ही कोई मोटो घर दवासी। करघो स काम, भज्यो स राम! कोई ही काम करां-करां नहीं करणो, झट कर ही लेणो चाहीजै। लारै राख्योड़ा कामां खातर मरती विरियां रावण ही मोकलो पिछतावो करतो मरघो।

दलालरी हिम्मत दगी—बोल्यो—लुगाई मरै छै: मीणा हीं नीं हुया है। डांगरो थोड़ो ही हो ? जकं मायै भलै पटवारीजीरो पूरो प्रेम ! बरसीसूं पैलां तो बात ही नहीं करै । पण एक बात है, थे करो तो ?

आप ठामस्यो वठै ठैरस्यां, भरास्यो बिता पांवडा भरस्यां। कैस्यो जिया ही करस्यां, थांरो कियोडो सिरमाथै लेस्या। कैणो नीं करां तो रैवाला कठै ? थां बिना म्हांनै इसो घर, टावर अर ठिकाणो पड्यो कठै हो ? किसनजी कैवे ।

बात आः है कै फूल गगाजी घलाणा अर छमासीरो घड़ो भराणो, दो काम वेगा कराणां पड़सी। इयारै सागै सौ-पचास बामणांरो मूंढो ही ओठांणो पड़ला। दो, ढाई सौरी लागत है। पछै देखो, किसो'क वेगो बनड़ो बणावां ? पण अैः दोनूं कामतो थांरै हाथांसूं पूरा पाड़ना है। नगदी देणै सूं तो वैः आपरी उल्टी ओपन समझैला। पण धरमादालां कामांमें आपरो ही नांव हुवै। लाडै'रै पछै म्हे ही कैः नाखस्यां, लाख सारीसो है, सगाईमें सातसो ही देवैला। हजाररी गरज पालैला। लोग कैवैला गगाजी-गगेड़ा ही कराया है। कीं मिनखपणो ही तो देखणो चाहीजै।

किसनजी कसीज्या, पण करै तो के करै ! आगै कूवो लारै खाड। अवलो आयो बाड'र काढ्यो। होलै सै हुंकारो भर्यो।

दलाल बोल्यो—चालो टावर तो दिखालूं ! पण वठै ब्याहरी पैला बात मत करया, नहीं तो भूज मरैला। बण्यो-बणायो काम बिगड़ जावैलो। चिड़ावणां आछा कोनी। कुतो-बिल्लो थोड़ो ही मर्यो है। लालीरी लुगाई मरी है नीं। रिपिया हाथ बसू कर परा'र पछै ब्याहरी बात कैया। नगद नारायणरै न्याणै सूं तावै ल्याणा है। मरी-गुरी लड़कीरी बढाई अर रिपियांरो पूरो बन्दोबस्त गुण'र दलाल निसकारो नाख्यो। कैयो देखो किन्यारो कोई भाग है !

किसनजी बोल्यो—भाग चोखो ही है। जद ही थां जिसा भला माणसांसूं भेटा हुया है। बातां-बातांमें ही पटवारीजीरो घर आवग्यो।

किसनजीनै बारै वरसाळीमें वैठाण्यां अर दलाल जनानी डोढीमें बड़्यो। किसनजी दांई पेमजी खनैं ही आपरी पूरी घूंस जमाणी चाही। दलालां सूं किसी छानी थोड़ी है के—गरज मिटै, गूजरी नटै। गरज हुवै जितै गधैनै ही बाप कैय र बतळाणो पड़ै। मौको है हाथ सूं नीं जावै। श्रौसर चूकी डूनणी गावै श्राल-पताळ। सोच्यो—भज कळदारम, जुगती लडावां, मितराई तो मूंडै हाळी ही चोखी। गाय घास सूं भायेला घालै तो खावै ली के ?

लीप्यो-ढोळ्यो मोटो आंगणो, लुगाई-टाबर फिरै-घिरै। सै हंसै बोलै अर खेलै-खावै। पेमजी एकलो ऊपर ऊंधो कोतक करै। कड़प लगावै अर धोळा खोसै। काचमें मूंढो देखै अर मन-मनमें मोकली राजी हुवै। इतैमें ही अचाणचकै दलाल राजी-राजी जापरै'र कैयो—पटावरीजी जै रामजी की। म्हारी बात मानो तो इसो ब्याह कराऊं, जिसो घणा भायांनै नीं लाधै! पढी-लिखी पदमणी अर सागै मोकली लिछमी ही।

ब्याहरो नांवो कानां पड़्यो, हाथ सूं काच छूट'र टुकड़ा हुयग्या। दलाल सांमो मूंढो ढीलो करच्यो, राफां तिड़ाई जद ख्याल चाल पड़ी। पेमजी बोल्या—आप म्हांनै दूजा समझो ? घरू साख, मोकळो आण-जाण, बूझ अर सला-सूत, भळै थांरी बात नीं मानां तो दूजैरी कींरी मानां ला। म्हारै तो सै: थांरा ही पुन्न-परताप है अर गाजा-बाजा है। म्हारै तो थे सिरराा सेवरा अर माथैरा मोड़ ही हो। पटवारणरो तो आपड़ो भाईजी-भाईजी करतां जी सूकतो। मिलती वठै ही हरी हुयजांती।

दलाल बोल्यो—थे बूझो हो तो, म्हें ही थांरै घरनै छाती सूं नीचो नीं उतारां। हर वखत चेतै करता रैवां हां। नहीं तो सापांरै किसो सनेह, ठगारै किसी मितराई। म्हे तो दलाल हां, कींरा भायेला पाळां ? पण थांरी कोटड़ी तो साची, घर दांई लागै। रात सूतांनै दीसै है। अबै देखो नूंई पटवारण ल्यावां। पापड़ लाग्यो न बड़ी, घमकै बहू

आ पड़ी, हाळी कैवत खरी कर नाखां। तीरकवाण सी बांवड्या, इन्दरी सी परी! ऊजळी बतीसी हाळी, मानसररी सी हंस-कवरी। वसंत पत्रमीरी परमाळ, पीळी पेवड़ी! हथणी सी हालै, सांवणियैरे लोर ज्यूं चालै। चौमासैरी चमक, कवळी ज्यूं कंवल। लिछमीरी चीव सी सूधी अर सरोद। पुन्यूं रै चांद अर उसारी लाली सी सुवावंती आवै! गुणांरी खोल अर फूटरापैरो खजानो सो भळकै! केल गी काब, जकी घराणैरी जाम सूं जोड़ो मिलाय देवां। जको जीयो जितै चैर्या राखो।

पेमजी झूम उठ्यो! बोल्यो—बस! बस! बस! रैवणद्यो। म्हारै माथै थांरो घणो-घणो ओसाण है। आज म्हारै मन मांयली वात पूरी हुवै, रुंवाली रसीली वणी है। घर हाला भाई-बेटा मन्नै सदा कैवता रैता—बदरीजी जावो, अड़सठ तीरथ न्हावो। धरम-पुन्न करो, माला-मणियो फेरो। मिंदर-देवरैरा नेम घालो, टींगराळी वातां छोडो। सिरवाणा ना चालो, जमानैरी हवारो रुख भालो। मांचै बैठा दो पीसा घी सूं रोटी खावो अर हुकम हलावो। पण म्हारो मन कोरी रोटी सूं कद रीझै? थां जिसा म्हारै मगरा धरम-भाई अर मितर, जद मालानै म्हैं वालूं के? माला फेरो म्हारा बैरी-दुसमण अर बुगीगार। जका मोतरै नेड़ा जा पूग्या है। म्हैं तो ओजूं नूंवो ससार वसावूंला।

दलाल कैयो—हां जगती जाणसी कै नांन्नेली मोवत अर हिन्दैरो हेत इसो हुवै। आप अबै न्हावो-धोवो कररयो। फुरती सूं तेल-फुलेल लगायल्यो। गैणां-गाभा पैरल्यो अर वेगा सा नीचा पधारो। आपरी बारली दरसालीमें एक ताजीमी सिरदार बैठाणरा'र आयो हूं। ताउ मसी लगायो, फटकारै सूं वणो-ठणो। बोला-बोला जायनरा एकै कांनी बैठ जावो। व्याहरो हरफ ही होठां सूं काढ्या मती। ना कीं घर हालै सूं वात करया-करावा। कंण ही उचका दियो तो म्हांनै ठा नीं है। भळ-भळ करता भूत ही हुवोला। इसो परसंग तो पड़्यो ही कठै? थां, म्हां जिसा तो हाली रावै। वेगार बड़ां अर हूल ल्हागियां सूं

रावलो काम हुवै है। म्हैं हीं थांरै घराणैरी सागीड़ी वडाई करूंला। मिजाज अर नखरो चढायां राख्या। जलम-कुंडली मांगै तो कदै ही मत दिखाळज्या। वरसांरो ठा पड़ग्यो तो मोडैरा सायी डडम-डंडा रजावोला साख अैः सिरदार तो हरगज करैला नहीं। म्हैं आखी वातां ठीक कर लेस्यूं। थे खाली बैठा रैया पण हां भाई! हजार हाळी एक गड्डी तो ल्याय दद्यो। जीमावण-जूठावणरो सलीको सजावां अर सैल सपाटा करावां। कठै ही भिड़क नहीं जावै? नौ-दो इग्यारा हुयां पछै कीं जोर नीं खाटै लो। श्रंबी सूं घरां आयोड़ो जैंरो सांप है, पूरती-पूजा करां अर काम वणावां जद ही आपणी वत्ताई है।

पेमजी बोल्या—भायां तणी भीड़, भायेलां भाजै नहीं। लोग कूड़ी थोड़ी कैवै······बीचमें ही दलाल बोल उठ्यो—आपणी वडाई पछै कराला, पैली रिपिया ल्यावो, काम पक्को वणावां। पेमजी वैडोच्योड़ै राजरी रकमरा आयोड़ा ढाई हजार रिपियांरी थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल-देवतारै आगै वगा नांखी अर कैयो—कीं वता ले जावो सा। दलालसा क्यूं नैंकारो करा हा? नोट अर नगदी कोटरी जेबरै हुवालै करया तथा डागळैरी पैड़ियां सूं हेठैं ऊतरया। आपरै लारै-लारै पेमजीनैं वरसाळीमें आणैरो कैः गया। वरसाळीमें वडतां ही किसनजी कैयो—खाली अर एकला ही क्यूं?

दलालसा बोल्या—पधारै है! राजरी रकम चूक रैया, थोड़ासा भोळा'र आयो हूं। आधी घड़ीरो टेम माग्यो है। जकांमें ही सोः काम वणा लेणो है।

टग-टग पग वाज्या, किसनजी ठगीजणनै थान-मुकान सम्या-विराज्या। दलाल ऊभै होगरै'र हाथ जोड़या। होड-होड किसनजी ही कैण सूं मोढा मोड़या। पगां लागूं, गुरु मा'राज! ऊंचा विराजो। हुक्को, मीठी, मधरी बोलीमें पेमजी मुरळी दलालनै कैयो अर आप मूढै माथै बैठ्यो। निजर नांखी, भोमी ताकी पण किसनजी कमररै रंग-ढंग सूं ढीलो, लट्टू हुयग्यो। च्यारूंमेर झांकै आंख्यां तिड़कावै है।

मूंढो फाड़ै अर तिड़ावै, मींट नीं मिलावै है। आठा अर आलमारयांमें ताकत वेगी लायोड़ी बंग-सिलाजीतरी सीस्यां जचाई पड़ी है। किरीम-पाउडर, खिजाव, वैसलीनरा भरयोड़ा भांडिया; जे, माथै जेळमाळा वणायां भिलै है। तेल-फुलेल, अन्तर-सेंटरा कंटर अर सावण-सोढैरा गोडं-गोडं सूणा सिन्दूक राजा-मा'राजारा सा पड़या दीसै। पटवारी हैक, तैसीलदार ? किसनजी कीं कूंत नीं सक्यो। सोखीनाई अर खरच-वरचरी चीजां-वसतुवांसूं खूब राजी हुयो। वूढापै हालां ओखदां माथै वैम ही नीं गयो। ओसध्या ही तीस-पैंतीस तांईरी अकलमें आई। पेमजी जाणजुगांरो-कामणगारो सैः वातां समझ्यो अर कूड़ी जाल सादी भरी नरमाई सूं मुरळी माराजनै साथांल्यां सिरदारांरो नांवो-गांवो पूछ्यो। वोलारो चाल्यो। मुरळी दलाल किसनजीरी पूरी जाण-पिछाण कराई अर गळगळै कठा सूं आणैरो कारण ही वतायो। कैयो—थांरै घराणैरो नामून सुण'र आपरी वाईरो साख करणनै पधारया है। थांनै कुंवरजी वणावणा चावै है। मैरवानी करावो। पेमजीरी जाड़ चिपगी। दांती जुड़गी। उथलो नीं आयो। हां अर नां, दोनूं मोलममें राख'र उकारै सूं हुंकारो भरयो अर मूंछ्यां सूं उठ'र रावळै कानी मूंढो मोड़यो। सूवो पढायोड़ो हो।

ये वांचणियां सिरदार जाणो ही हो कै वूढांरो व्याह करावणारी इसा दलालांनै आछी अटकळ हुवै। वडो नख राखै। गट्टा-पट्टा कर परा'र उल्टी-सीधी तिकड़म भिड़ा ही नाखै। कदे ही कदै ही छोरीरी जगां छोरो परणाय'र कोरो रिपियांनै धूंवो लगा देवै है। मोटा-मोटा मैल दिलाळै तथा कूड़-कपट करता थका दोनां कानी सूं मोकला ही रिपिया अैठै, ठगै अर ठोक लेवै। आपरा'र पारका, अठै-वठैरा दोनूं ओ तया जलम विगाड़ै। वापड़ी भोली-ढाली किन्यावांनै कुड़कैमें नाख'र वेगीमी विघवा वणा देवै। मुवागरी नीं रंडापैरी चंवरी चाढै।

केसरिया वालम आवो नीं, पधारो म्हारै देस।
गढपतिया राजन आवो सा पधारो म्हारै देस।

साजन-साजन म्हैं करूं, साजन जीव जड़ी ।
चुड़लै माथै मांड लूं वाचूं घड़ी-घड़ी ।

पटवारीजीरो ब्याह सिग्ग चढ्यो, मूळी पटवारण वणी । दोनांरो जीवण रसीज्यो, पण न्यारो-न्यारो। ऊट, वकरीरो जोड़ो जुड़ै, जद मन कद मिलै ? एक करै नूंई बीनणीरा कोड, दूजी करै आंखं अदीठ वूढो भोड । पैलड़ो लटवाकरै-हाथ जोड़ै । बीजी मूं सुजावै, माथो फोड़ै । मांगै रोटी पुरसै दाल, चालै गाल । सुवागरा एक-दो साल ही सोरा नीं नीसरै । बाकी तो सगली जिदड़ी दुखरी इकरंजी वरतीजै । मूळी दाझै, रूसै अर रीस रलै । पेमजी जूझै, कुढै अर गूंगमें गलै । गठजोड़ो तो जुड़्यो पण मन-मेळ जोड़ो मिल्यो नहीं । मूली लांबी अर अर जुवान । पेमजी ओछो, गटमीगणियो वूढो विरान । दो-दो दुख सागै रलग्या । मूली पीयै दूध अर ओढै साड़ी । पेमजी चोसै दारू अर राखै दाड़ी । मूळी कोयल सी बोलै, पेमजी गिरभाड़ै ज्यूं गिरणावै । मूळी नूंवै जोबनरै कोरै कळसरो मीठो ईमी सरगल कूंजो । पेमजी अलीणं वूढापैरै रुःवै मांथै-मटकं हालै खारै अमलरो मीठो घोल्यो घूंट । एक जावै अगूण, जद दूजी झांकै आथूण । मूली भूजी-बलै । पेमजी वूजै-ढलै । ओपरी अर उलाडी तावै नीं आवै । पेमजी दवग्यो, कैणैरी हिम्मत नहीं पड़ै । मूली सिर चढगी । हुकम ओढावै अर घररो काम करावै है । पाली हाळा पेम, तन्नै नैकारैरो नेम । साकरियै डोरैरी नाकमें नाथ घालली । कद टूटै अर कद पेमजीरो पिंड छूटै ?

बेटा-पोता न्यारा हुया, भाई-भतीजा ऊजला राम-राम करया। नौकरी छूटी अर गांव गरज टूटी । लोगांरी भींट ठंडी नहीं रैयी। पीसो लेखै लागग्यो, दलालारै हाथां-पगां अलवणरो रंग आयग्यो । माण-मुलायदै अर सूंकरै कायदै सुख वेगी कमाई ही, जकी मायासूं दुखरी देवाल एक मूळी आई । हमैं जावक हांडी-हेठै हो बैठ्या । उधारो कोई तोलै नहीं, धेलो कोई धागै नहीं । रिपियैनै कांकरै दांई समझतो जकै पेमजीरा पूरा पड़ै नहीं । मूलीनै पूड़ी-परांठा भावै, पेमजी दांतरी

दिखालै है। मूली जिझड़ै, पेमजी तपै है। पैली मां-बापरी गालां काढ़णी पळाई, पछै एक-दो विरिया धका-धूम करी। माजनो चोड़ै आवग्यो, मूलीरो हाथ पड़्यो। कंठ झाल्यां अर ठाकररा ठुली सूं गैरा गिट्टा भांग्या।

सीयालैरी रात, मूळी निवाररै मांचै माथै पोढी पड़ी है। पेमजी पग-हाथ दाबै, मुठ्ठी देवै है। झोकड़ी आवै जद मूली उलाय ऊबांकै, आवै है। आज पेमजीरै मायैसूं मुरळी दलालरी मांडयोड़ी मूली हाली मोवणी सीवी साफ हुवै, नीकलै है। जाणै आः मूली तो वसंत पांच्यूंरी परमल नीं, उन्नालैरी लाय है। थावरवारी अमावसरी रात है, पुन्यूंरी कठै ? पाथरी अकूरड़ीरी गिद तथा भूतणी-चूड़ावण का जिन्द है, देवतारी परी कठै ?

ठंडी रात, गो'रांमें जिनावर जुगाली करता उगाली सारै है। आलांमें चिड़कल्यां चरमर चहल करै अर ओरैमें पेमजी चिलमां भर पीवै है। आखी रात ल्होड़ी लाडीरी चाकरीमें गुजारै, आंख्यां मांखर काढै है। पण आः बनड़ी कद रीझै ? टिरड़ाका करै, ठींडा देवै है। तवासूरै गुल अर बीड़ीरै अधबलर्या टुकड़ा सूं आलिया-काठा भरग्या। दिड़म तथा दारू चढग्या। पेमजी जबरा हुकमां हाल्या। शं: सं: बूढवाल फोड़ा घाल्या। सपनांला सैग होड़ा-सुमन, उलटा झड़खलां ज्यूं झुरड़ीजै है। कुभावना हाला काली नसरा कोड़ा कुसम, सुल्टा तिणखला सा तुरड़ीजै।

मूलीरो हियो फूटण लागग्यो, उफल ग्यो, होल उपड़ ग्यो अर चित्त भरम हुयग्यो। मन मिनट भर ही मरै नहीं। जी घड़ी पल ही ज जमै नहीं। दिल रात दिन डोलै, काळजो कुढै अर खोलै। बैःक उठी। बोलीमें बटका सा बोढै है। वतलायां वाथै जा पड़ै है। सोचै है— जुवानरै लारै सोक वण'र रैणो चोखो, कदै ही तो सोनैरो सूरज ऊगै। पण बूढैरो घणी वण'र रैणो खोटो, जमारो घुसतो ही जावै, वलै ही नहीं। आपरै उदास मनसूं एकर भलै पूछ्यो—जे आजरै एक नो

ज़ुवाननै एक दांतां-खुरां बा'री-बोदी डोकरी धिगाणै परणा देवै, तो ो कै परणीज लेवै ? तथा परोटल्यै ? पाछो पड़उथलो मिल्यो—कदै ी नहीं ! कदै ही नहीं ! तो म्हैं अठै क्यूं हूं ? दूजी दुनियां वळगी ? एक दिनरी वात थोड़ी ही है ? जिंदड़ीरो सवाल है। मूलो ोरिया-बिसतरा उठाया,बांध्या अर चढी, रातरै पल्लै ! पेमजी आपरै ल्लै-बल्लै।

●●

चेड़ो (आंधलो विसवास)

करणियो काटी, जातरो भाटी ! गवैयो वजै, वेजूवावलै रै इज्जै-बिज्जै। चोखो गावै, चोखो वजावै, पण वोलीमें बारै आना कुवावै। व्याह-सावा हेरै, सौ-सौ माथै हाथ फेरै। इनाम लेवै रुतवो वधावै, पण कींरी धार नीं धारै। आछो खावै अर ओढै-पैरै, मौजां माणै है। छोटै-मोटैरो ही ग्यान नीं राखै। कठै ही कार-मजूरी करणनै नीसरै तो घूमणरो नांवो लेवै, खेत जावै तो ही घोड़ी माथैं जीन कसावै। रोटी खावै तो पंखो डुलावै, पाणी पीवै तो चांदीरो गिलास मंगावै। कींरै सारै—माया तेरा तीन नांव, फरसियो, फरसो अर फरसराम। लारला दिन भूल ग्यो। सेररी हांडीमें सवासेर ऊरीज ग्यो। फाटण लाग ग्यो। वडाई भरीज ग्यो। बाप मरग्यो लकड़ यांरा भारिया ढोंवतो-ढोंवतो, तीरथ करयो न वरत। गंगा गयो न जमना। मां बापड़ी भूखरै विखै आपरै पापै-पुन्नै लागी। वेटो आपरै मन्नै-ग्यानै धन कुबेर वण्यो वैठ्यो है। बोलतैनै धोल नीं आवै। चोखलै में आवै जावै, पूरो पीसो तोड़ै। पण मन नहीं धापै। डोरा-जंतर सीखै,

झाड़ा-झपटा देवै। गिरै-गोचर बतावै, भोलांनै भरमावै अर गूंगानै चरावै। लुगायांनै ठगै, पीसालांनै अंठै अर लारै लागै है। कूड़-कपट रचै, पाखंडमें पचै। फेंट-फिटोड़ो, निजर-टिपकार, भूतणी-चुड़ावण, चेड़ा-चैलान आखा ऐलान मिटावै। पाणी मिन्तरै पावै, आकड़ैमें लोटो ढुलावै। भूतणी काढै, जमीमें चूरै, जिन्द जरू करै, खेजड़ैमें कीलै है। ओपरी छायां ओलावै, चिमठियां बांधै, थुथकी नाखै, मादलिया मंढावै। छिड़की देवै, पूजणी करावै, सीरणी बांटै, धजा टंगावै। धूप-दीप खेवै, घी-दूध होमै, नितनेम करै, चूरमा जीमै। परचा देवै, छांया चढावै, भेंट-पूजा ल्यावै अर चिटक्यां खावै। गूधराली तागडी कड़तूमें लटकै. पूंचैमें तांनी हाथल पटकै। मोटो कांधो, मोटो गल, लाल-राती आंख्यां अर लिलाड़ पर सल। मोडां माथै तेलसूं सरगल बाल छिबछिबै भरै, सिंदूररा टीकांसूं तालवो तपै-तिरै। इसै मस्तानै रूप सूं दुनिया डरै है। हाथां भलै आंकड़ हालो गेड, घगं लो री तिरसूल अर सांकल मढ़में मेल राखी है। आयां-गयांरा आखा लेवै अर धव्घूणी देवै है। जातरी हाथ-जोड़ी करै अर पग पकड़ै है।

वैदांगी बेटी, पल्लीवालांरै परणायोड़ी। राजी नांव सदा राजी ही रेवै है। गांवमें ही पीर, गांवमें ही सासरो। फूटरी आवै-जावै अर अर आणदसू ओपै है। कुसोम्यारो काम नीं, आछो नांव-नामून कर राख्यो है। सासू-सुसरो सरावै, वासरा माणस बड़ाई करै। कोई ही विसरावै नहीं सगला सोम्या करै। पी'रैमें माण, सासरैमें सा'रो, गांवमें गुण-कीरत, काम ही प्यारो। ऊजलो सुभाव, चड्ड चल्लो, गांवरी बेटी पण सगल्यां सूं गूंघटो पल्लो। सूधी गऊरा ऊपरला दांत। विरगरांवती सी बोलै, कीनड़ी सी कारै। कीमू ही नेड़ै नीं आवै मिनखांनै हस'र दांत दिखावै। मायांरी धींव, लखपत्यांरै आई पण कदै ही कीसूं दी जबान नहीं हुई। नोकर-चाकर भरोसैमें रै:, देराणी-जेठाणी कीं नीं कै:। नणदां सूं नैकच सूं ना कारो, सैग मिनखानै पे: कीनै ही नां नूंकारो। पण नुगाईरो जमारो।

एकररी वात, राजीरै जापैमें प्रौन-हवा निकलगी। बावली-बंड्डा करण लागगी। गू ग विखेरै अर तत्ता-पत्तां सूं बूही वातां करै। जकै सूं घर हालांनै भूतणीरो वैम वड़ गयो है? बापड़ा वैदां वेटीनै जाम्रै करायो हो, दोहितै जायैरा लाड-कोड करता हा। पण पूरा घेनड़िया ही कोनी गाया, बीचालै ही भिजोक पड़ग्यो। छुछकरी त्यारी रुकगी। छोरीनै पींपलामोल पायो, जकैमें कोई वायरैरो लैरको लाग ग्यो। काचां हाडांमें कुचमाध हुयगी। गूंद-सूंठ अर पीपलामोल जिमा ओखदांमें तो बोतो मारच्यां पड़्यो ही रैणो चाहीजै। पण राजी तो लाजरी मारी मड़ीणैसूं पैली काम लागगी। वेटी पी'रैमें के जच्चा वण'र वैठै? बींरै इसी ही जचगी! पण डील विना काम किया हुवै? पैलो सुख निरोगी कायारो वतायो है। कमजोर काया सूं जोररो काम लियां काई कावल ही हुवै, सांवल कठै पड़ी?

राजी झींटा विखेरयां ताचै मांथै पकड़्योड़ी बैठी है। दांतांरै कोडी अर अलैवण चढ रैयी है। ठोडी लालच्यां अर थूकसूं भीज गयी है। मतांला विलिया हाथां सूं कढ़-कढ़ पड़ै। पग ली झोडां एडी पर प्रई है। लैंगैरो नाड़ो लारनै ले लियो। डील हवा ज्यूं हलकै है। कमरमें ना बोली जकी आज गडाछा मारै है। घर हालारै भावरी वणी रैयी है।

आदमी पर आदमी, बुलावै पर बुलावो, न्हाना-म्होटा आछा पग-दोडी करै। पग तोडीमें पाछ नीं राखै। हाली-चालड़ी तक्कात भाज्या वगै। स्याणा पडित आवै, झाड़ाला काजी जावै। पडित जाप करै, पूजारी माला फेरै। जोतकी टीपणमें गिरै-गोचर संभालै, कोतकी धूप खेवता थका जोत करै। जागण-जम्मांरा, अर रातीजगांरा सै नेगचार हुवै। चोर लारै वा'र वणाई है, भाव लारै उपाव वताई है। पण राजी तो दवटी पड़ी ही टीली मारै। जकै सूं सैः भूतणीरो वैम करै है, सनीपातनै कुण समझै? कोई जिद वतावै, कोई चूडावणरो नांव लेवै है। कोई ओपरी छाया कढावणरी उंतावल करै, कोई पलीतनै पाणी

ढुलावणो बतावै। बासहालो लुगायांरै तो करणै कनैसूं कांकड़ बारै केलड़ैमें कोलावण हाली काठी जच रही है। आरै तो करणैनै बुलाया ही जी में जी आवै।

छेकड़ लुगायांरै जची जकी हुई अर करणैनै बुलायो। करणो आंटै पगारो धाखड़ जुवान। माथै ऊपर गोळ साफो, दाड़ी मार्थ कस्योड़ो जाडियाळो काठो धाटो। चौड़ो चपाट मूंढो, लांबो लिलाड़ ज्यूं कूंडो। फौजी बूंटांमें पामोजा पैरयां ही सीधो सालमें आ धमक्यो। ओरमें सूती राजीरी धणी नराजी सूं नाड़ देख'र मूंढो मिचकोड़्यो अर उड़दू-फारसीरा अटपटा रळावढा, उळटा-सुळटा सबदांसूं बात बणा'र बोल्यो—थे कोरा बाणियां ही तो हो, जावक अड़ जावै जणां बुलावो। नहीं तो थां भांऊ इनसान परेदूर मर जावो, कीनै ही कंवो हीं नीं। हूं किसो विलायत बसूं हो? जको थे ओजूं तांई ठा ही नहीं करयो। हूं किसा हाथी-घोड़ा थोड़ा ही मांगूं हो? अर जे मांगूं तो ही किसो बदै सूं आछो हुवै? अबै हूं के कर सकूं हूं? खुदा तो को ही नी, जको मरतै बंदैनै उबार ल्यूं। पण अमीर-गरीब आसां मिनखांनै एक रोज अल्लारै दरजै हाजर हुणो है। ईरै वासतै म्हें राजीरै इलाजनै हाथ घालूं हूं। सावळ-कावळ करण हाळो तो मालक है, पर राजीरै नेड़ैनै काडणरी तजबीज करस्यूं। था लोगांरै लारै जाऊं तो, हरगज इसै दब्योड़ै रोगीनै नीं झालूं। पण खैर! मेजी अर मगज मार्थ मालकरो खोफ राख'र ह्यांत करस्यूं।

लुगायां मार्थ करणैरै-कैणैरो पूरो रोब पड़्यो। सैः हाथ जोड़ण लागगी। बोली—म्हांनै कांई ठा चेड़ो है। म्हे तो जाण्यो पोन बैंगी। करणो समझ गयो कै म्हारो जादू सागीड़ो चलग्यो। बोल्यो—खुदारै फजलसूं अर थां जिसा सेठांरी दुआसूं मनै रिपियांरी जावक लोड़ नीं है। कदै ही जाणो? होटी-दियाळी करणैनै। सागरी कुड़छीरो ही मोर कीनी! देखांरो सो साख है। मौको पड़्यां करणैनै चेतैः करो हो, नीं तो करणो आपरो बाट्योड़ां तिलांमें! मोठरी छायां बैठ्यो मजा

करो। इत्तो कै: परो'र करणै वोभर-वासतेरी हांडी भर'र मंगाई हांडीरै वासतेमें एक धोवो कूटचोड़ी मिरचा नखाई। अचेत पड़ी राजीरो मूंढो जगती मिरचारी हांडी माथै मेलायो। दो लुगायांनै काठी पकड़ाई अर आंगणैमें आपरो गेड पटक्यो। अल्ला-विसमिल्ला करतै थकै भूतणीनै जोररी दवड़क दीनी। राजीरा तो हांडीरैं ओगसूं सै: आंख-नाक वल'र एका-मेका हुयग्या। मूंढो तुरड़ीज गयो, फाला उपड़ आया। लाल-धोळी लोई उतरगी। भाग सूं अचाचूंकरो कोई पाड़ोसी कनै आयो अर राजीरी अधवली लासनै उवारी। तुरता-फुरत असपताल पुगाई तथा घर हालां भोलां मिनखांनै मोकला भोठ्या। करण-माथै पचायत बोरडमें रपोट कराई, वात जोर खायो।

सरपंच गोमदो गट्टाणी, गोरो निछोर छोरो! गोल-मटोल गायड़ मल, गांवमें नाक्खां दण्यो फिरै। दसवीं पास, देखण जोगतो स्याणो-समझार। चै'रै पर चेत्रकरा वण, पण चावल सा दांत। मूंढो उघाड़ै जद ऊजली वत्तीसी खिल उठै। जांभरै फाला जकैसूं हकड़ी खार बोलै। मनमें वसै, दुनियां फंसै। मगेजी घमडी, माठो-काठो चालै हालै न डोलै कलम-कतरणी चलावै। जावै न आवै, कनै ही बुलावै। वूढिया थोलो खावै पण गोमदो गांवरा आखा काम पूरा करणा चावै। पण अटकळ जाणै न ढंग, कोरी करड़ावणरो रंग। हजारूं भेला करैं अर ऊंधा-सूंधा लगावै, बीच-बीचमें वू ही पांवतो जावै। वणियैंरो वेटो हया-दया वा'रो, हिसाब-किताबमें कामण गारो। धरमादैरै पीसियासूं घररा काम काढतो ही नीं सकै। मनै घड़गी जकी वाडमें वड़गी। कंवतरै अनुसार वेपरवाहीसूं मालैं। गांवरी सिरैंपंचीरो गुमान, मुकदमा-मामला देखै। माड़ी-माठी वूरै नीं उघाड़ै। अपूठिया खोज काढै, आवल-कावल काम जोवै। गोमदैरै घर हाला फूल्या नीं मावै, फाटै अर पोमावै। वैः नीं जाणै आः सेवा नीं सूगलवाड़ो है, जिन्दगी मलीण करणैंरो अखाड़ो है। वाप वघभांई लेवै, गांवमें घूमतो फिरै है। भाई गूंजै, नास फूलावै है अर परवारू ही न्याव-तपावस करै है। वासरा

नाई, बलाई अर मोची तकात सिफारस करणैरी हूंस राखै है। कुटंबपाळ सरपंच आपरा पारका गिणै। गांवमें पूरो भेद-भाव पाळै है। ऐरा-गैरा नथू खेरा लोग बारणै बैठ्या चुगली करै, चींचका मारै है। सरपंचसूं मोथाव पावै, नामून कमावै है।

आज सिरैपचरी चौकी माथै लोगांरी डाढी भीड़ लाग रैयी है। करणैरी मूरखता माथै चरचा चालै, गोमदैरो काळजो मूंक खावणवेगो हालै है। आज आखै गांवरी मांग आई है कै करणै जिसै पापीनै जरूर डंड-जुरवानो अर कैद हुवणी चाहिजै। पण करणो गोमदैरो भायेलो, हजार री रकम भळै धामै। सरपंचरो सारो कडूंबो थोथो थूक उछाळै अर करणैनै बेकसूर बतावै है। जद गोमदो लुकतमें तो खाली पांच सौ नैं ही हाथ घालै है। पण ऊपर सूं इक्यावनरो जुरवानो अर इक्यावन धरमादैरा लेपरा'र बातड़ी ठंडी-मीठी, ठा-ठप्पकर देवै है।

पै'न नागो, घूंसखोर पंच अर नौकरी छूटयोड़ो हलकारो, शै: शै: ऊमर भर ऊंचा-मूंघा लोगांरा कोरड़ा ही सेंवता रैवै है। बोलै न चालै, जावता जमी पकड़ ज्यावै है। भाऊ कोई की कैवो, सफा धुन्ता बण ज्यावै है। मीठा-मीठा मुळक बोकरै, थोथा-मोथा फुंकारा करता थका होठां मांकर माड़ा-माड़ा हसता रैवै। कैयैरी रीस करै नहीं, आयोड़ै रोसनै पाणी दांई पी जावै। बींरी चाय पीयैं, बींनै ही खुद पावै, पण दो जवान हूयां की सूं ही सरपावै तथा पोसावै नहीं। कदै ही सो घोड़ां चढ'र हार्फै ही मर जावै तो दूजी बात है।

गोमदै पांचसौ रिपिया ही तो ल्याया अर जुरवानो ही कर दीनो, ईं बात सूं करणो घणो दो'नो हुवग्यो। बोल्यो—पितर मोहल्लै पर्राखदै, धीणो मर्द धाम। माताजीरै मढमें बैठ'र जप करणा पढा दीना। अण-जण लै लियो, चाय पाणी ही छोड दियो। बानरा जुंवारा हवासूं हालण लागग्या। ठोडीरी दाढ़ी गल्लै सूं नीचै ढळ चाली। गोमदैरो सिरैपंची होमदै वेगी मरणो मांड दीनो नौ दिन निरधारा काढ्या। धूप-दीप सेवो, सून्यो रैयो। दैकडूलै दिन देवीनै बल-बाकळा

चढाया। कालीनै वसमें करणवेगी करणै एक छोरैन झाल'र उवैरी नस काट नाखी। रे! रे! रे! हुई तथा देवी परसण हुणै सूं पैला ही मिनखांरी मोकली भीड़ भेली हुयगी। करणनै बचवचा'र पकड़ लियो, चूनियां झाल लिया अर मूंजरा बंध देपरा'र थांणेमें सूंप दीनो। ऊमर कैद बोलीजगी।

जेलरा मजा! एक-एक कोटड़ीमें चार-चार कैदी अर चार-चार कोटड़्यां माथै एक-एक हवालदार। काम सारू काम अर टेम सूं आराम। च्यारूं मेर आभैनै नावड़ती मोटी-मोटी भींत, जकांरै विचालै खूंटी ना मोखो, जाली, जे अर ना झरोखो। च्यारां कूंटांमें चार वडा बुरज अर ऊपर छतड़ी। दरुजै माथै राजरो झंडो सतजुगरै सतदाई फः:रै-फरुकै है। लोहरै फाटक आगै सिपाही रायफलां-पिसतोलां कांधै उठायां तण्यं ड़ा गेड़ाकाटै। सूंवो सिख्खर दिन आवै जद कठै ही जेलमें पूरो सूरज दीखै। नहीं तो सियालैरै दिनमें आडो-आडो ही जावै। कोई थोड़ी-घणी कोर भलां ही ऊघड़ो।

चेजो करणियां चेजो करै, पाणी भरणियां पाणी भरै। भण्यां-गुण्यांनै कला-कारीगरीरी किसत सूंपै। मोटा-ताजांनै डील सारू खसाईरो खोरसो भोलावै। पीसणियां पीसै, रांधणियां रांधै, वखतसर न्हावो-धोवो अर सिख्यां सीखरी वातां सांधै। लगरमें बैठ'र जीमै, कतारमें कासण मांजै, नूंवा डरता रैवै, वोदांरो भो भाजै। अफसररै हुकमां हालै जको मोजसूं मालै। ठढठारी पर डाकधर, दवाई-पाणी दिरावै, हारयो-थाक्यो अराम अर ओकास पावै है। खूनी, चोर, डाकू अर वदमास पण आपसमें एक-दूजेरी मोकली मदत करै है। पिंडत-पिंडत अर सावू-साधू, सागै हुवै जद सागीड़ा लड़ै-झगड़ै। पण कैदी भाई जेलमें कदै ही नीं रड़भड़ै। भेला मिनखांमें सदा सूं हू-हल्लो हुंतो आयो है, पण कैदी तो आंखमें घाल्या नीं रड़कै। बोलै न बुरकै, काम नूं काम राखै।

एक जगां रैणसूं सः एक कडूंबैरा अंग सा वण जावै है। अठै

ना तो कोई रेलगाडीरी मुसाफरी है, अर न कोई धरमसाल तथा तीजांरो मेळो है। अठै तो एक-दूजै सूं मिल-जुल'र वखत काटणो है। अै: दुनियांरा दिखावटी धंधा है कै—आपरो रोणो भूल'र, दूजांरो दुख दरद सुणनो चाहिजै। अठै करणो तो जूनां कैदयां वेगी कीं कोनी, पण पुराणा कैदी तो करणैसूं भारी हमदरदी दिखालै। करणैरै मूंढै माथै हरदम ऊमर कैदरी डरावणी सूनाल नीन्द लेवै है। जकैनै देखतां ही जेलमें जीमणैरै समै करणैरै वारकर राजनीतरै कैदयांरो मगरियो सो मंड जावै है अर वारी-वारीसूं कनै जापरा'र पूछै—किता दिनांरी हुई है? करणो हरेकनै हारयोड़ै मन सूं कैवै—ऊमर कैद। बस आखा ऊमर कैदी वारकर फिर जावै है अर आप-आपरी कोटड़ीगै सोरप सुविधा वतावण लाग ज्यावै है। नूंवै तीतर-कबूतररै सामा आप आपरा पारटी-पींजरा खोलै अर प्रेमरी पलोई करणै मच जावै है।

फाजल बूढो फकीर, वरसांसूं जेलमें जड़योड़ो आपरै पापांरो पगाछीत करै। कुरानसरीफनै मानणियो, कट्टर मुसलमान। मसनवी नित्तारै, आथण दिनूंगै तसबी फेरै। पांच टैम निवाज पढै, मीणैभर रोजा राखै। ईद, बकराईद मनावै, ताजियांरा तिवांर धोकै। पण मोरम अर तिवांर आवै जद कायर मोर ज्यूं झूरै। जेलमें नूंवै दिनरो बिना हलाली करयां रैवै। बाकी आखी दीन-ईमानरी वातां पूरी कर लेवै। पण बकरियो, का कोई दूजो जीव कठै लाधै? खुदारो कसूरवार वणै अर दोजखनै जगां करै। असल मुसलमान हुवै जको मजबरै कायदै सूं निवाज पढै, रोजा राखै अर वरसमें दो-चार बार हलाली कर परो'र मालकनै मूंढो दिखालै। नहीं तो सिकल-भिकल। खुदारै दरबारमें वन्द'र इसलाम मुसक्क सूं जावै। फाजल हरवखत इणै कारणांमें डूबोड़ो रैवै। पण जेलमें आ: वात जावक निजोरी। काटण देगी जिनावर कठै सूं आवै? हलाल बिना ही हराम वणै।

करणैरी वातां फाजल वडै रैमसूं सुणी। अजीज दिलसूं आपरी कोटड़ीमें जगा दीनी अर धीरज बंधायो। मुरसद वण्यो अर

झटकाला झाड़ा सरु कर्‌या। आपरै जंतर-मंतर अर पीरांरै जोर सूं करणंरी कोई प्रेमिकानैं जेलमें ही बुला देणंरी हामल भरी अर आपरी सारी तजवीज त्यार करी। करणंरी कठनाई दूर हुयगी। जादूगरी सीखै अर फाजलरा कैया पांवडा भरै। प्रेमिकासूं मिलणंरा मीठा मतसूबा बांधै अर मन्तर सीधा होणंरी अवधीनैं आंख्यां फाड़्या अडीकै है।

फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणै माथै हथफेरी करणी पैलाई। पांच-सात विरियां, छुट्टी विसरामरै वखत, करणंनै जमी पर सूंवो सुवाण्यो, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायो। आंख्यां मींचार आपरी प्रेमिकारो नांवों चित्तारण वेगी कैयो अर पीरांनै पांच पीसांरी सीरणी चढवाई। इयां करतां-करतां ही बकरांईद नेड़ी आयगी जकै माथै हलाली वेगी फाजल कमर कसली अर करणंनै प्रेमिकासूं मिला देणंरी वाः ही तारीख घड़ली। अवै रोजीना झाड़ा उथळावै है, लोबान सूं कोठड़ी पाक करावै है। सीधो सुवाण परो'र करणंरी आंख्यां मींचावै है अर जेवड़ीसूं जरू बांध देणंरो भलै कैवै है। करणो फूल्यो नीं समावै है, मन-मांमें घणो राजी हुवै है। आखा काम आपरी कोटड़ीमें लुक-लुक करै है। चुपा-चुपी जेलरो तखतो उलटणो चावै है। बात सैः ओलै पासै, तीजै कान हुयां फलापै नीं फाजल इसी भाखै।

वडी ईदरी पैली रात, दोनवां आंख्यां सूं काढी, भाप आपरी मुराद वाढी। भाख फाटी, तारा झड़्या अर कूकड़ै बांग मारी। करणो रफड़-रफड़, मल-मल न्हायो-धोयो अर मिलणै खातर मनरो दीयो संजोयो। सुंवार कराई, साफ कपड़ा पैर्‌या अर फाजलरै कैयां मुसक डीलरै तेल-फलेल लगायो। कानांमें सैंटरा फोवा टांग्या, हाथांरै मैंदी मांडी अर रोजो राख्यो। आज दोनूं ड्यूटीसूं छुट्टी ले आया अर करसी आपरा मन चाया।

फाजल कोटड़ी बुहारी, गाभा सजाया अर सगला वरतण-भांडा मंगाया। जेलरा जीमण हाला लोहरा काला तासला उजाल्या अर

पल्लास्या। आपरो तबलो ऊजलो करयो, कोरां कानांरी धार सिलड़ी पर रगड़-रगड़ सागीड़ी तीखी-तेज काढी। दिनभर नकूंढो चाढतै थकै दुरछायलापणा करया अर निवाजरा फूटरा फटकारा लगाया।

सोपो पड़यो, सरणाटो छायो। वत्ती काटी, लोटियो बुझायो। हाजरी हुई अर सोवणरी घटी वाजी। फाजल करणंरा हाथ-पग जेवड़ी सूं जरू जक्या। प्रेमिकारै पैलड़ै मिलण दिवस करणो हाथ नीं लगा लेवै, जकी आपरी मेटी-मोटी सक्या। आंख मींचाई, चादर ढढाई। कमरैरा किवाड़ काठा ढक्या अर विसमिल्ला बोली। गुणगुणातै थकै फाजल करणंनै कैयो—थोड़ी देरमें तुमारै ऊपर पाक रूह आवैगी। हुस्यार। आंखें मत खोलना। नहीं तो खुवायस पूरी नहीं होगी। साथै जिन्दगीरो खतरो ही है। कोई कितो ही चचंड़ै तो चूं नीं करणी है।

फाजलरी वात सुण'र करण जाड़ भींच लीनी। फाजल निवाज पढणी सरू कर दीनी। पछै विसमिल्ला कै: परा'र करणंरै गलै पाक रूह वण'र चादर हटाई। कनै पड़यो तेज कानांलो तासळो (तगारी) सभायो अर करणंरै गलै माथै आपरै दोनां हाथांरै जोर सूं भुंवार दे मारयो। भट-भट, एक, दो, तीन। नसड़ो चिगयर भोडको मीणियै नूं परियां पटको। फाजल आं: कामांमें सदासूं है फुरतीलो इसलाम, अबै खुस होय'र खुदारी खिदमतमें करै है सिलाम।

डाकधर कैयो—इन भाड़-भपटै वाले काजी मुल्लों का साथ नी कमाई का खूंटा है। जेलर साहब हूंकारो दियो अर पोसटमारटमरै पछै करणंरी ल्हासरो जुलस निकाल्यो। सिपायां सिलामी भरी, साहब फूल बरसाया अर आग भरी।

देवता अर पंडा

खेत पौन सूं खिल-खिलै-खेलै, रात-दिन रुखाळी मांगै भेलै। धान धूजै, सलपलाट करै तथा वेलां, चियां-फूलां सागै भूला-भूलै है। दूधा सिट्टा, काची फळयां, अधपाका मतीरिया अर काकड़िया मिनखांनै ही किलोळां चढा राख्या है। टाबरां, लुगायांरा भूलरा खेतां जावै है अर काचा-पाका फोड़-फोड़ फोगांमें वधावै है। पट्टा उतारै, पेटरी लट्टां मारै अर चालतो कातीसरो धाप-धाप'र करै है। मडतै रंगांळा मतीरिया जीमणमें घणा सुवाद लागै है, ऊपरसूं काकड़िया गटकावणनै ही जी जागै है।

गुलाबड़ीरी मां खेत संभाल'र पाछी घरां आरैयी ही। मतीरिया-काकड़ियांसूं धायोड़ी थिगै ही। डकार लेवै ही, सागीड़ी सूं सावै ही अर रागळी गुण-गुणावती गैलै वगै ही। पेट फाटै हो, तिड़ै हो अर दैंड़ो काठो डांग सो होरैयो हो। नाड़ा छोड करणैरी जी में आई, जद मारगरै बिचाळै ही बैठगी मूताई। अचाणचकां ही गांवरा ठाकर सैल वेगी जांवता, घोड़ी चढ्या सारकर नीकळणै लाग्या। डूमणी डरती विचलाईजगी। ओरू-तोरू हुयगी, बाको फाटग्यो, डाढी संकी। जाण्यो—ठाकरसा के जाणसी ? रांडरी जात गैलैमें ही पैसाब करणै बैठगी। झट समझी अर पैसावरी गीली धूड़रो गोगो तथा घरकोलियो सो मांडणनै लागगी। भोगतो भुवाळ, दिलरो दयाल। बूझ्यो—गुलावरी मां अठै मारगमें काई कर रैया हो ?

बोली—ओहोक तो ? घण्यां ! घणी खमां ! अठै तो मूत देवतारो मिंदर मांडू हूं।

भोगतै कैयो—ग्रै: मूत देवता भल कद परगटया है ?

बोली—ग्रोहोक तो ! मनै काल रातनै सपनैमें दीस्या ग्रर कैयो—गुलाबरी मां हूं तैरै मूंढै बोलस्यूं । ग्रांधांनै ग्रांख ग्रर पगलांनै पग तथा बाझड़ियांरी गोदी, गीगलांरै झडूलां सूं झिला देसूं । तूं म्हारो देवरो मांड ग्रर धोक-पूज कर । तेरा कैया ग्राखा परचा साचा हुसी । नुगरांनै चिमत्कार दिखाल ग्रर सुगरांरी पूरी कर प्रतिपाळ । धण्यां ! हमें हूं मिन्दर कठैसूं चिणावूं ? कांयरो सरजाम लावूं ? कठै सूं चेजारा बुलावूं ? हूं तो मा'राजरी बतायो जगां कारी धूड़रो गोगो मांडूं हूं । सेवा-पूजा करसूं ग्रर धूप-ध्यान धर सूं । सफलाई हुई तो मुलक उळट पड़सी । नीं जणां म्हारै गिरैसूं के जावै ? ठाकर घोड़ीरी लगाम थामी । गुलाबरी मां ग्राई सामीं ।

ठाकर कैयो—गुलाबरी मां ! थारै नूंवें देवतारो चोखो मिंदर चिणा देवूं, म्हांनै ही कोई परचो देवो ।

गुलाबरी मां—ग्रोहोक तो म्हारै के सारै है धण्यां ! हूं तो मूत महाराजरी कैयी-कैयी ही गावूं हूं । रुवांमें ग्रायां तो ग्राज ग्राथण ही पीरांरी धोक-ध्यावना कर परा'र सोवूंली जे सदा दांई सपनैमें ग्राया तो ग्रापरी सारी बात बूझ नासूंली । जिसो हुकम देवैला विसो ही ग्रापनै भुगता देवूंली । म्हारै सा'रै तो कीं है नहीं । सनमुख हुसी तथा ग्रद्दूठ रैसी जकी बात तो म्हैं ग्रापनै कालै बता सूं । म्हारा मार्दत मूत देवता मांग-जागर ले लियो तो ग्रापरा ही पोबारा पच्चीस है । नीं जणां मिंदर कठै ? नाडै बैठ जावो । म्हैं तो म्हारी सरधा-साल भगतीरो गीलो घरकोलियो मांड दीनो । गुण लारै पूजा है । परचा हुसी तो ग्र्यान मानसी, नीं तो खाली मनै पीट्यांसूं कांई हुवै ?

ठाकर कैयो—चोखी बात गुलाबरी मां । घरां चालो, सीधो मेल रैयो हूं । ठाकर सा'ब घोड़ी दूर सैल करणै गैया तो सरी पण मन थिना हो । जी डगूं-मचूं करै । मनसा पाछी फुरै । पग-पग माथै घोड़ीनै ठामै घर लारनै झाकै है ।

ठाकरांरै मोकलां वरसां सूं कोई बाल-गोपाल नीं हुयो। रावल में ठुकराण्यांरी धाड़ भेली कर धाप्या, पण नूंवो कान तो नीं वापरयो। एक, दो, तीन, च्यार, ब्याह कर लिया। भागरी बात च्यारू वांमेंसूं एक रो कूख नीं मंडी। भाठो-भाठो अर देवळी-देवळी पूज नांख्या। जात अर कड़ाई कींरा ही बाकी नीं राख्या। पण कोई आडो नीं आयो। आज गुलाबरी मां रै मूंढै मूत-देवतारी बात सुण'र ठाकर घणा राजी हुया। घूमणो-फिरणो सो भूल ग्या। घोड़ी पाछी घर कानी मोड़ी अर भारी त्यारीरै सागै रावळ में वड़्या। कड़ मोड़ी अर घोड़ीसूं उतरया।

हाजरियो, गिलपिली, उधाल, मोडजी जिसा घणा माणस ऊभा उडीक रैया हा। मोड़में वड़तां ही ठाकरांरै हाथ सूं घोड़ी पकड़ी, जीन उतारयो अर दाणो मेल्यो। पण ठाकर सा'व वियांनै घोड़ी नीरण ही पूरी दी नहीं। बोल्या—गिलपिली, हाजरिया थे दोनूं जणा एकर अठीनै आवो। भंडारसूं पूजणीरो पूरो सीधो ले लेवो अर गुलाबरी मांरै घरां चढा आवो।

गेहूंरो आटो एक परातमें, दूजै थालमें चावल अर सक्कर। मूंगांरी दाल, गायरो घी तथा लूण-मिरच वेसवार। पापड़-वड़ीरा पावरा अर धूप-दीपरा डबड़ा भर परा'र सभलाया। हाजरियै अर गिलपिली दोनूं वां, थाल माथै चठाया। ठाकरां फरमायो—गुलाबरी मांनै कै: दिया—हूं खुद (ठाकर) सिझ्यां वेलां धूप-दीप कर परा'र चढावो-परसाद लियां आरैयो हूं। जोत करावूं ला, कलस मंडावूं ला।

दोनूं वां हुकमसूं हंकारो दियो अर ढाढयांरै घररो गेलो लियो। मारगमें बात करी, पूजारो समान, हूमांरो सन्माण अर कलस भलै इक्कीस तथा इग्यारै घालसी। के विरतंत है? कांई खेलो है। वडां घरांरी कुण बात करै? वातां-वातांमें ही गुलाबरी मांरो घर आयग्यो बोला रैयग्या, सां सो धायग्यो।

ठाकरांरै घर सूं देवांरो सीधो आयो देख'र गुलाबरी मांरो

माथो ठिणक उठ्यो । जाण्यो—म्हें तो मारगमें संकती थकी देवतारो अलाव त्यार कियो हो, ठाकरां सांचे ही मूत देवता जाण लियो । हमें कांई करूं ? सीधो भालूं का पाछो लोटावूं ? चट, चेळकै हुयगी । तुरत बुद्धि तुरकड़ाली कंवत साच समलगी । हाजरियै अर गिलपिली मूं सीधाला थाळ सामली सालमें मेला लिया । कैयो—ठाकरांनै आज नीं, कालै आवणरो कैया । आज हूं ध्यावना कर परा'र सोवूं लो । दिस्टांग हुवै लो जद ही जोत-परसाद करालां ।

गिलपिली, हाजरियो चोखो कै: परा'र रावलै कानी चाल्या । गुलाबरी मांरा हाथ-पग हाल्या । जाण्यो—जोर हुई ! बात-बातमें ही मागीड़ी फसगी । अबे कोई उपाव नीकलै जद पार पड़ै, नीं तो गांव छूटसी । कूही घोडी है—गांव धणी सूं रूसणो, गेलीसूं घरवास । बात कनारै नीं लागी तो खारी हुई । सरवरियैरो वालिद ही परा फोनी ।

रात पड़ी, मंचलो ढाल्यो, पण गुलाबरी मां किसी सोवै गाली ? सीधो सामो पड़्यो अडाणैरो जेवर सो रुमाळ । भूखी पड़ी आंख्यां फाड़ै, तिरमिरावै अर तारा गिणै । घड़ी-घड़ी उठै अर नाड़ा छोड करै है । नैणामें वट नीं पड़ै । सांप मरै लाठी नीं टूटै जिसो डाव अर उपाव सोचै है ।

रावळमें रात भर पीलसोत चसी, चैन-पैन रैयी अर हरखरा थोथा बादल मंडराया । ठुकराण्यां कुंवररी मां दगनै खातर आप आपनै सेग वत्ती समझती रैयी । पैला कुण सोवै । लारैसूं न मालम कुण मनत्रायो कर बैठै । इयै जाल-जपटरै ताणै-वाणैमें मांल्हा गाया, दारूड़ा पीया अर ठीक तथा खुसी-खुसीमें ही सूरज उगायो । अबै मगल्धांरा खांचा ढीला पड़ग्या । नींदसूं कुच हुयोड़ी लोट-पोट हुयगी । दल्यिधीरा बलियाजी, दलियामें लूण घणा पड़ग्या ।

अप विसवासी मिनख, हरेक आदमीरी कैयोड़ी वातनै सांची मानण खातर ही बण्यो है । नटण खातर हरगिज नहीं । चावै कोई

अफंड करो तथा जाल। बीरै वास्तै तो बीघै भूत अर बिसवै सांप हाळी कैवत सांची है। खेजड़ी-खेजड़ी गोगा अर खेतरपाल खड़्या दीसै। चावै जको मोटो भाठो बता'र धोक दिरा देवो। कोई ही कूड़ी कं:र कड़ाही परसाद चढा लेवो। आंख मींच'र मानता रैसी, नारेल धजा टांगता वै:सी। आपरी जाणमें, बियांरै तो देवतारै ताण ही जीवणै हाली जंच्योड़ी है। इयै कामांमें वै: ताकतसूं आगा पग बढा लेवै। जे नरकमें ही उठ जावै तो देई-देवता अर डोरा-डांडांनै नीं भूलै। इसै कामांमें घणै मोद सूं मालै। मिनख मरता जावै, काम बिगड़ता आवै, पण वै: आपरै गघालै पूंछनै नीं छोड़ै।

ठाकर, दूजे ही दिन न्हा-धो, पूजा-पाठ कर परा'र गुलाबड़ी हाली मांरै घरां गैया अर बैठी देखी। झींटा बखेर्यां, दांतां माथै अलंवण चढायां, मांची माथै सूती उठती गुलाबरी मां अगाड़ी तोडती लाधी। कठ गाघा पड़रैया, माथो भूंवाली खा रैयो हो। ठाकरांनै देख'र जमी माथै हाथ दे'र बैठगी।

भोपाल सिंघजी सीधा-पाधा, भला माणस अर देव उपासनामें घणो भरोसो राखणिया पुखता-पुरख बाजै हा। एक मोटै गांवरा मालक अर धणी। ऊंचावै माथै मोटो गढ़, घोड़ा अर ऊंट तथा गायां-भैंस्यांरा वाग सा ऊछरै हा। बारली बैठकमें मांचा-ढोलिया, खुरसी अर मुड्डा ढाल राख्या हा। दुमजली बैठकरी भींतांमें सांभरां तथा काळेरांरा सावता सिर सजा राख्या हा। चौकमें जाजम बिछ रैयी ही, तम्बाखूरा गट्टा भरया पड़या अर चमड़ेरा होका चालै हा। आया-गया चोपड़-पासा रमै हा, पान चालै हा।

ठाकरां पूछ्यो—क्यूं गुलाबरी मां, रात परचो हुयो कांई? कैयां-कैयां बैठ्या हो?

गुलाबरी मां—के अरज करूं ठाकर सा'ब? कि कैणैमें कोनी मारै। धोहोक्तो, रात देव-पीरां, भूत देवतानै सिवर परा'र सूती ही। आखी रात नींद नीं आई। डील टूटतो रैयो, कठकठी आंवती गई अर

उवकरणी सी फिरती रही। भाख फाटै जांवता धणी घटमें आया अर कैयो—गुलाबरी मां, ठाकरांरी वात मत बूझ और भलां ही कींरी बूझ। म्हैं कैयो—ना महाराज! ईं वांमें जदी आया हो तो गरीब-अमीर बरोबर गिणो। ठाकर तो म्हांरै मोटा है, थांरै तो कोनी। कांयखां मेटो धण्यां। कैयो—गुलाबरी मां! ठाकर हुकम देसूं जिता सारा पांवडा भर देसी कांई ?

ठाकर भोपाल सिंघजी, गांवरा भोगता अर जमीदार है। इयांरो घराणो बडो मालदार रैंवतो आयो है। गांवरो पक्को जोड़ो, मुरलीधररो मिंदर, जकांरो कारी-कुटको ही नीं हुवै, इयांरै दादोसारा जस थंभ है। दादो सा गुमान सिंघजी इयांरो घणो लाड राखता हा। छोटी ऊमरमें ही ब्याह कर दियो हो। च्यार बरस तांई टाबर नीं हुयो जद दूजो ब्याह भलै कर नाख्यो। डोरां-जंतर, मादलिया-तावीज अर झाडा-मितरांरी कांई कमी नीं राखी। पण पोतै-पोतीरी आसा लियां ही गैया।

ठाकर उतावला होयरा'र बीचमें ही बोल्या—इसा कांई पांवडा है गुलाबरी मां? म्हैं भाठो-भाठो अर देवली-देवली धोक लीनी है। भलै सिरसो न्हानो टाबर हो जावै तो मकराणैरो ऊजलो-धोलो मिन्दर चिणा देवूं।

गुलाबरी मां कैयो—ठाकर सा. को हो मिंदर ही नीं चिणा देवो अनै सिरसैंगी आस, दूजो ब्याह कर परा'र सैजोड़ै जात पधारोला जद ही पक्की बधैली। जात आसो उद रात भर मिंदरमें ही रैणी पड़ैगी। दिनूंगै पाछा घरां आंख्यां जणां गढ़तांई उबांणा अर ऊंधा चाल'र जाणो होसी। देवां कानी पीठ नीं, मूंडो राखणो पड़ैला।

ठाकर सगली बातांरो हुकारो भरयो; गुलाबरी मां धूप-दीप करयो। रसोई बणाई, चूरमो चूरयो अर भूत देवतारी जगां लेजा'र चढायो। पोसाक लीनी अर गांव भरमें सीरणी दीनी। सिररो भार रैई उतारयो अर आपरो मतलब बतायो। जाण्यो—जबरी ऊकली! ठाकरांने अबै बूढै बारैमें न ब्याह हुवै, न कोई म्हारो परचो कूडो पडै।

खुदा भली साजी। पैली तो मिन्दर बणावण हाली मोटी वात सामी पड़ी है। गांव थोड़ो ही है। खोड़में मकान बणावणा घणो दोरो है। रिपियो कांकरै दांई करणो पड़सी। मकान ठाकरांनै आपरै माण-ताण मुतावक बणावणो होसी। व्याहनै भळै कठै बारी है? आवणो तो अलवाड़ो उतर ग्यो। आगै आगलांरै जचै ज्यूं करो। म्हारै तो मूत देवता हाथ आय ग्या। आई-गई और घणी चिड़ियां हाथ लागती रैसी। गुलावरी मां आपरै डोल सारू वात सोचपरा'र जामणी-झाड़ बैठी।

ठाकरांनै छिन अर छिरमी चढ़गी। सैंग काम भूल'र निरमाणमें झूल उठ्या। गाडा जोड़ा दिया, ढांचा मंडा नाख्या। आटैरा पावंरा भरा परा'र पचासूं ऊंट मकराणै कांनी मेल दीना। सिलावटा बुला लिया, छपरा मंडा दिया अर आठो घड़ीजण लागग्यो। कोरणी, जाली, चोक्यां अर झरोखा, चौघट तथा चांदांरा थेड़ चाढ दीना। टांग पाचिया'र आप ही जालाग्या। सगलां मना करया पण पांच महीणा बरोबर वग्या।

कारीगर आया, नींव भरी अर च्यारमहीणामें मकान गिगनां चाढ दीनों। किवाड़ चाढै, घंटा लागै तथा देवांरी मूरती पधरावण वेगी वात-चीत हुवै है। जागण अर परसाद, पुजारीरो इन्तजाम, धूप-अगर-वत्तीरै होम सूं खोड़ खरणा रैयो है। झालर-नगारा, सख अर मंजीरा, बाज-बाज'र रोहीनै राजी करै है। वठै ही नोरां, मोकली गाय, पाणीरी मोटी कुंड तथा पो अर सराय? खूब जातरी आवै-जावै है। परचा उडै, कोढियांरा कलंक झड़ै है। दुनियां उलट पड़ी है। सफलाई हुवै तो इसी हुवै। दूर-दूर तांई देवांरो नांव हो रैयो है। सांची है—देवतांनै पुजारी, पूजा देवै है।

ज्यूं-ज्यूं मिन्दर ऊंचो आयो, गुलावरी मांरै पेट स्याव नीं मायो। डरतो डूम सुभराज करै जकी कैंवत चोडै कर नाखी। नींद उचटगी। रोजीना ठाकरांरी कोटड़ी जावै, अर व्या हालो झाड़ो उथलै कैवै—ठाकरां! आप माथै घण्यां मूत देवतारी घणी मै'र है। दारो

सोरो कठै ही फेरो लेस्यो तो वेगी सी आस पूरीजै। म्हारो पाड़ उतर जावै। सैः दिन समान नीं हुवै। कुण जाणै कुण, जीवै-मरै ? काम हुय ज्यावै सो, हो ही जावै। सायरां सांची कयी है—जैः सो दिन नहीं आवै।

ठाकरां खंखारो करतां थकां कैयो—हूं सेवरो बांध'र चालनूं जद लोग हंसाई हुसी। रैयत के जाणसी ? हूं ब्याह जोग थोड़ो ही हूं ? हमें ब्याह कर परो'र क्यूं कौरो ही भव बिगाडूं ? कवर तो करमडैमें रिजवयोड़ा ही कोनी। नीं तो हूं बूढो हूं'क ? ठुकराण्यांरी कमी है ? कोरै कामरो क्यूं छिम्भो लगावां ? मूतदेवमें फळो हुसी तो तो ब्याह बिना ही राणी-राणी दीठ कुंवर जाम जासी।

गुलाबरी मां कैयो—ओहोकतो ! ब्याहरो तो पीरांरो परचो ही है। एक ब्याह तो आपनै भलै जरूर करणो पड़सी। देखता रैया—मोटै पड़गनैरो धणी नो महीणारै मांयनै ही आ धमकसी।

मोटै पड़गनैरो धणी, नांव सुणतां ही ठाकरांरो काळजो खरणाट कर उठ्यो। ओभरमें ठंडो पाणी सो पड़ग्यो। लाटरीरै इनाम दांई कुंवर वेगी कान खड़ा कर लीना। जाण्यो—म्हारै मरयां पछै राजरो धणी कुण ? गद माथै नुंगाड़ा आ बैठसी। मतारा माल-मलीदा कर परा'र मलका जासी। धन-पसू रूळसी, हाली-वाळदी धुळसी अर म्हारी एक नाटरै कारण बापडी ठुकराण्यांमें घणां फोड़ा पड़सी। मांग्यां मोयां सूं किसा त्रग्मा हुवै ? मांगी धाड़ के कांरी ? सोळा मिनखां सोव्हाल्यी गैल नन्हाई है। कांकड़ पाडोसी गांव सामसर ह्ळै, ठाकरांरै एक ब्याह जोग बाई है। आंपणै कोई आंट-अटकास भी नीं है। आपां कैस्यां तो नटै ही नहीं। लोग नाक मारै तो मारो। आजरै जमानैमें छोटै-बडैरो भेद मूंडो है। नूवै दादै सागै मुदोन्नारेल मंगा लेवां। ई मतवाड़ैमें हां मामो आम्बालीजरो नावो-मग्गूरनो है। आंडो भेज देवां, घरां बैठयां ही नगकै'र सहोटो आव जासी।

नू'ई ठुकराणीसा रावळै पग धरया, आणंदरा झरणा झरया।

तरवार परणीज परा'र आई, गुलावरी मांरै मूंढै उदासी छाई। जाण्यो-जाण'र मरगी ! हमें कुंवर नीं हुयो तो नाक वाढ़ लेसी रांड ? जे हुवै तो दागो सो परचो भलै दे।

सिङ्यारो वखत, रावलो तखत, ठाकरांरै व्याहरा मंगलाचार हो रैया है। कालै वीन-वीनणी देई थानां फिरसी। पैला-पोत सैंजोड़ै मूत देवतारै हाजर होसी। चढावैरी त्यारीमें न्यारी-न्यारी मिठायांरी वानकीरा थाल सजाया जा रैया है। घी-खांड, धजा-नारेल, मेवा-मिसरी, वाटिया-पतासा जिसा सारा चढावा गुलावरी मांरै कैयां अनुसार सजा परा'र ठावा राखै है। इसै मौकै अचाणचकै ही भोपो गुलावरी मां अंगाड़ी उवासी तोड़ती थकी धूजण लाग ज्यावै है। हाथल पटकै है अर तोतली आवाजमें तैः-तैः, पैः-पैः करै है। ठाकर नैड़ा वैठ परा'र पूछै है—हे महाराज ! मांग-जाग'र लेवो, हुकमरा चाकर हां अवलानै क्यूं पीड़ो ? म्हां लायक हीड़ो ओढावो।

गुलावरी मांरै मूंढै मूत देवता दोख वतावै अर कैवै है—मिंदर जिणा'र के पोमावो हो ? गठजोड़ैरी जात जावो। चढावो कर परा'र पाछा उपाला, उवाणा अर अपूठा चाल'र घरां आवो, जणा थांरी जात पलैला। इयैमें कोई चूक करोला तो थे ही भरोला। गुलावरी मां इतो कैः परा'र निरछाल हुयगी। छींयां दूर गई।

दिन उग्यो, सिनान-पाणी करया अर वीन-वीनणीरै मोड़ वांध्या। हाजरिया-हवालदार एकां-तांगां तथा वैल्यांरी कतार सजाई। वीन-वीनणी खातर रूड़ो रुणझुणों रथलायो खड़ो कियो। जांवतां यो देवांरै मिन्दर तांई सोणी सवारयां मायै जासी। पण पाछा आंवतां सैंग सफा उपाला आसी। हाली-वालदी, रथ अर वैल्यांनै खीचता ल्यासी। वियांरै मांयनै उवाणा जातणी लोगांरा जूता अर चढावाला खाली वासण न्यारा-न्यारा मेल्या रैसी। जेठरो महीणो, थान दो कोस नेड़ै, पग वल जासी, घणी हैरानी हुयसी, पण महाराजरो परचो तो पूरो करणो ही पड़सी। आयण रातीजगो, जागण लागसी, तापड़दिग

उडसी अर माल-खोपरा चढ़सी। मनसा पूरण होगी जद तो कैणो ही के? ठाकर सागीड़ा आला-दोला है, मन मांयली काढसी। रिपियो कांकरै अर कूवै दाई कर देसी।

ढोल-नगारा बाज्या, घंटी अर झालर झण की। धोक दीनो, फिरणी फिरिया। पुजारी जोत करी, धूपेड़ो मेल्यो। बभूतीरो टीको काढ्यो अर सोनैरो छतर चाढ्यो। धामरा सखोदर भरया, चिटकी-खोपरां सूं देवरा भरया। चाल्या, पैड्यां ऊतरया अर डिगता-थिगता गांव कानी अंपूठालियै सिरक्या। भांखड़ीरा कांकरा दोरा गडै, बिलां-बूजां पर ऊतरै-चढै। हंसै न बोलै, मूंढो नीं खोलै तथा आपसमें एक-दूजैनै देख ही नीं सकै। बोल-बतलावण करै तो जात नीं पलै। चग्गड़ का सा चिपै, पग तुरड़िजै-बलै अर कलाप करता ऊधा बगै है। सगलांरा मूंढा चिरमी सा हुय रैया है। अमीरांरो टोल, दो कोसरो झोल, काम बडो करड़ो हुय रैयो है।

आसा एक इसी हरी-भरी सींचल खेती है—जकी जेठ-आसाढ़री ताती-बलती लूंवांमें खोड़ा-खड़ी कळपै-लैलावै है। पाणी आवै तो आवै, नहीं तो कोरा लाल ऊमरा ही तरसै अर बोलती डैडाट करती रै: बोकरै। फूलै-फळै तो लोग कोड करै, नीं तो बळ-जळ जाणरी कोई कैवा नहीं। ठाकरांरा पग उपड़ग्या, फाला ही आया अर लोही भीर हुयो। दोरो-सोरो घर लियो, एकरसी आव टळी तथा मुंह मांग्यो जीवण पायो। आसइ्पास पड़या नीं, खैर हुई। दस बज्यां तांई अंतःपुर आय बड़या। सूना हुयग्या, भूखा-तिसा ही पड़ग्या। गांवरा लोग मुजरै आया, देखांरी जैः बोली। पण जातरी तो चुसक्या ही कोनी।

●●

गुरू भक्ति

मोरो गांव, छोटो घर, सीयाळै रो मे'अंधारी रातमें सफा सोपो
रैयो है। गोदारांरै वासमें सफा सुन्नाल पड़ी है। गडकड़ा भुसैं,
। चिड़ी ही चूंकै नहीं है। घर मांयलै आसरैमें चूंधो-चूंधो च्यानणो
क रैयो है। जको आपरी सालरी थली सूं बारै ही पूगै नहीं। बठै
ढ़ी सी एक घर धिराणी, लाल लुंकारियो ओढ्यां, चूलै कनैं बैठी,
: छोलै है। पालो लागै जद बोभरमें हाथ तपावै, कणाहीसै साथै
। ही अकरेल देवै है। इयांरो नांव फूसी है। फूसी आज माला ही फेरी
। अडीकै है, आपरै धणीरी कांस करै है—अंधारी रात, फलसो
ो, मसोड़ ठरै, जुलमी जाड़ो। ठंडा-किरता विछावणामें मारजा
आपरा'र सोयसी ? कोढियै जाड़ हाड धोळाकर राख्या है। बलो
रा, ठंठारी लागगी तो कुण आडो आसी ? इयैं साल तो पूरा गाभा
ाया नहीं। एकली बैठी फूसी कलपै-कुढै। बठै मारजा, हरिजण
में रीझै-मुलकै। आ अठै हाथ जोड़ै, गुण-गुणावै। मारजा बठै
वतावै। दोनूं आप-आपरै ध्यानमें मगन है, खुसी है। एक सूं
गन ऊंडो अर ऊंची है।

मेघवाळांरो वास, ऊंचावै माथै घर अर राजरै कोटवालरी
ामें दिवलो चस रैयो है। उघाड़ बारणां सूं सेव आवै, मारजा
ा हुवै है। पीढै माथै बैठा कांपै है। सामै नीम माथै कोचरी
करै है। गांवमें मोरिया करलावै है। मारजारा चेला बैठा भणै
ा माईत धूंयां ऊपर चिलमड़ी चूंचावै है। मंगियो, धनियो,
र मघलो मांडै है। खेमलो, हेमलो, केसरियो अर करणियो
सागै-सागै गरुजीरै घरां जावणरी ही चिन्ता करै है। कैवै—
ी काळी अंधारी रात है, पालै रो घणो जोर है। सदा सूं
पधारो। चालो थोड़ी दूर पुगा आवां। माजी उडीकता होसी।

कोई बात नहीं ! केन्ता थका मारजा मुटकारै ही नहीं है। मांडणियांनै इबारत ओलै, बांचणियांरै दूहांरा अरथाव खोलै है। विलम्या बैठ्या है। घरनै सफा विसर रैया है। पण घर पर, घर धिराणी ऐकला अमूझ रैया है। आपरै मांचै माथै बीचेटड़ी बेटीनै सुवाण राखी है। आपरा गामा तो न्याया-गुरक हो रैया है। ठंडा होणै री थोड़ो-घणो ही भो नीं है, बेटीनै घड़ी-घड़ी संभाळै, मूंढो ढकै है। कान लगावै, मोडै कानी तकै है। इयै चपाघड़ीमें थोड़ो खड़को-खंखारो सुणनैमें आवै है। डोकरीरा कान खडा हुयज्यावैं है। बोलारो पलायीजै, गुरबत चालै अर घरमें बातांरो भणकारो पड़नो सरू हुवै है।

फूली—कुण हुसी ?

आवाज—हूं नन्दलाल अगरवाळो।

फूली—अचभैसूं, आज रातनै कैयां बाबू ! खुरसी ढाळ देवै, बैठणगो कंय।

नन्दलाल—बैठतो थको मारजा कठै गया है ? थियांसूं एक काम है। वांरी कठै ही हलकी-माड़ी बात सुणां जद म्हारो तो घणो जी दोरो हुवै है। वांरै काममें हाण-नुकसाण अर खिलल पड़ती निगै आवै जणां, रात हुवो भलाहीं दिन, आवणो ही पड़ै। म्हारै तो वांरो ही पुन-परताप है। थियां कनै ही पढ्या-लिख्या अर काम करणो सीख्या।

फूली—वांरै काममें हाण ! किसो हाण ? हूं तो डरूं हूं, बेगा सा बताओ बाबू।

नन्दलाल—ना, मांजी ! मारजानै ही कैसूं ! थियांरी अकलनै बटैहाई मगावां। म्हारै तो मारैत है, गुरु है, पण······।

फूली—हरिजन बसतीमें छोरांनै पढावण देगी, बी बात गैयोड़ा है, इण बजरां सूं पैली घड़ै ही नीं आवै।

नन्दलाल अगरवाळ—तो······।

फूली—के बात है भाई ! मनै ही बताय देवो। आसी जद कै देसूं। था दिलूं मैं हेसी मेल देसूं।

नन्दलाल—हां ! थे ही कैः दिया । वैः तो जावक भोळा है, समझाय दिया । पईसड़ा हूं ही दे देसूं, दूजा सूं क्यूं लेवै है ? म्हे पछै क्यां वेगी पढ्या हा ? कद आडा आस्यां । दुनियां तो सारी ठगोरी है। ब्याजमें फंसावणा चावै । घर-गुवाड़ी बिका देसी । गैणो अडूल करा खासी। इयानमें ठिठ करसी जिका न्यारा। भलांही कैः दिया, फोड़ा पड़ैला। घर म्हांरै ही मडाया अर गैणो आय'र होळैसै मेळ जाया । घररी ही बात है । कठै ही कोनी जावै । म्हारै तो बापूजी सदा ही कैता रैवै कै—थांरै, गुरूजीरी देख-भाळ राखो'क नी ! जद म्हानै हीं नीचो झांकणो पड़ै ।

फूसी—(इचरज सूं) किसो गैणो अर किसो घर ? वैः क्यूं बेचैला ?

नन्दलाल—बेचै नीं ! थे समझ्या कोनी ।

फूसी—तो !

नन्दलाल—तो थे, ईं साल सामली छारेड़ी मायँ वडोड़ी डावड़ीरा हाथ पीळा कर रैया हो । जकै मौकै माथै फूलरी जगां फांखड़ी तो करणी ही पड़सी ! मारजा खनै के पड़्यो है ? म्हारा गुरु म्हांसूं के छाना है ? बियां तो आपरी ऊमरमें घणा मुफतिया काम ही करया । नैकारो तो कोनै ही करयो नीं । का सभा-संस्था चलाई अर ंदो उघांवता फिरया । इंयालका कामांमें भूंड-बुराईरै सिवाय मिलै ो के हो ? का म्हांकाळै बापूजी हाळी पालटीमें रैः परा'र सदा गांव वैर बांचता रैया है । आपां तो साची कैवां—पैलड़ै चुनावमें कुम्भा-ामजी सूरतगढ़ आया हा, जद पो'रै महीणेमें आधीरा तगड़्या । वठै ारै ही काम वेगी चोधरीजीरी हाजरीमें आखी रात खड़ा आटकता ा । हाईस्कूल वेगी तो जैपर अर बीकानेररै बीचाळै भूखा-तिसा रतां-फिरतारै पेटमें आंळा जम ग्या । सुणी है—अबै डाण्यांनूं मसो रिपिया मांग्या है । डुडाणी कदरा भला । एकर देय परा'र पछै गणैरो लेव ले जासी । जणै-जणैनै कैता फिरसी । ब्याज अर काटो,

कोथली तथा कागजांमें एकै सागै ही दूणा कर देसी। कलम डाढी करड़ी हैं। म्हे तो आखर घररा हां। पईसै-रिपियै ब्याजमें ही सार लेस्यां। भलै कीं नीं मांगा। एकर पैल-पोत चिड़यारै चुगैरा रिपियै सइकड़ैरै हसाब सूं देणा पड़सी। जकै पुन्नरै काममें कुछ-कोई नटै नीं। राजरी टिगट चेप'र वहीमें ही लिखा लेस्यां। दो मिनखांरी साख घणी, कोई जाणै न बूझै? तीजी लिखणियैरी कलम करा लेस्यां। गैणो नीं है तो घर ही अड़ाणै कर दिया। सोनो घणो नीं तो, चांदी तो दोय-चार सेर लाधसी। घररा ही हां, कोई दूजी बात थोड़ी है। म्हारै भंवरियो हुयो जद मारजा नाच-गाणामें पूरो भाग लियो। पईसड़ा ही मोकळा खरच करया हा। म्हारैसूं तो पूरी राखै। आधी रात बतलावां तो हाजर रैवै। पगमें जूती नीं घालै। बडोड़ा भाईजी बेमार पड़्या जद रात्यूं चक्कर काटता। बापूजीसूं चोखो जी रळघोड़ो है। आगलांरा सैनकार है। जणा ही अफसोच आवै है। आछो चालूं हूं।

छोटू मारजा एक मामूली हैसतरो नौकरियो मिनख, आपरो आधोसिकावै। घरमें घणी माल-मता तो नहीं, पण वडेरारै जमानै सूं चाली आंवती इज्जत-आबरूनै बियां, जियां-कियां संभाळ राखी ही। कारण जाणणिया जाणै है। कै—जदी छोटू मारजारी हालत दुरबळ नीं होती तो अवस एम. ए. ताईं पढ़-लिख जांवता। कोरी पोथी लिखणैमें ही कृपाळ चोखो नीं करतां। पण इस्कूलरो समै बीत्यां पछै अलगा टाबर भणावता थका गाडो गुडकावै है। बीचमें थोड़ो-घणो सेवा-धरम ही निभावै है। मारजा, सेवा लाइब्रेरीरा मिन्त्री, सनातन धरमरा सभापति, ग्राम सेवा संघरा उपाध्यक्ष अर आर्य समाजरा सदासूं सदस्य है। इयै धरमसूं तो घणो सौक राखै है। ग्रंथांमें जठै कठै ही रूढी-रिवाजांरी बात आवै, पानो मोड़ देवै अर आपरै लेखामें उतारो देवै। पण ईं साल मारजानै एक मोटी चिन्ता लाग रैयी है। आपरी बेटी कमलारो ब्याह करणो है। बडी बेटी कमलारो ब्याह इयै साल ही करार मांड दियो है, कै दूजी बेटी विमला रो ब्याह जोग

हुई खड़ी है। दो वरस मस्सां काढसी। जको तो फिकर है। लारै सूं जोर लागै जणा हाफे ही कोर आय जावै। एकनैं तो धोरियै चाढणी चोखी है।

रात ढलनै लागी, जद मारजा घरमें बड़्या। फूसी वियांनै घणा उदास अर मूंढो उतारयां जोया। पूछ्यो—आज इता मोड़ा कैयां आया ?

मारजा—आज दस बजेरी डाक थोड़ी मोड़ी आई! कागद-पतर देखण खातर डाकघरमें ठेर गयो। कमलारै सासरै हालांरो कागद आवण हालो हो। पण डाकरै सागै म्हारी बदलीरो कागद आयो।

फूसी कांपती सी बोली—हैं! म्हें थानै कैयो नीं, मोटा-घोटालै रगड़ैमें ना पड़ो। अगरवाला आपांनैं के कमा'र घालै ? क्यूं कोरै कामरो गांवसूं वैर बांधो। अगरवाला किसा एकला न्हाल करै ? आपणै तो सैः एकसा है। बाणियां तो बामणांसूं डरता छेरा करै। कथा करावै, नूंता जीमावै अर पुण्यरा भूखा बांरी वेट्या तकात परणावै है। थानै आगै कर परा'र बदनाम कर दिया। ओटमें सिकार खेली। थे क्यूं धिगाणै ही राड़में पड़्या। थे देखो जको आपो इयां खनै नीं है। अैःतो सौ विरियां लड़ै, सौ विरिया राजी हुवै। कीणो तो कीरै ही है नीं। कोरै कामरा लोगांनै भिड़ा-भिड़ा'र मारै है। डिपटी सा'वनै थे ही कैः देवता—के सा'व ! लोग म्हारी कूड़ी ही सिकायत करै है। म्हैं कींरी ही पालटीमें भाग नीं ल्यूं अर ना कोई राजनीत फैलावूं। तो कीं थांरो ही असर पड़तो।

मिनखरी मौत आवै है, जकी घड़ी ऊमर भररी आछी-माड़ी लारली सारी बातां काच दांई साफ होय जाया करै है। दुख अर विपतीमें भी। आपरै भला-बुरा कामांरो ठा पड़ै विना नीं रैवै। कदै ही फिकर करै, कदै ही धीरज धारै पण आपरी जिंदड़ीरो चिलत चितराम चड़ूड़ो उघड़ आवै।

मारजा—म्हैं तो कैयो ही हो। लोगां घणो जोर लगायो।

मारजा लाजां मरतै कैयो—ना ! ना ! इसी बात तो कोनी। अगरवाळा है तो गांवरा सेठ, अर फरसरामजीरै घराणैरा सपूत। ब्याज ब्यूजरो नन्दलाल कैः दियो हुसी। वो टाबर है, बियैनै आः बातांरो के ठा ?

फूसी कैयो—थांनै तो न्हाल कर दिया। किसै'क मौकै बदली करवाई। सेठांरो तो जद ठा पड़तो, थांरी बदली नीं हुवण दैवता। नीं तो कोरो मास्टरां अर पिंडतांसूं वैर घला नांख्यो। सुखमें दुख कर दियो। छोरीरा फेरा ही नीं हुवण दिया।

छोटू मारजारै तीन बेट्यां, जकां मेंसूं बडोड़ीरो साख डूंगरगढरै एक पावर हाउसरै मिसतरीरै दसवीं पास बेटैसूं मंड्यो है। टाबर होवनगार है। जात-जमात लूंठी है। मारजारा फिरतां-फिरतां खुरिया घस ग्या, जद ओः परसंग हाथ आयो हो। मोटा-मोटा मैंल दिखाल्या है। बडा-बडा बिछावणा बिछाया है। सैः बातां तैः हो चुकी है। दायजो मोकलो मांग्यो है। मिसतरी सा'बनै दसवीं पास बेटैरो घणो गुमान है। मूंढो ब्वाय राख्यो है, राफां फाड़ राखी है। जे मारजारी ठग लकड़ीरो ठा पड़ग्यो तो साख छूटतां ही ताल नीं लागै ली। मिसतरीजीरो पांच-सात सौ बेगो जी चालै। मारजा सौ-दो सौ माथै ही ओजूं मालै।

नगर पालिकारी नौकरी, भागरी बात ! गांवरी गांवमें एक हांडीगो भात। माण-ताण अर जस ऊजळो करणै खातर सीधो मारग तया खीरविरख समझो। बाओजीरा बावोजी ! तरकारीरी तरकारी। कमाई, कौसल, प्रेम अर प्रणाम। औः बातां मारजा आगै सदा घूमर घालती रैती। विदवानां अर धनवानांरी संगत, सार्थ देस सेवा भी। मारजा तो सैः चीजां छोड'र हिरावड़ै पसुरो सो लक्कड़, गळमें वैर बांध लियो है। जकांरो घणो मूंघो-मोल चुकावणो जरूरी हुग्यो। बोरिया-बिसतरा बांध लिया अर बदली माथै हाजर हुवणनै भीर हुया। पर-टाबर छोड्या अर मन मारघां सोच-फिकरमें सरीज्योड़ा चाल पड़्या

हरिया-लीला फोग, खाटी-मीठी हवा अर फागणरी रुतमें चैल-पैल, मारजारै मनमें कीं चाव पैदा नीं कर सकी ।

भंडाणरो मूंवो, सरं लूणासर ग्रामरो सवाल, मारजारो हाल-हुकम, वाणियां भूपाल । दोसती-मितराई मोटी चाल, कितो ही तुलावो चावै मन्डी सूं माल । मारजारो मन सतवाड़ै हरियो हुयग्यो । ऊंचो उछल पड्यो । इयै खुसीमें चैयरमैनसूं एक महीणैरी छुट्टी मंजूर करवायी अर ओठा घरां आया । व्याहरी सारी चाहीजती चीजां मन्डी सूं लेता आया । थोड़ा-घणा रिपड़ा ही मिलग्या । मारजा धूम-धाम सूं व्याहरो काम सरू कर दियो । अगरवालां आपरी हेलीमें मारजारी बेटीरी जाननै एक जीमणवार देवणरो जोस दिखाल्यो । घर अडाणगतमें माड्यो अर पइसै-रिपियै व्याज सूं तीन सौ रिपिया देवणनै तूठ्या । भोलै मनरा मारजा आपरी लुगाई, फूंफीरो गैणो भलै वन्वक माथै नन्दलालनै भला आया । जोर के करै ? डुढाणी हरगज हुकारो भरै नहीं ।

स्यामजी अगरवाल, गांवरा मानीजता आदमी, खुलक-मुलकनै तोलै, कालां दुकान खोलै । गांवरा पच नहीं, पण गांवरी घणखरी वातां स्यामजीरी चालै । ऊपरसूं जिता ऊजला रैवै, दुनियां मायनै विता ही मैला-माड़ा कैवै । आ: एक मजेदार वात वाजै के—इयांमें कालीं-धौली दोनूं नीत्यां बरोबर काम करै है । जद कदै ही राजी हुवै न्याव-निरमाणरी वातां वणावै । नाराजगीमें वूढै गुरांजी तांईरो लारो नीं छोडै । कालीदास पिंडतनै तो मनस्या करै जणां ऊपण नांखै जरूरत पड़ै जद एक नूंतो दिराय परो'र राजी भी कर लेवै । आखी वातांरी अटकल है, सगलै कामांरो ढव है । मारजा इयांरै सभावनै जाणै अर हां में हां मिलावंता रैया है । जद ही स्यामजी दोस्त-मितरां सूं सज-वज कर गांवरी अदव लेंता हुया आज मारजारै घरां पूग्या है । आयोड़ी जांन-वरातनै देखै है, जान्यां सूं मिलै है अर मारजारो माण वधावै है । मारजा वीस वरस इयांरी हेली चढ्या-ऊतर्या, जकांरो

पाड़ स्यामजी एक दिनमें ही उतार जावै है। ऊमरमें कैंता रैया थांरा चेला मोटा हुसी जद वडो माण-ताण करसी। जकी ढकी-ढूमी चेलांरी वातां चौड़ै आयगी। वेस अर भातनै तो भलैं अडीकै ही कुण हो ?

मोकला महीणा वीतग्या। मारजा लूंणासरमें चोखीतरां रस-बसग्या। चोखो खावैं-कमावै अर मन्दीरा मिनखां माथै आछो प्रेम हकूमत करै। लूंणासरमें रेल वगै जकी ही मारजारै गांवरै ठेसण लागै। सैंधा-मैंधा घणां आवै अर रेल चढै-उतरै। अगरवालांरै घरसूं तो एक-दो आदमी इक्यांतरै आवै-जावै है। वडो कडूंबो, लखपत्ती आदमी, कन्टरोल, कचेड़ी, सफाखाना अर सभा-सोसाइटीरा काम पड़ता ही रैवै। जैपर, गंगानगर, बीकानेर अर भटिंडै आता-जाता तजी-मन्दीरा लावा लूंटै। मारजा खनै ठैरै-बुलावै, भार-बोझा उठावै-पटकै। मारजा सूधो भोलो, सरोड़ अर स्याणो माणस, काम वेगी ढेढ़-थोरीनै ही नटै नीं, अगरवाळा तो घणी वात है। कामसूं काम अर मिनट नीं आराम, फफता फिरै है।

मारजा मर-पच'र पांचसौरा नोट जोड़या, अर अगरवालांरो हिसाब-किताव करणै खातर आपरै गांवनै दौड़्या। दूकान माथै ढूक्या, वही देखी जद मारजारा कान खूंस'र हाथमें आयग्या। तीन सौ रिपिया लीना हा जकांरा पांचसौ लिख्योड़ा मिल्या। व्याज न्यारो। आ: भूल कीरै वगी ? कूड़ी कलम कैंया चाली ? मुनीम दोनूं हरामी, इन्यावरा काम करै। हरगज तीन सौ नीं हकारै। मारजा सूंस-सौगन्ध करै, तीन सौ लिया जका चोखीतरां याद वतावै। पण मुनीम रोव दिखाळै अर हूटकारै। कैवै—सेठां सूं मिलो, म्हांनै ठा नीं। सेठ स्यामजी जावक गुण-गाल, मारजारै लोहीरा पीऊ! मितर नहीं मुतलवियां गिरतोल। मारजानै आपरो मितर वता-वता मार नांख्यो। पण ओजूं वातरो विसवास करै। सांच-कूड़रो वेरो पट जावै तो किसी नन्दलालनै माड़ो वता देवै। वीच-विचाव कर परा'र लिख्या मुजव पांच सौ जमा कर देवणरो हुकम दाखै, व्याज न्यारो रावै है। सागै-सागै आपरी वात

मान ज्याणै वेगी मारजारी तारीफ अर भरोसैरा ही दिड़दाव उड़ावै है।

मारजा आपरो, अडाणगत हालो गैणो मांग्यो, स्यामजी अचूंभो करचो कैयो—गैणो कैण लियो अर मनै बूझै विना मारजा क्यूं दियो? मारजा नीचै देखै, आपरी हुई कावळ लखै। नन्दलालरो नांव आवै जद स्यामजी सफा सीतल पड़ ज्यावै। मूंछ सवारै, ओला खावै, गैणै हाली वातनै विसारै घालणी चावै। पण नन्दलाल गैणो गला लेणैरो समाचार खुदा खुद सुणा देवै, जद सेठांरै जीमें जी आवै है अर कैवै—वाणियारै वेटांरी आः ही वात। नन्दलाल जे गैणो वेचनांखतो तो सौ-सवासौरै लालचमें दोनवांरी इज्जत जांवती। पण भणी-गुणी जात घररी वातनै वणाई राखै तथा आशो नीं खोवै।

गैणै वावत नन्दलालरै हाथ सूं मारजानै स्यामजी सौ रिपिया पूठा दिरांवता थका कैवै—वेटा! कीं: तो गुरु भक्ति करचा करो।

डाकण स्यारी

मालाराम भोपो, भैरुजीरै मिन्दरमें पुजारी रैवै। काम तो वडो नहीं, पण भोली जनता माथै रोव मेघा वायरो खाटै। जठै कर नीकळै वठै कर ही लोग हाथ जोड़-जोड़'र राम-राम करै। केई राम-रामरै सागै, काकां, वावांरो सम्वोधन ही लगावै। मालाराम ही पाछो उथलो सम्वोधन लगा'र देवै। कंवै—राम-राम भाई! नसरै लटकैरो ठाट-वाट घणो सुवावणो लागै। छव फुट लांवो डील, डिघाळ मूरत, तणियोड़ी मूंछां, किलायोड़ी दाड़ीरै सागै सभावमें तेज भरतो दीसै। हौळै सैः वोलै तो डरावणो सो लागै। अर रीसमें आवै जद तो लोग ज्यानरी खैर

मनावणै लाग ज्यावै । मिन्दर जावणियां लुगाई-टाबर धूजतां-कांपतां दरसण करै, काळजो हदकी खावै । मालाराम नौरतांमें एक वारसूं भैंसैरो सिर काट नाखै । हर वक्त आंख्या वास्तै जगै जियां जगती रैवै। घरमें तीजकीरी मां मालारामसूं घणी डरै । मनमें जांणै काई भूल हुयगी तो आप खा लेसी । गांवमें ही थरका पड़ै, लोग सरम करै। मिनखांनै भैरुजीसूं भगत भोपैरो घणों भौ आवै । वागो पैर'र हाथमें त्रिसूल लेय'र नौरतांरी फेरी उगावै जद लोग डागळां चढ जावै ।

भगतरो घर गांवरै बीचाळै, बामण-वाणियांरै भेलो फस्योड़ो फबै । खनै ही कूवो, खनै ही मिन्दर अर चौरावै मोटै नीमरो पेड़ लैरावै । डावै खांनी खात्यांरी खतोड़ अर जीवणै खांनी भुगानरी मांरो घर पाड़ौसमें वसै । रामकिसनजी खाती तो मानखैमें भरपूर अर पूरता आदमी, व्याजै वौरै । पण भुगानरी मां एकली डोकरी रांमरै डौरै। रामकिसनजी परवारसूं सुखी-सोरा गाजै-घोरै पण भुगानरी मां बेटां-पोतां सूं दुखी-दरोगी, आरवलरै तोरै । भगत अर भुगानरी मांरै दोदी पोतैरो साख चालै ।

एक दिन मालाराम अर कवीलैरो चोधरी भाई लाधूराम दोनूं खेतां सूं पाछा आ रैया हा । दोनूं अन्धविसवासी अर डरोक सिझ्यांरा रोही सूं घरां आ रैया हा । फीडा खला, मगरां पुठ, गठड़ीमें पाणीरी लोटड़ी अर नारो खींच्या वगै । गांवसूं पैलां मारगमें सांमी मसाण-भोमका आई । तीन कोसरै खेतसूं गांवरै सांकड़ै आ गैया हा, पण अठै भौताड़ उपड़ खड़ो हुयो ।

लाधू बोल्यो—डरस्यां ।

मालू कैयो—डरां ।

लाधू बोल्यो—डरां के डरग्या ।

मालू कैयो—चालो पाछा चालां ।

दोनूं भाई खेत खांनी पाछा मुड़ग्या । नारो गांवरै कनै आयोड़ो मोटो-काठो हुयो । दोनूं लाग'र घीस्यो । वलद टोकी सींगरी, जद

एकरी लोटड़ी फूटगी । पाणीरी तूरकी भीर हुई । जद वो: मालो बोल्यो—मेरैतो भूत मुकीरी दे नांखी । लाघू बियंरै मगरां लारै हाथ लगायो, जद फूटयोड़ी लोटड़ीरा ठीकरा बाज्या अर हाथ गीला हुया, बोल्यो—अरे ! तेरी तो पांसली टूटगी दीसै । लोहीरा तूतिया वगै, मेरा हाथ ईला हुय ग्या । बलदियो छोड'र दोनूं भाज्या जको देयग्या पाछा खेतांनै ठोका । आखी रात डरिया, दिनऊग्यो जद जीमें जी आयो।

लाधू सांवलसररो चौधरी अर लम्बरदार हो । दोलड़ै डीलरो रंगीलो जुवान, चौड़ी छाती अर मुलक तो मोटो मूंढो । भैंसरो च्यार सेर दूध उठतो ही चरड़ देणी चोस ज्यावैं । राजमें पग पंचामें बोलाक, खर्चरो लगाऊ, चौबार अर चलाक, थाणै-तैहसीलमें वेवड़कै आवै ज्यावै। गांवरो मुखियो हितरी कैवै, गरीब-गुरवां माथै दयालु रैवै । निरधणियारै आगै हो परो'र नाजम-तहसीलदारनै ही ललकार नाखै । जकां वास्तै ही गांवरा मिनख लाधूरो पूरो सन्मान राखै । राम-रमी राखै अर ल्हासिया देवै ।

लाधूराम राजदरबाररो इतो वडो निघड़क चौधरी होवतां थकांभी भूत-पलीत, डोरां-डांडा, देई-देवतां अर डाकण-स्यारीनै कदै ही कूड़ नीं वतावै । आंधो विसवास राच तो थको हिड़दैसूं मानतो रैवै । एक दिन इसी हुई, मालाराम हाली वाडकी छोरीनै पाळो लाग'र ताव चढग्यो । रोगली टींगरीरै मूंढैमें झाग आयग्या, आंख्या तिरादी अर सिसकण लागगी । जद तीजकीरी मां आपरी छोटकी छोरीनै मरती देख'र मोटियारनै कैयो—तीजकीरा बाप, भुगानरी मां आखर जाणै,डाकण है, छोरीनै लेली । कालजो काढ लियो । वेगा-सा वुला'र ल्यावो, थुथकारो घलावो अर वेटीरो पेट चटावो । नहीं तो छोरीरो कालजो राड खा जावै लो ।

मालारामरा पत्थर तिरैं । राजमें भाई-लाधूरामरो ज़ोर चालै, करै ज्यूं हुवै । सागीड़ा फींगरियोड़ा जाट, टकैरी टींगरी वैगी फन-फनियां करता फिरै है । डर-भौरो नांव नीं लेवै । भुगानरी मांनै घींस

परा'र भगतरै घरमें लियाया । बापड़ी गरीब डोकरी घणी कूकी, करलाई अर हाथा जोड़ी करी । कैयो—बेकसूर मत मारो । गरीबणी हूं छोड़दयो । छोरीरो पेट चाट लीनो, दांतामें तिणौं ले लियो अर गारती गाय बणगी । थुथकारो घाल दीनो, पेट चाट लियो । भगतरै कैयां मुजब सगला काम कर दीना । पण चौधरी कैवै—छोरीनै अबार ही आछी कर दे ।

लाधू आयो अर डोकरी पर लाल हुयां तथा लोहरा चीपिया ताकला ताता, लाल कर परा'र डोकरीरै आख्यां नीचे कवली जगां पर चेप दीना । ठोड-ठोड लीढ्यां घाल दियां । बापडी बूढ़ी डोकरी मोथां सूं पकड़योड़ी घणी रोई अर बेहोस हुयगी । पण धनगा धायोड़ा गधेड़ कैवै—तेनर आवै अर फरैब करै है । सगलै डाम घाल देवो अर रात्यूं रात छ्यैरै घरां नाख आवो । पीलो बादल बुयो, सूरज उग्यो । डोकरी आज मांचैसूं नीं उठी । पुजारी चरणांमृत देवणनै अडीकै, कबूतर चुग्गै वेगी चूंचावै अर तिसी चिड़चा पाणीरा ठीगलां माथै भूंवै है । पण डोकरी तो पसवाड़ो ही नीं फोरै । टसकै, गिरणै अर पपोलै है । फाला उपड़ग्या, सोजो आयग्यो अर डील करड़ो हो परा'र आमीज ग्यो । गेलै बगती लुगायां आई अर भुगानरी मांनै चेतो करायो !

एक दिन बो हो, डोकरीरो धणी रुघनाथजी गांवमें मुखियो बाजतो अर करतो ज्यूं हुंतो । बोल तो जद धरती धूजती, हिरण खोड़ा हुंता । खूनरा खून ही दाट लेंवतो, जरड़कै'र न्याव कर लेंवतो । पचासूं मिनख लारै-लारै फिरता । घरां एक आयो अर दो गया । थाणै-तहसील ह्याला हरदम टुकड़ा सूं तोड़ता रैता । रुघनाथजी कैयो—चोर जको चोर अर आहूकार है जको सोलह आना साहूकार । राज तेजमें मोकली पूछ-ताछ रैवती । खाल खींचतानै छुडालेंतो तीतररै ही ही मूंढै कुसल. रुघनाथजी कै: देतां तो लोग पूर चक लेता । कोई पगरखी सिरकांवतो, कोई टाबरांनै खिलांवतो, पण भुगान अर भुगानरी मांनै तो पग ही नीचो नीं मेल्लणै देवता । सारी बातांरा ठाठ हा । अर

अड़घू लाग रैया हा। गांयाला गायांमें जावै। भैस्यांला भैंस चरावै, अर ऊट-घोड़ांनै न्यारा-न्यारा मिनख न्हवै-धुवावै हा। ज्यांरी खावै बाजरी, वियांरी भरै हाजरी। लोग आपो-आप काम भोल राख्या। आखो गांव गरज करतो। औसर, मौसर, पनवाडो अर होली-दियाली पालागण, गुवाड़ीरो रिपियो बन्धेडो हो। रिपियैमें लोगांरै सौरो काम सरतो। रुघनाथजी हालो ऐढो हो, आसरो हो। इयांरी रोटी सूं केई गरीब-गुरबा पळता रैतां। कोई पीसती, कोई पोवती अर कोई पोटा नांखती। पण भुगानरी मां तो आयां-गयांनै जीमांवती रैती। मोटियार हाथां पर थुकांवतो रैतो, सो: बास दातारीरा गुण गांवतो कैतो— लुगाई के है, लिछमी है।

वखतरी बात, मां मरै बींरी मौसी ही मरै। मोटियार मरचो अर वियैरै लारै-लारै बेटो भी आगीनै गैयो। बापड़ी सूधी-भोली विधवा दोरो-सोरो आपरो गरीबगुजरांण करती गयी। सभा-मिन्दर देवरै अर ग्यान-ध्यानमें जांती रैयी। अलैवण तथा जिनस बेच-बेच'र जूंणी पूरी करणै हालै तलावरै कराड़ै खड़ी ही। जद गूंगी जगती, डाकण कैवणी सरु कर दी।

गैली दुनियां कींरो ही ग्यान-गुंण अर इन्सान पणो नीं जाणै। जुवांननै मालजादो अर बूढैनै डाकी बता ही देवै। कोई वैरी दुसमण कूड़ी-काची हांसी-खांसी कर देवै अर जगतनै राम लाघ ज्यावै। आगै सूं आगै चौगुणी अठगुणी कर परा'र चलावै। कोई थावर वाली बात जचावणी जोड़ देवै अर कोई जरख चढीनै उतारण हाली रात रोड़ लेवै। कूड़ी गप्पांरा गोळा नांखतां थकां भरम फैलावता, आंधी लोकोमें रोला मचावै। अलगा राखता टावर लकोवै, कंवलां कालजांमें कालो रग जमावै। देसरा दरद्दा, कुलखणां, कोढ, भण्यां-गुण्यां माणस ही नीं जाणै छोड।

स्याममर गांव बामण-बाणियांरी वस्ती, विरमपुरी खावै अर अन्धविसवास फैलावै? बाकी रेल नां कोई तार, स्कूल नां मदरसा?

अठैरी लोकी कीं जाणै न बूझै, कोरी पुराणी लीकटी पीटै। छियासियै फनला संवत, चोरांरो चाळो अर राजरो जोर तथा भी वर्ग। चोरांरी खड़क लगावणै माथै पूलिसरा सिपाही सफर करै। एक दिन गांवमें कोई चोरीरै बाबत थाणो आय ज्यावै। जद एक-दो उजलै हिड़दैरा जुवान छोरा, भुगानरी मांरी हिमरा चढै। गलचोड़ी, बलचोड़ी, कीड़ा पड़चोड़ी डोकरीरी मांची थाणैदाररै आगै ल्याय परी'र मेलै है। अै: जुवान ही दस दिनां सूं बूढ़लीरा पाटा-पोली करता आया है। धूंटियो, हकाली देवै अर खीचड़ी रांघ खुवावै है।

चोधरीरै घरै मोटै मूंजरै मांचै माथै थाणैदार हुकमदीनजी होको डरडकाय रैया हा। लांबो डील, वटवां वाळ, रंगतो तोदैरै लारलै पीदैनै ही लारै छोड रैयो है। तणावो आंख्यासूं रोब बरस रैयो है।

बूढलीरै च्यारूमेर फिरतै थकै, थाणैदार डोकरीरा डांभ देख'र कैयो—ऐसी कम नसीब सूरतों से नियाज़ हासिल करने का शौक खाकसार को मुद्दत से था। आज खुश नसीबी से मुझे यह मौका भी मिल गया है। मैं ऐसे इन्सान की पूरी परविश करूंगा। नौजवानो ! मुझे इसके कातिल का नाम जरूर बतला दीजिए।

मूंछा तणगी। आपसरीमें बणगी। मालाराम अर लाधूरामरो नाव बताणैसूं पैला ही कनै बैठा गांवरा मुखिया बूढ़ा मांणसां भुगानरी मांरी बदनामी अर डाकण होणैरी सबूत सरकाररै सामनै कै: दी। चोधरीरा सिखायोड़ा लोग छेलकी-बेलकी लगावणै जुट ग्या। सागै-सागै बूढ़लीरै हिमायत्यानै गाल भी ठोकणै लाग ग्या। बूढ़िया कैवे—अै: छोरा जयचन्दर तथा वभीखण है। कलजुगिया धरमभ्रिस्ट हुयोड़ा है। धरम-करम सार अै: के जाणै, कूड़ी कैवता फिरै।

बूढ़ियांरी इसी-इसी वातां सुण'र वापड़ै थाणैदाररा ताजिया ठंडा पड़ग्या अर सांस ढीला हुयग्या। लाधूराम अर मालारामरै पख हाली वातां बोलै-बोलै गुणी अर आपरै न्यावरी वात बदलनैरी जीमें

करी। एक'र तो दिल धड़क्यो, पण धरमराज हाली एक'ररी कूड़नैं चंतै कर परा'र कैः नाख्यो—बुजुर्ग लोग कभी झूठ नहीं बोलते। ले जाओं डोकरी की मांची इसके घर। आइन्दा इसको घरसे बाहर मत निकलनै देना। यह बड़ी जालिम तथा जलील है। जान की दुश्मन है। दोय-चार जुवान बापड़ा के कर सके ? थाणैदार सूं अरज अर लोगां सूं वाद-विवाद करता रैया। छेकड़ हार परा'र डोकरीनैं सागी हालतमें ले'र घरां आयग्या। वियां जुवानांरै साथै अगवा, म्हारा स्वर्गीय मोटा भाईजी हा। जकै वास्तै मनैं हिन्दू धरममें इसी-इसी ऊल जलूल बातां केई बार देखणैरो मौको मिल्यो है। इयैं ओसर टाबर हुतो थको भी, हूं घणो रोयो अर वियैं मतलबियैं थाणैदारनैं मन-मनमें मोकली गाल्यां ठोकी। गांव हालैं बियै बोदियां चापलूस मुखियां सूं तो बै जीयां जितै ऊमर भर मिल'र नीं बोल्यो। बंः सैंग मरग्या अर म्हांनै मरणों है पण मू" ऊपरलै माण अर आंधैविसवासमें डूब'र खोटो इन्याव कर ग्या।

देवता-भूत, डाकण-स्यारी अर जंतर-मन्तर जिस्या पुराणां पापांनै मानणां तो आसान बात है अर वियां माथै मैली दलीलां देवणी ही बडी बात नीं है। पण वियांनै परतख दिखापरा'र सांची कर देवणी, घणी दोरी बात है। कोरो भरम है। अर शैली गजबरी गूंग है। कट्टर सूं कट्टर आस्तिक आदमी ही ईं बातनै चौड़ै करणैरो बीड़ो नीं झालै। केई झकिया नै कैः धाप्या, पण माईरो लाल सांपड़तै सांच कर दिखाटणियो कोई नीं लाध्यो।

इसा-इसा अन्धविसवासांरा कांड देख-देख'र म्हारै तो डीलरा रूंकाटा खड़ा हुय ज्यावै है कै—जको मायड़ जात आपरै तप-त्यागरै बल-बूतै माथै फूसरै झूंपड़ेमें सुरगरा साज सजा देवै है। राम, बुध अर गांधी जैहड़ा गुणी मिनखांनै जानै तथा मिनखनै देवपणो दिरावणमें सफल हुवै, वियैनै आजरी इक्कीसवीं सदीमें ही मूरख-मुसटंडा लोग सामखा डाकण-स्यारी कैवणैरी हिम्मत कर लेवै है अर निरअपराव

निस्सहाय अबलावांरी दुरदशा भी कर नाखै। जको माणस जातरो न छुपणै वालो कालूंठो-कळंक है।

आजादी मिल्या सूं ले परां'र आज तांई कांगरेस सरकार मोटा-मोटा काम पार पाड़ नाख्या। जंमीदारी खतम कर दी, अन्नदाता अर घणी-खमा जिसा नांवांरो सफा नास कर नाख्यां अर हमें आखा मोतणांनै खत्म करणै वास्तै कमर कस राखी है। बेकदर हरिजनांनै ही ऊंचा गढ गिणनारां ल्या छोड़्या है। पण लाखां-किरोडां लोगांनै ठगणियां भगत-भोपां, पिंडत-पोपांरो बूंटो अंज्यूं नीं वाल सक्या। जिणांरो घणो अफसोस है। इयां धूरतांरै कारण ही म्हांरी मां बैनांवांरो घणों अपमाण हुवै है। मवै इयांनै इसा अपजसां सूं वेगीसी बारणी-उबारणी चाहीजै।

जंवाईरी पिटाई

सोवनलाल सावणरी तीजसूं पैली ही सासरै आ बैठ्यो, मालम पड़्यो जद घरमें गीत सरू हुआ।, बीच-बीचमें लुगायां गूंगटै सूं झांकण लागी। साला बारै आया, राजी-खुशी पूछी अर पागं पकड़'र बैठ्या। टाबर-टिगर भेला हुया अर कोड करता-करता कर्नै गया। पण सोवनलाल तो कीसूं ही बोलै न चालै। रीसमें आंटो टुरड़ अर करड़ो ठूंठ हुय रैयो है, मुळकारै ही नीं, आखै घररा मिनख एक पगरै ताण ऊभ रैगा है अर इयैरी परण्योड़ी पारां-पारवती तो टरड़ गल रैयी है। आदमी नीं भूत है, पावरो पलीत है। फवै—धवार ही

भीर-विदा करदयो। सासू जंवांईनै अठै च्यार दिन रैवणं वास्तै न्योरा-विणती करावै, वेटीनै तीजांरो त्योहार धोकावणैरी जी मैं है। पूरा पांच दिन तो अठै आईनै ही हुया है। पण जंवाई तो पिलांण ही हेठो नीं उतारै, मागी पगा ही पाछो मुड़णों चावै है। वेटी आंसूंड़ा टलकावै, मांनै कलपति देख'र कुढै है। आपरै करमड़ैनै खोसै अर मोटयाररी अकल माथै अफसोस करै। कींसूं समझै, कुण गाल खावै, सफा सलामत है। व्याहनै ओजूं बारह महीणा होया है अर बारै महीणामें ओ तो बारह विरियां आ चुक्यो है। बोलै न चालै सफा रीससूं छलिज्योड़ो पड़चों है। साला वतलावै अर साली मनुवार करै तथा सैंग लोग हाथा-जोड़ी कर रैया है। पण हां कोई नीं करा सकै। छेकड़ थाप'र घर हाला पारांनै मेलणैरो हुंकारो भरै, जद जुंवाई आपरो जेक्योड़ो ऊंट त्यार करै है। अपणै आपनै मोटो मिनख मानतो थको सासरैरो पाणी नीं पीयै। जिनवैरा भात भरयोड़ा ही रैवै है, खीररा टोकणां खाली कद हुवै।

बियैरो सुसरो घरसूं नीकलचो, ऊंटरी मोरी झाली अर कैयो—अवार ही कांई जावो? त्यौहाररै दिन घर छोडणों आछो कोनी। म्हारी ही चढी हांडी ऊभाघड़ी जाणैसूं घणी वदनामी है। सामा सिनारा है। मेलो अर मगरियो है। सैः वैन-वेटयांनै ल्यावै, म्हारी वेटीनै ये ले ज्यावो हो। सगलांरी धीवड़ियां गावै-मनावे अर खावै है। गुट्टी वालै, हींडा-हींडै है अर खेलै-कूदै पण म्हांकाली चिड़कलीरो विछोवो करो हो, जको ठीक नीं है।

जुंवाई रीममें आय परा'र कैयो—म्हारै गांवमें किस्यां त्योहार कोनी? म्हे किसा अटकळमूं ही वसां हां, म्हारै ही कीं मेला मगरिया हुल्ला? थांरै ही भैण-वेटी हुसी? ज्यान वांझड़ी ही रैगी।

बापड़ो बूढो सुसरो नवलजी देखतो ही रैय ग्यो। मोटी आसा

लेय'र खंनै आयो हो, जकां माथै पाणी फिरग्यो। देख्यो—वियांरो जंवाई आपरो ऊंट खेंच परा'र बारै चाल्यो जावै। पारवती घरमें गरलाई। नवलजीरै कालजैमें लाट ऊपड़ी—मेरी आज आः हालत जींवता ही हुयगी ? कै जंवाई ही वैरी बणग्यो। आः लोग रईस अर हूं जूंवारो खायोड़ो कंगलो कलीर। घरका पड़ता, लोग हांजी करता। अर अबै के हुयग्यो ? छोडी है तो नौकरी छोडी है। मेल-मोवत थोड़ी ही गयी है ? जे अबार ही चौकी माथै ज्या'र ऊभ ज्याऊं तो आखा अफसर हाजर हुय ज्यावै। वदमास सूं वदमासनै सीधो कर नाखै। आः ही हालत रैयी अर छोरीनै दुःख दियो तो बाप'र कीं करणौं ही पड़सी। पुलसिया हां, ऊमर पुलसमें ही खोई है।

लुगायां पारांनै लेअर बाप खंनै आयी। बाप पारांरै सिर पर गलगलो हुंतै थकै हाथ फेरयो अर कैयो—जा बेटा जा ! दो-चार दिनांनै पाछी ले आसां। मोकलो-घणो गुमान राखण हालो अर बात-बातमें तेज तुररी चढावण हालो सोवनलाल सेन देसणोकरै इयै फत्रीलैमें जाम्यो हो, जठै आज तांई कदै ही कोई पोथीरो साथी नीं बण सक्यो। लकड़ी हाळी पाटो माथै चोपड़ लगा'र राख लगायोड़ीरै ऊपर ककको कोडको मांडणरो तो कैया चाव धारयो, पण छेकड़ खेती हाळै कामरै सिवाय और कोई कठै ही नांव-नामून नीं पा सक्यो। नूंतो मांडणै अर चिट्ठी लिखणै खातर ही कीं दूजैरी गरज करणी पड़ती। सोहनलालजीरै कुळरी तो बात ही के ? सगळै गांवमें ही भण्यो-गुण्यो कागद बांचण हालो एक-आधो ही मस्सां लाधतो। कदेई-कदेई कागज लिखावण अर बंचावणनै दूजै गांव भाजणों पड़तो। तार आयग्यां तो किणी सैं'ररी सरण लेणी पड़ती। भाऊ आः बातनै बाचणियारै वैम पड़ग्यो हुसी ? के सोवनलालको किसै गुण वैगो इत्ती कारडावण करै है ? पण इयैरै लारै एक बात है।

एकारगं पच्चीस वर्ष पैल्यां सोवनलाल सेनरो बाप रामपरताप आपरै सासरै नागोर सैं'र गैयोड़ो हो। जाण्यो नागोर सैं'र है, सासरैमें

जीमस्यां अर घपाऊरी सैल करस्यां । मिलणों-भिटणों हो ज्यासी जको न्यारो । एक कामरै लारै केई काम पूरा कर लेस्यां । पण सोवनलालरै नानेरै हाला खेती-खड़ आदमी हा । हजारां मणधान उपजांवता रैता। घरमें थोड़ा-सा आदमी अर टाबर-टीकररो खोज नीं मडै । टाबरांरै घाटैरै खातर जाणो सेनरा मामा आपही टाबर बाजता रैया हा । बियां ब्याह ही नीं करचा । टाबर गुलररै फूलसा सोवणा-मोवणा पण ब्याह नीं हुणंरै खातर न मालूम के हा ? जकांरी आपांनै के जरूरत । खैर! जो हो रामपरतापरो बाप पूरा पांच दिनां तांई नागोरमें रैयो । वठै मालपूआ अर माल-मलीदांरा पूरा मजा ले लिया । सैंग जूनी जगावां देख ली । साळां-साळियां मोकला सैर-सपाटा कराया । पण हुवणहारनै निमस्कार ।

एक दिन साला तो सैंग खेत गया परा हा अर लारैसूं डाकियो घरां एक कागद ल्यायो । रामपरतापजीरी सासू डाकियैसूं कागद लेय परा'र उदास आवाजमें कैयो—कठै सूं आयो है । डाकियै कैयो—देसनोकसूं । जद बियै बारलै कमरैमें बैठचा कंवरजीरै खनै आपरी छोटी बेटीरै हाथमें कागद बांचणं खातर भेज्यो । पण रामपरतापरै भाऊं तो कालो अक्षर भैंस बराबर ही नीं हाथी बराबर हो। कागद देखतां ही बो: भूं-भूं रोवणै लागग्यो । छोटकी साळी तो हक्की-बक्की हुयगी, सासू खट सगलो खेल समझ गयी । जाण्यो—देशनोकमें कोई कोनी । कागद जुंवाईजीरो आयो है अर मौतरो है । का तो म्हारली छोरी कानी अर अर का इयांरो छोरो कोनी । आंगणैरै सूं बं विचालै बैठ'र जोर-जोर सूं रोवणै लागगी । होय अबै तनै कठै देखूं रे ! सांवरिया किम्भीक करी रे !

बासमें किरै फूटगी, लूगायांरी भीड़ लागगी, अर कडू बैवाला धोला बांध-बांध'र आ बैठया । रोवणों सुण'र कोई सुखी नीं हुयो । सैंग आगोड़ा मिनख बातां करणै लाग ग्या—भगवानरै आगै कैईरो जोर नीं चालै । मौत तो राजा मा' राजां सूं भी नीं टलै । इयं आगै तो

सैंग एक है। जुग देख'र जीवणो है। एक घर नीं अर एक गांव नीं। दुःखांरा पालणा दिन है, आज है जिसो काल नीं हुवै। खूटीनै बूंटी नीं। धोला रैवो अर धीरज राखो। जींवतै जी नै सो क्यूं करणो हुसी। आयोड़ा मिनखांमें सूं एक स्याणै मिनख कैयो—बीनणीनै बूझो तो सरी, कै: कुण कोनी ? जद घरमें जाय परा'र एक-दोय मिनखां आपरी काकी-बडीनै बूझ्यो—थारै कुंण कोनी ? रामनै कुण प्यारो हुयो ? जणां वसका फाटती घर धिराणी कैयो—आ बात थारै पांवणांनै बूझो कुण कोनी ? कागद वियांरै गांवरो ही है। बांच'र बैयी रोया हा। मिनखां जवाईनै बूझ्यो—कागद कींरो आयो है, थे रोया क्यु ? थांरै कुण चलग्यो ? जंवाई कैयो.चलग्यो म्हारै कुण, ठानी। मैंतो कागद बांच ही नीं जाणूं। कागद देख'र म्हारै माईतांनै रोयो। जकां मनै एक आखर ही नीं पढायो। आयोड़ा सारा मिनखां कागद बांच्यों अर हा-हा कर'र हंसण लाग ग्या। उठ'र आप-आपरै घरां भीर हुया। कैयो—मर ठिठकारचा, कूड़ो रोवा-कूको करायो। कागद तो थारै चलावटरो है।

इयै कुरापातरो नतीजो ओ हुयो कै: रामपरतापरी सासू आपरै दोहितै सोवनलाल सैननै आपरै गांव बुला लियो अर राजरै मोटै मदरसैमें भरती करा दियो। पढतां-पढतां च्यार जमात तो पास कर ग्यो पण पांचवीं सूं गाडो नीं गुड़क्यों। चालो ! कागद बांचणो तो थोड़ो तरां सीख ग्यो। मदरसै सूं इत्तो फायदो तो हुयो। पण आगलै दर्जेरो घमन्डी अर अकडी भी बणग्यो। दिमाग सातवें आसमान पर चढग्यो। मां-बाप, भाई-भैण, सुसरै-सासूनं गीं जूं जितां ही नीं गिणै। आपू-आपनै सगलां सूं मोटो गिणै। आज सासरै हालां सूं धिगाणै आपगी बहूनै लिरां घरां आयो जद सैंग घररा लड़्या पण सोवनलालरै तो चोपड़ियै घड़ै छांट नीं।

नवलजीगे बेटो जगदीस दो डिग्र्यां ला आयो पण पारबतीनै मोहनलाल आछी पीहर नीं मेली, नीं मेली। जकै वास्तै कवैं जवाईनै

बुलावणारा लाड-कोड तथा कामण हो रैया है। अबकै सासरै आवैलो तो सोवनरी सोवणी खातिरी हुवैली। नकटा देवांरा पुलसिया हीं सरडा पुजारी है। नकटीनैं भरड़ै बिना दूजो कुण झालै ? नवलजी छोटकियै वेटनै सागीड़ो मिखा राख्यो है कै—वहनोई आवै जद सिझ्यारै वखत वियांनै चौकी (पुलिसवाली) हालै वागमें बोः घूमावण लेजासी। अठै नवलजीरा पुलसिया भायेला किणी ऐर-गैर आदमीरै भोलावै, सोवनलालरी सागीड़ी सेवा-पूजा करसी। लातांरा देवता वातां सूं मानै ही कियां !, पण सागालो छोटकियो छोरों सेनरो लालो रोंवतों भाग'र घरां आसी। जद नवलजी आपरै जवाईरी कूड़ी मदा तथा वार चढसी। आगै जाकर पुलस हालांनैं लताड़सी, ओळभो देसी। पण पुलस हाला आपरै लछां सारू वूढै भायेलै नवलजीरा पग पकड़ लेसी तथा भूल मिकार जासी। आंधो अर अजाण एक वरोबर हुवै। वात ठंडी-मीठी पड़सी। सोवनलालरी इणविध पूजा होसी। पण म्हारै जीवड़ैं सूं प्यारा पाठकांरै मनां इसा अकड़ मिनखांरी पिटाई देखणरो भाव जाग्यो हुवैला ? वियांरी परवळ इच्छानैं अधूरी छोड'र हूं माफी चावूं ला सा।

समाप्त